अथश्रीमत् पंडित अमरदासविरचित अद्वैतामृत भाषा प्रारंभः ॥ ः ॥

॥ यह अद्वैतामृत संज्ञक नाटक ग्रंथ श्रुति अर्थ का विचार रूप मुमुक्षु जनों के हित के निमित्त श्री काशीपुरी मे गुरु गोवर्द्धनदासने अपने हरिहर रत्नाकर संज्ञक यंत्रालय मे मुद्रित किया है जिसकूं आपेक्षित होवे तिसकूं चौक मै कूंज गली के पश्चिम द्वार के समीप गोवर्द्धन साहु राम लाल की दुकान पर मिलेगा दाम रुपया १) एक

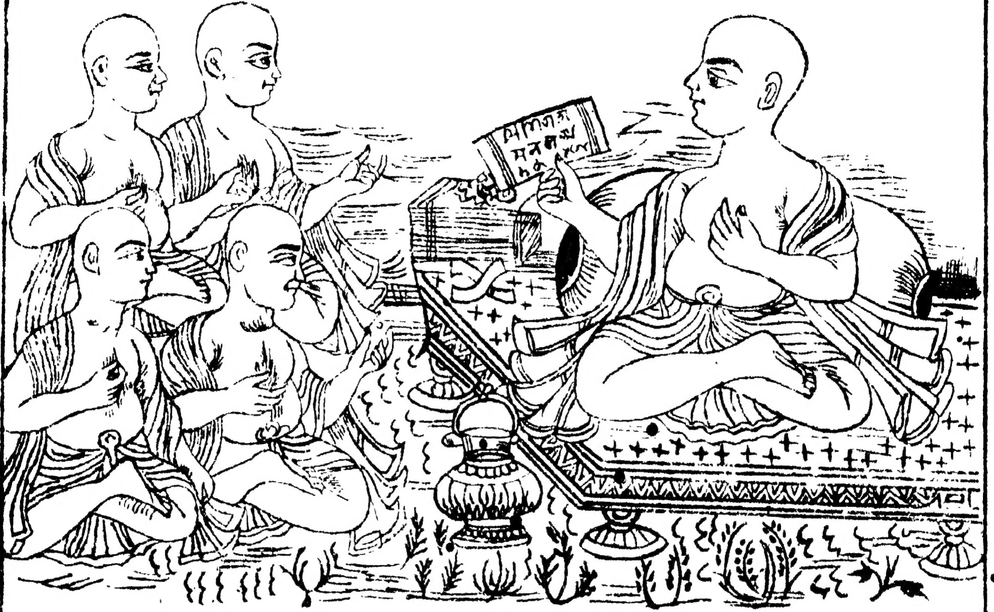
संवत् १९४६ आषाढ सुदी पंचमी ५ ॥ ः ॥ ः

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

॥ अथ विज्ञापन ॥ पत्रम् ॥

॥ अथ यतिवर परउपकारी श्रीमन जगन्नाथ सरस्वतीनें
लोकोंके बोधके निमित्त सर्व उपनिषदका सार अर्थ ग्रंथ
न करके रूपक अलंकार रीतिसे देववाणीकर अद्वैतामृत
संज्ञक ग्रंथ कीयाहै सोइस प्रकार इसमें रूपक प्रक्रियाहै ॥
विवेक वैराग्य शम दम इन चारोंकों संन्यासी रूपकरके वर
ननकीयाहै विवेकका नाम विवेकाश्रमहै वैराग्यका ना
म वैराग्यतीर्थहै शमका नाम शमारण्यहै दमका नाम द
मारण्यहै अरचित्तवृत्तिकों स्त्रीरूपकरके वरननकीया
है शरीरकूं मठरूप करके वरननकीयाहै सोविवेकाश्रम
अरचित्तवृत्तिका इसमें संवादहै सोविवेकाश्रम यतिने ना
नाविध श्रुतियुक्ति प्रमाण करके चित्तवृत्तिकूं आत्मउपदे
शकीयाहै सोइस प्रकारकी रूपकरचना देखकरके वहु
तजनों के उपकारके निमित्त श्रीमन पंडित अमरदास उ
दासीनने छंदरचना से अतिललितरीतिसे विस्तारपूर्वक
भाषामेंकीयाहै अर अति अल्पमति पुरुषोंके बोधके
निमित्त किसी किसी पदका टिपणकीयाहै जिसजिस
श्रुतिका अर्थ दोहा चौपाई मेंग्रंथनकीयाहै सोसो श्रु
ति अन्वेषण करके टिपणमें लिखदीयाहै सोमुमुक्षुपु
रुषोंके कल्यानके करने वालायह ग्रंथहै पढने सुनने
कर चित्तमें हर्ष होवेहै सभाके रंजन करनेके प्रकार इ
समें ललित रीतिसे लिखेहै सोबहुत रमणीक ग्रंथ भाषा
मेंभयाहै षट इसके कवलहैं प्रथम कवलमें नानादृ
ष्टांतों करके विषयों निष्ठ दुखरूपता निरूपणकीयाहै
द्वितीय कवलमें घटदीपादि दृष्टांत करके आत्मतत्त्वका
सूचनकीयाहै तदनंतर याज्ञवल्क जनक राजाका स
वाद रूप श्रुतिप्रमाण करके तथा युक्तिप्रमाण करके

आत्मानिष्ठ चैतन्यरूपताका निरूपण कीया है तदनंतर आत्म चेतनरूपता मै पितापुत्रका संवादरूप अंथउपाख्यान वरनन कीया है तीसरे कवल मै नानाश्रुति युक्ति प्रमाण करके आत्मानिष्ठ आनंदरूपताका निरूपण कीया है॥ चतुर्थ कवल मै जगत मिथ्यात्वका निरूपण कीया है अरु विवेकाश्रम वैराग्य तीर्थ के संवाद मै नारायण नारदका संवादरूप परमहंस उपनिषद्का तात्पर्य अर्थ निरूपण कीया है॥ पंचम कवल मै नानाविध मतनको निरास करके श्रुति प्रतिपाद्य अद्वैत मतका निरूपण कीया है॥ षष्ठ कवल मै जाग्रतादि अवस्था निरूपण द्वारा जीव परमात्मा का अभेदार्थ निरूपण कीया है इस प्रकार संक्षेप करके सूचन कीया है॥ इस ग्रंथ मै सर्वत्र टिपणी जानने का प्रकार यह है मूल मै जो अंक जिस पंक्ति के ऊपर है सो अंक टिपणी की पंक्ति के आद्य मै है॥ सो इस प्रकार अंक मिलाय करके अर्थ देखणा जैसे गौरीकर्णाभरणाधर इस पंक्ति के ऊपर एक का अंक है औ गौरी के कान के भूषण को सुंड से पकडकर इस टिपणी के आद्य मै एक का अंक है सो गौरीकर्णाभरणाधर इस पंक्ति का टिपण है॥ इसी रीति से सर्वत्र जानना॥ ॥


श्रीमत्पंडितअमरदासजी।


दमारण्य।
शमारण्य।
वैराग्यतीर्थ।
विवेकाश्रम।
चित्तवृत्तिः
मुमुक्षा

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ कविरुवाच दोहा गौरीकर्णाभ
रणधर खेलनगौरीअंग सोगौरीनंदनसदा करैविघन
ममभंग १ श्रीनानकपदपदमको वंदोधरउरध्यान ॥
जांकोजगअवलंब्यनर पावेपदनिरवान २ श्रीगुरुच
रणसरोजको वंदोवारंवार जांकीकृपाकटासकर पावेनरसु
खसार ३ देवगिराअनिकठनमै जांकोनहिअधिकार तांके
हितभाषाकरौं उरधरपरउपकार ४ कुंडलीआछंद नाम
हरिहरसरस्वती यतिवरपरमउदार तांकेशिष्यसरस्वती ॥
जगन्नाथगुणसार जगन्नाथगुणसार मुमुक्षुजनकेहितका
री विवेकादियतिमान कृतीकोंकीनोनारी श्रुतिसागरकासा
र पतिउरभूषणअभिराम ऐसोरचनसुग्रंथ अर्हैनामृतअस
नाम ५ सोरठा भयोसुयतिवरएक विवेकाश्रमसंज्ञकसु
नि जांकेसंगअनेक प्राप्तभयेनरमोक्षमग ६ चौपाई वि
वेकाश्रमसोयतिमहाना विचारतभयोस्ववासस्थाना अ
समठनहिदेख्योजगमाहीं शुधहोवेमुनिकोमनजाहीं
७ ऽयासीलखनवनवतिहजारा नवशतअरनवन
वतिउचारा एतेमठदेखेजगजोऊ वासयोग्यनहितां
मैकोऊ ८ ऐसेगिरिवरअरुवनभारे नदीजलधि
पुरवापीसारे देखततिनदेख्योमठभूपा पांचजन्यजसना
मअनूपा ९ दोखंभाअररम्यताजाके नवद्वारकरशोभितवाके।

१= गौरीकेकानभूषणकोंसुंडसेपकड़कर=।२=।गौरीअंगगौरीकीगोद
मै=।३=।विवेकादिविवेकवैराग्यशमदमादिककूं संन्यासीरूपकरकेवरनन
कीयाहै विवेककानामविवेकाश्रमहै। वैराग्यकानामवैराग्यतीर्थहै।शमका
नामशमारण्यहै॥दमकानामदमारण्यहै। इसप्रकारसंन्यासीकेनामदशप्रका
रहै आश्रम १ तीर्थ २ वन ३ आरण्य ४ गिरि ५ पुरी ६ सागर ७ पर्वत ८ सरस्वती
९ भारती १० यहदशनाममंन्यासीआकेदेखेजातेहै =।४।= ऽयासीलख ८२००००
९९००० हजार।९०० शत।९९ नवे नव।अर्थात्सककम चोरासीयोनीकेशरीररू
पमठदेखेहै।५। मठभूपा सर्वसेउत्तममनुषशरीररूपमठ= ६= पांचजन्यपंच
जननाममनुषकाहै ततसंबंधी =७= दोखंभादोटंङ्गाखंभादोहैजिसमै=।८=
काननासका नेत्र मुखसानछिद्रदोछिद्रअंधोदेशमैहै सोनवद्वारहै =॥=

[१]उचित करणी कर शांति पावे। भोगन माहि स्वभाव कथावे
१० शास्त्र गम्य पर पावे जोऊ। अनेक जनम सुकृत कर होऊ
।सकल लोक के ये उपभोगा॥ तांकै मिलन उपावन योगा।
११ सोरठा जगमंगल वपु राम चंद्रार्चन के योग्य वर। जो
भैकर विश्राम पंडित चित हरषे सदा।१२।दोहा॥ वहुत क
थन से काम को भुवि पताल दिवि माहि। यति निवास के यो
ग्य पुन अस मठ देख्यो नाहि॥१३॥ चौपाई॥ विवेकाश्र
म सोय तिदिशाकुल। फिरत फिरत भयो अति व्याकुल। वास
योग्य मठ देख सुचारू कर निवास उर हरषे भारू १४॥
कृशित ननु विवेकाश्रम नामा। यति वर भूप निज आत्मका
मा। यां विध मठ पायो मुनि भारी। आई तहां एक दिव्य नारी १५
दोहा मनमतंग सम मंद अभि चलत सुललना चाल भू
मी काम विलास की यति वर काजन काल १६ चौपाई मं
द हास कर मुख विकसाई। स्वर पंचम संज्ञक जिन गाई स्त
क वदन कर लिप्त शरीरा। तप्त हेम सम वरण गंभीरा १७ को
कल सम पोले वर वैना मदरापान कर घूर्णे नैना सूक्ष्म
चीर श्रृंगार धर भासे मानो कांचन कुंभ प्रकासे १८ वि
शाल वदन तिलक युत भासे। मानो सांक शशांक प्रकासे
रक्तदंत डाडम सम भासे। नवपल्लव सम अधर प्रकासे १९
कमल नेत्र कर कमल प्रकासे। कमलाछ वृजन कर न निरासे
पीनवक्ष्ण गन कांची छाजे। पीन घटा जिम छटा विराजे॥२०॥

१=शास्त्र विहित कर्म कर के।=२=। शास्त्र कर गम्य जो परब्रह्म तिसके पावणे का
स्थान है=।३।= निज भोगों की प्राप्ति का साधक कर्म करणे के योग्य है=।४।= कुलस
कल दिशा=।५।= दिव्य सर्वांगना=।६।= जन मानो काल रूप है=।७।= निषाद।
ऋषभ। गंधार। खड्ज। मध्यम। धैवत। पंचम। यह सप्तस्वर राग का है जिसमें पंच
म संज्ञक स्वर सप्तम है तिसका विष्णु देवता है विप्र कुल से भई। कोकिल रव के तुल्य है॥
यां ने सर्व से उत्तम है। स्वर वोलन का भेद ग्रंथांतर में कहा है खड्ज स्वर मयूर बोले है। शि
गाल ऋषभ। अजा भेडी गंधार। क्रौंच मध्यम। अश्व धैवत। गज निषाद। कोकिल पंच
म स्वर बोले है।=८=।सूक्ष्म वस्त्र में कुच भासे है=।९।= कमलवन है नेत्र जिसके क
र हाथ में=।१०।= लक्ष्मी की शोभा को= जन मानो=११= छटा बिजली॥ ॥

रुणाझुणापदमैनूपुरवाजे। करकंकणगलहारविराजे।भ्रू
धनुधरकटाक्षशरभारे। कामीमनमृगकटिनिविदारे।२१।
सोरठा सुरफुरयुनवरकेश पीनकुचभरविलासकर। यै
निचितनकरतनिवेश वारणकरीनजानजो।२२।चौपाई।
तन्वंगीजबदेखीनारी।विवेकाश्रमसुविसमेभारी। मली-
नमुखपंकजयतिभारा। करनभयोमनमाहिविचारा।२३।
॥मानसीविचारवरननं॥ कोयहबालाप्रबलप्रभावा जिसक
रयहमठअधिकसुहावा। लखनपडिनअसरूपअपारा जि
मभानुशतनैजनतनुधारा।२४। भूमैभक्तवत्सलभगवाना॥
धरनभयोयदिनरखवाना। तसखोजनकिमकमलाआ
ई।रहिनसकनपतिविनालुगाई। २५।किमवाभववसेरहि
तेभवानी। भवखोजनहितफिरनदिवानी।किमवाकम-
लासनकीनारी। अधर्मीजानपतिभईन्यारी।२६।किमवा
रतिनिजपतिकरहीना। खोजनदग्धकामपतिदीना।कि
मवाकोऊप्राकृतनारी।कामानरखोजननरभारी।२७।कि
मवाहै यहभगवनमाया।रूपधारममोहिनआया।किम
वासुरपुरसेसुरराई। विघनहेतममनिकटपठाई।२८।
॥ करनजहांमुनिजननतपभारी। भेजनइन्द्रतहांसुरनारी।
यांविधपूर्वश्रवणाहमकीना॥ सोहमआजनेत्रसेचीना॥
॥२९॥ वहुतयतनकरमठहमपाया। यहअतिविघनक
हांसेआया।सुकृतकर्ममैविघनमहाना॥ ॥

मै२

१= सुरफुल पारिजातादि =।२।= यतिपरमपदप्राप्तिकीइच्छावाले-
संन्यासीजनोकेचित्तनिवेशकरेहै अर्थात् चित्तकोमोहितकरेहै=।
।३।तन्वंगी सूक्ष्मशरीरी=।४।= सुषुप्तिमूर्छामैवृत्तिकाअभावहोणेका-
रशरीरशवकीन्याई अमंगलरूपहोवेहै वृत्तिकेसद्भाववशामैअधिक-
शोभाहोवेहै इसीसेकहाहैअधिकसुहावा=५= यदिजेकरपृथिवीमेकहूंअव
तारधाराहोवै=।६।= इससेजन्यशरीरकूंदग्धकरकेभवसेरहितभवानी।=७=
कमलासनब्रह्माकीस्त्रीसरस्वतीहैक्याअधर्मीकामबुद्धिसेनिजकन्याकूंदेख
नारूपअधर्मसहितपतिकूंजानकरन्यारीभईहैक्या।=८=।महादेवकरदग्ध
निजपतिसेरहितरतिकामकीस्त्रीहैक्या=॥ ॥

यौं विध वृध जन सन्य वखाना । ३० । वैराग्य नीर्थ है यति भारा ॥ जो प्राणन से मोहि पि आरा । सो अस निकट रहे गा कैसे । रण मे रणभीत कनर जैसे ॥ शमार एप द मार एग्य जो ऊ । रहे न ह मदीनो विनशे ऊ । ३१ । दोहा ॥ यौं विध हम सम भ छोर कर जावै गेय ति भूय । मुमुक्षा अपि आवे न हि त पकर क्रश ि तस रूप । ३२ । चौपाई । जब ह मय ति सभ भये निरासा ॥ तव त्यागी मुक्ति की आसा । यति वर भयो समागम भारू ॥ निवास मठ रचयो विधि चारू । ३३ । यों मठ मे अस भयो । प्रवेशा । अति मूर्ख विना स्त्री समवेशा । दारू मयी युवति अपि जो ऊ ॥ नहि पर से प द कर यति सो ऊ ॥ ३४ ॥ यौं वि । धवृध जन भनन सुवानी । करत संग अस नौं ने हानी ॥ वैस्त्र मार्जित घृत पात्र जो ऊं । ते ज समीप द्रवन जिम सो ऊ ॥ ३५ ॥ तिमयति पाय युवति कों संगा । प्रचलत चित उर जगत अनंगा । जिता हार वाहे वृध योगी । होइ विर । क्त वा ही वे रोगी । ३६ । ऐसो यति अपितहां न जावे ॥ लिखि त नारी जहां सुन पावे । जिम विंध देश विषवल्ली वायु ॥ क रत संवंध हरत जन आयु । ३७ । नारी तनु संवंधी मारू त ॥ तै से यति वर को उर जारत । भाषणा दर्शन आदिक सारे । ॥ युवति संग सभ रहै निआरे ॥ ३८ ॥ विषधर दंश चिंत । न समाना । युवति चिंतन करत नरहाना ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ सभ अनर्थ को मूल युवति संग वुध जन कहा ॥ ॥

१= मांने वृधजनो के वाक्य प्रमाण करके = इस स्त्री का संग मेरी हानी । करेगा ॥ २ ॥ = वस्त्र कर के पोच्या हूआ घृत का पात्र ॥ ३ ॥ = विंध्याचल पर्वत मे जो विषकी वल्ली है तिन संवंधी वायुं = ॥ ४ ॥ = कुंकम कस्तूरी अतरादि सुगंधी द्रव्य कर लिप्त जो नारी का शरीर तिन संवंधी मारुत वायु = ॥ ५ ॥ = विषधर सर्प के दंश का चिंतन जैसे पुरुष कूं नाश करे है तथा नारी का चिंतन । ही नरका दि दुख प्राप्ति का रण है = ॥ ॥

ब्रह्मादिककीभूल अन्यजीवकीकोकथा ॥ ३९ ॥ सवैया।
॥ कमलासनदेखसुता अपनीमदनातुरहोइमहादुखपा
यो। मघवाजबगौतमनारिरमीभगसहकहूजाततबीभगु
टायो। सुरदेशककीयाषिनसंगनतेविधुदेहविषैछयिरो
गलगायो। इमदेवअनेकअनंगअधीनभयेअतिदीन
महादुखपायो। ४०। सोरठा। नारीयमपुरद्वार मानेजोनर
बचरहे। सोभवउतरेपार बडेभागताकेगने। ४१। चौपा
ई। नरकसमानराज्यजोदेखे। माटिपिंडसमकांचनपे
खे। नारीदेखकुणापसमाना। भवमेअसयतिदुर्लभमा
ना। ४२। सोरठा। मिलादेवबसवास उदिनभईनसहर
णाको। योग्यनवागविलास उक्तदोषप्रभावसे। ४३। चौपा
ई। यांहिठोरनरआनतकोऊ। वांछितयाकापूछेजोऊ॥
सदारहेकिमवाकहुंजावे। यांविधभेदकोनअसपावे॥
।४४।यहांयाकावांछितजोऊ। हममिलकरसभपूछेसोऊ
।प्रत्यकप्रणावचितहमसारे। किमकरसकवराकीहमारे
।४५।प्रवलविषयअवलादिकसारे। नावतहीउरलगनत
पिआरे। अतिदृढप्रेमआत्मामाहीं। प्रगटेयावुननरउस्ना
हीं। ४६। जिमकामीमनकामिनिलागा। जननीप्रेमनबहि
तेभागा। तिमआत्मरतिजवप्रगटानी। भईविषयप्रेमकी
हानी। ४७। आत्मतत्वविनकोभवमाही। कल्पितदारतनु
तेभयनाही। परकोरजुमेसर्पप्रतीति। रजुविनकोतहि
जनेसोभीति॥ ४८॥ नारनरषंडभेदसरूपा॥ ॥

१= मघवा इंद्र =। २ =। सुरदेशक सुरगुरुबृहस्पतिकीभार्या।
साथसंगकरनेसे=।३।= विधु चंद्रमा=। ४ ।= कुणापशव=। ५।=
वागविलास संभाषणकरनेकेयोग्य नही। उक्तदोष· दारुमयीयु
वतिअपिजोऊ इत्यादिग्रंथकरकहाजोदोषतिसकेप्राप्तिकेभयसे=
।६।= सदारहे· इसमठमेसदारहेगी अथवाकिसीदूसरेस्थानमेजावेगी
क्या=।७।=वराकी० अतितुछ दरिद्राकंगलीक्याकरसकेहै॥=॥ ॥

नमनावत उर उदित अनूपा। यावन चित उदयाचलमा।
हौ। उदभयो चेन नर विना हीं ।४९। दोहा। वैराग्य तीर्थ सवि
वहम नार प्रोढना कोइ। जिमव्याघ्रके निकटमे अजान
गऊहीहोइ ॥५०॥ कविरुवाच॥ सोरठा॥ असनिश्चय उर
धार गऊदासी सम प्रति। बोलेलखकरनार अधीन वेद
नरवरयति।५१। विवेकाश्रम उवाच। दोहा। हेकांते नू को
न है किसकी हैनू नार। आए तुम किसदेशसे किमवांछा।
उरधार। ५२। तहीं यह मठवरानने नवनिवासके योग।
यतिवरजन यामे वसे तजकर सकलेभोग।५३। चौपा
ई। यत्रवसे संन्यासी शांता। उपरतसहनशीलमुनिदां
ता। समाधिनिष्ठ मन क्रूरयति भूपा। देखनहैनित्यआत्म
रूपा।५४। तहांनवनेभद्रेनववासा। तातेनजअसमठको
आसा। जहांवेठमुनिआत्मध्यावे। तहांननववासामनभा
वे॥५५॥ कवित्त॥ जहांमोक्षइछुयति चिदात्माकोदेखे
संति देहइंद्रेप्राणमन धीसेन्यारोकरके। जहांवेदपा
ठकरे यज्ञदाननपचरे स्त्रीजनबालेआत्मज्ञानवा
छाधरेके। जहांबालेबैठआर्य सकलश्रुतितात्पर्य भूनन।
चिदात्ममाहि रूचीधुनीकरके। बालेअसमठमाही न।
वृवासवनेनाहीं नजोतांतेमठआशादयाउरधरके।५६।
।दोहा।। पंडितजनआश्रयसदा पांचजन्यमठजान।यां।
मेबनेनवासनव विश्वसदननिजमान।५७। कविरुवा
च। यां विधसुनयतिवरगिरादीरघनैनीनार॥ ॥

१= चितरूप उदयाचलपर्वतसे =। २।= वैराग्यतीर्थहैसचिवसह
कारीजिसका असाविवेकाश्रमहमहैं सोहमारेआगेनारीकौकौनस
मर्थाहै =। ३।= अध्येनकीयाहै वेद जिनपुरुषोंने तिसमेवरश्रेष्ठयति
विवेकाश्रम =। ४।= हेवरानने =। ५।= हेभद्रे =। ६।= हेसति हेपतिव्रते =।
।७।= देहइंद्रियप्राणमनबुद्धिसेभिन्नकरके आत्माकूंदेखेहै =। ८।= सक
लश्रुतिकातात्पर्यअसंगअद्वितीयब्रह्ममेनिर्णयकरकेकहेहैं =।

क्रमकरउत्तरकथननहिनवांलीकरसुविचार।५८।नार्युवा।
च।चित्तवृत्तीहैनाममैंश्रेष्ठाभगनीतोहि।यौंनेभद्रतुमअव
भयेकहांपछानोमोहि॥५९॥ चोपाई।पूर्वन्यागातुमम
ठजेना।जोअवआश्रयकीननिकेता।पालनसभकीक
रौंअनूपा।अधिदैवनजानोममरूपा॥ ६०॥मनरम।
णीयविषयशब्दादी। नांकीवांछामोहिअनादी। तन
साधककरणीअतिचारू।सोहमकोंसदलगनपिआ
रू॥६१॥ कर्मतज्ञननहिवांछामोरे। नांकाफलहम
कबीनछोरें।भिक्षुभावआश्रयकरगूढा।त्यागोकर्म।
यथातुममूढा॥६२॥ सुतईषणाविनईषणादोऊ॥
लोकईषणानीसरजोऊ॥तजकरनीनईषणाभारी।
होवेप्रतिग्रहभिक्षाचारी॥ ऐसाश्रुतिविधान जोकीना
॥ अविचारितउरनांकोचीनो॥ ६३॥ कबित्त॥आद्यसं
निवेशजांका पैठनहैतथाविधरमणीकगेहमाहिभ
लीविधकीजीए॥ अर्थअनुष्ठानरूपयत्नविनसा।
ध्यजांमे ऐसासमीचीनवेदसोनोत्यागदीजीए।अंत
संनिवेशजांका पठनहैतथाविधकांतारदेशनमाहि।
भलीविधकीजीए॥ अर्थअनुष्ठानजांमैभिक्षाश्रुति।
चयभासे सोनोहेयनाहिऐसाअनुष्ठलीजीए।६४।
॥ज्योतिष्टोमयागसेतो स्वर्गभारीहोततर ऐसोवेदवा।
क्यगुडजिह्विकासमानहै।नग्रमुंडीहोइ॥ ॥

१=गूढअप्रसिद्धसंन्यासभावकोआश्रयकरके=।२।बृहदारण्यकई।ब्रा·४।
पुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंति=
३ग्रंथरचनाकरकेजिसकाआद्यमैउल्लेखहै अरगर्भाधानादिसंस्कारकाविधा
यकहोणेसेआद्यमैजिसप्रयोजनहै=।३।=जिसकापठनभीआद्यमैहैअष्टवर्षब्रा
ह्मणमुपनयीताथाध्यापयीत इसअध्यापनविधिकरकेजिसकापठनप्रथम।
अवस्थामैहै अरग्रंथक्रमसेभीप्रथमपनेहै=।४।=कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजी।
विषेच्छतंसमाइत्यादिकर्मविधायकवाक्यकरकेविनसाध्ययागादिकर्मजि
समैअनुष्ठेयहै=।५।=अंतअवस्थाकरकेग्रंथक्रमकरकेअंतमैजिसकासंनिवेश
है=।६।कांतारवनादिशून्यदेश=।७।=भिक्षाप्रतिपादकश्रुतिसमूहरूपअर्थका
सेवनहै=।८।=त्यागकेयोग्यनही=।९।=वेदवाक्यस्वर्गकामोज्योतिष्टोमेनयजेत।

करभिक्षारटेदरदर ऐसोवेदवाक्यसार[1] अर्थकोंवखानहै ॥ ऐसीकल्पनाभक्तमेंकरनहै प्राणी जोऊ सेतोपूर्वजन्मकृतसुकृतसेहीनहै ॥ भागहीनचीननोंको । शास्त्रबोधहीनरंक[2] ईश्करमोहिनसोमदगललनानहै ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ इनमुंडीयनकेअहो जगेभिक्षाकरभाग ॥ जोंकेवाक्य[3] करनृपवन[4] गयेराज्यकोंत्याग ॥ ॥ ६६ ॥ चौपाई ॥ भिक्षाचरणनिजश्रुतिवखाने ॥ तो तेनोकोंहमसदमाने । असआशययदितोहिअगाधा । ॥ श्येनादिकिमकीनअपराधा[5] ॥ ६७ ॥ भिक्षाचरनयथाश्रुतिगावे ॥ तथाश्येनादियागसुनावे ॥ ओनस्नानेकर्महैंजेने ॥ मोक्षेछुनरत्यागकरनेने ॥ ६८ ॥ भिक्षाजानधर्मश्रुतिभारी । होवनहैसोभिक्षाचारी ॥ जेकरभिक्षालाभनहोऊ ॥ अतिकलेशनवपावेसोऊ ॥ ६९ ॥ अथवानिदिनकर्मकमावे । कहोत्यागकरकिमसुखपावे । तीनईषणा[6] कोंनरत्यागे । आत्मचिंतनमेसदलागे ॥ ७० ॥ असविधानकरनश्रुतिजोऊ । भिक्षाकुहिनकिमलजितनहीऊ । अनेकहधअसकरनवखाना । होवनहैवलीयक्षसमाना[7] । ७१ । भागहीननरकोंश्रुतिआना[8] ॥ भिक्षाभिनकिमकरेविधाना । जोआत्मदर्शनश्रुतिगावा । सोप्रत्यक्षकिमहमनहिपावा ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ करपादादिअवयवकीरचनायुनहैजोइ ॥ सोप्रत्यक्षसभकोंसदाविधि[9] नअर्थवनहोइ ॥

मे४   है४

=१= सारअर्थपरमार्थकोंकथनकरेहै =।२।= रंकदरिद्रहै। =।३।= जोंकेवाक्य जोंकेउपदेशकर। नृपराजालोक =।४।= श्येनादिकिमकीनअपराधा॰ श्येनादियागकूंकर्तव्यताकरकेनमाननेंकौनहेतुहै श्येनादिकने कोनअपराधकीयाँसोकहो =। ।५।= तीनईषणा॰ पुत्रईषणा विनईषणा लोकईषणा =।६।= ।यथायक्षस्तथावलीतिन्यायउक्ति =।७।= आना॰ और =।८।= विधि॰ आत्मावारेद्रष्टव्यः श्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः इति आत्मदर्शनउदेशकरके श्रवणादिकका विधान अर्थवालानहीहोवेगा निषफलहै =।=

॥७३॥ चौपाई॥ जो¹श्रुतिगम्य देहसे न्यारा। जो सभको अति लगत पिआरा। जांके²हितें भव प्रिय लगाना। यों विध आत्मा परतिनुममाना॥७४॥ तथापि वितसुत आदिक जोऊ। परमप्रेम विषयहैं सोऊ। तां का त्याग कहो किम कारन। कायक लेश धरो किम दारन॥७५॥ परम प्रिय शरीरसे न्यारा। जो आत्मा असश्रुति उचारा। विषयन करतुम तिंह कीजे। यों विध आत्मसुख नित्य लीजे।७६। दोहा। मुंडनशौच सनान कर अधोशयन वनवास। ब्रह्मचर्या शमादिकर करो किम आत्मनास॥७७॥ कवित्त। वीणानारी मुख से जो मीठे धुनी उदे हो दुंनां को सुनो प्रेम कर आत्मसुख कीजीये॥ मृदु चारु सेजामाहि मृगनेनी नारी रमो हेमसम नारीरूप नैंनसे पीजीये। चतुर विध अन्न रस भोगो सदा दैव वस माथे कस्तूरी तिलक भलीविध दीजीये। मौली³फूलमाला धरो चिंता असदा करो ऐसा सुख मोहि प्रभु वार वार दीजीये।७८। कविरुवाच। दोहा। चितवृती निज अ⁴नुज प्रति असजब कीन वखान। विवेकाश्रम बोले मुनि हसकर अवला जान।७९। विवेकाश्रम उवाच। चौपाई। चितवृते विपरीत नतुम चीना। वहुविध भाषणा यां ते कीना। रहो विपरीत अस वानी तोरी। तिस कर नहि कुछ हानी मोरी।८०। सोरठा। अविवेकन मोनास नहि कर सकन वरानने। सूर्यकोटि को भास अन्य तेज का को कथा।८१। चौपाई। निमग्न अविद्या मे जो प्रानी। तां को मधुर लगत नत वानी। शर्क⁵रमाहि मधुरता जो ऊ। विट⁶ग नक्रम किम जाने सोऊ।८२। लोका⁷लोक परे जो देशा। जहां न दि⁸नकर तेज निवेशा।

१= श्रुतिगम्य उपनिषद प्रमाण कर जानने योग्य। तथाच श्रुति तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामीति=।२।= जिस आत्मा के वास्ते संसार मै प्रेम पुरुष करै है। तथाच श्रुति नवारे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवतीति= ३ ।= मौली मुकट मै।=।४।=। अनुज पश्चात जान छोटे भाई के प्रति =।=५=।= शर्करा चीनी मै=।६।= विटगान विष्टा मै जो जीव रहने है =७।= लोकालोक पर्वत से परे =।८।= दिनकर सूर्य का तेज जहां नहीं लागे =०=॥

नहीं निवासी है नर जोऊ। हिमादि रूप लखे किम सोऊ। ८३।
। दोहा। अविवेकी नरको यदा होइ परमार्थ भान। नबनंत्री।
सेउ दिन स्वर वधिरा करे पछान। ८४। चौपाई। अविद्या आश्रि
न है नर जोऊ। नत्व मधुरता लखे न सोऊ। माना दुग्ध की जो
मधुराई। कमठ वाल जिम कबी न पाई॥ ८५॥ अविद्या।
मै जिन का मन लीना। नत्व गंध नि नक बी न चीना। जिम क
पूर सुगंध के ज्ञाता। नहों वे भिल लसुन के माता॥ ८६॥ नी
न ताप ना पिन नर जोऊ। नत्व छाया सुख नि से न होऊ॥ जि
म रवि रथ कर युगन तुरंगा। शीन स्पर्श नि नलगे न अंगा।
॥ ८७॥ विषय प्रेम न जन नो नेवाले। धारन करम मन वचन नि
राले। विषयासक्त भद्रे नर जोऊ। चिनवृत्ते सुख पावे न सो।
ऊ। ८८। चिनवृत्ते चिति आनंद रूपा। अति प्रिय पाय ब्रह्म अ
नूपा। अनि दुःख रूप विषय की आसा। करें धरें न हि उर उप।
हासा। ८९। दोहा०॥ अनुगत प्रिय सत आत्मा इक रस नो।
को जान। चिनवृत्ते न ज नि षय सुख व्यभिचारी उर मान।
। ९०। चौपाई। आत्मानंद जलधि न व वासा। करें किम।
अपर सुख की आसा। क्षीर निधी वासी जिम मीना। होवे न
अपर जल हि न दीना। ९१। चिदात्म सुख सागर के अंन रा क्
रें उन्मज्जन निमज्जन निरंतर॥ चिनवृत्ते विषयन संग आ।
ना। चाहें किम न व चाह न हाना। ९२। भद्रे न व आश्रय है जोऊ।
पर सुख रूप आत्म लख सोऊ। सुख लव है तु विषय स भ जानो
। सुख स रूप नों को मन मानो। ९३। चिनवृत्ते न ज विषय सुख ले
शा। चिदात्म सुख मे करो प्रवेशा। चिदात्म सुख विन भद्रे नो हू॥

=।१।= हिमादि रूप० स्वर्गादिक का रूप क्या सो नर जानते है किंतु।
नहीं जानते =।२।= नत्व मधुरता नत्व परमार्थ रूप प्रत्यग भिन्न ब्रह्म।
स्वरूप नत अभिन्न मधुरता नाम निरतिशय आनंद रूपता नो को नहीं।
जानते =। कमठ वाल० कछुका वालक। =।३।= नत्व गंध परमार्थ का
लेश =।४।= निराले एकांत मे बैठ कर मन वचन वेदांत वाक्य को।
धारन कर =।५।= चिति चेतन =।६।= आना और।=।

अनेकयत्ननकरतृप्तिनहोऊ ॥९४॥ दोहा ॥अविनाशीसुखकीयदाचित्तवृत्तेनेकरैंआस॥ देहउपाधित्यागकरकरोआत्मसुखवास ॥९५॥ अंतरमुखथिरहोइकरअंतरात्मसुखपाय॥भ्[1]इवाहिरविषयकीचिंताकरनलजाय ॥९६॥ चौपाई ॥ सुखप्रकाशरूपचितिजोऊ ॥करगनवस्तुसमजानोसोऊ॥विषयजन्यजइसुखमैप्रीती॥ करनवृत्तेउलटीनवरीती ॥९७॥ विषयजन्यसुखजोहिप्रसाद ॥ भासनहैतोहिपरमस्वाद॥सोआत्मसुखत्यागकरभारू॥ चित्तवृत्तेकिमचाहेंसुचारू॥॥९८॥ अतिस्वादगुडकोपरिहारे। जैसेतृणावोछापमुधारे॥तथाआत्मसुखनजकरचारू॥विषयसुखकिमचांहेनिकारू॥९९॥यथाउष्ट्रआम्रवृक्षपावन॥नजकरकरतकंटवृक्षधावन॥तिमतुमआत्मानंदत्यागा॥विषयविषेसइनवमनलागा॥१००॥अहोकष्टधरविषयध्याना॥भटकेदरदरश्वानीसमाना॥आत्मानंदपायउरअंतर॥चित्तवृत्तेस्थिरहोवोनिरंतर॥१०१॥जैसेपरगुणनजकरभारे॥खलरनदोषसदानीहारे॥तथातुमआत्मनत्वविहोवा।विषयनिरीक्षणमैमनलावा।१०२।दोहा।वहुनकथनसेकामकोसुनभइअवसार॥आत्मसुखकरव्याप्ततुमबैठरयाउरधार॥१०३॥ चित्तवृत्तेनहीनियमकर विषयनसेसुखहोइ॥ मिलिनामिलिनविभागकर प्रायादुखकोबोइ॥१०४॥ अलिमृगमीनपतंगगजविषयाशाकरहान॥ चित्तवृत्तेनिहारेनही समझेकिमनअजान·॥ ॥

१= हेभई=।२।= चिंताकरनलजाय चिंतनकरनेकरलजानहीपावैहै=।३।= जिसआत्माकीकृपाकरके=।४।= परिहारेत्यागेहै=।५।= निकारूनिकारा अशोभनरूप।=।६।=।विहोवात्यागा=।७।= मिलिनामिलिन प्राप्तिअप्राप्तिभेदकरके प्रायोवहुलताकरके दुखकूं बोवेहैं उत्पन्नकरे है =।८= ॥

॥ १०५ ॥ चौपाई ॥ जेकरशब्द होइ सुखदाई ॥ विषया-
सक्त नब्रु नजेनकाई ॥ जिमको किलरव मैमनलावे ॥
तिमरांसभरव किमन सुहावे ॥ १०६ ॥ यदिस्पर्श सुख-
कां विसनारे ॥ चिनवृत्ते विषयलंपट भारे ॥ जिमकांना को
कंठलगावे ॥ तिमकोंलागत्ल किमनहिलावे ॥ १०७ ॥ रू-
पयदा सुखकारणहोऊ ॥ विषयार्थी नरतांते जोऊ ॥ क-
नकरूप जिमरुचिकर देखे ॥ काकरूप तिम किमनहि
पेखे ॥ १०८ ॥ चिनवृत्ते से विनरसजोऊ ॥ सुखकारण
यदि होवे सोऊ ॥ नबरसालफल जिममनभावे ॥ किम-
नइंद्रवारुण तिमखावे ॥ १०९ ॥ चिनवृत्ते भवमें गंधजो
ऊ ॥ सुखकारणयदि होवे सोऊ ॥ नबजिम धूपधूमनरभा-
वे ॥ विनाधूम तिम किमनसुहावे ॥ ११० ॥ भेंद्रे सुखदायिक है जो
ऊ ॥ दुखदाना होवि नहै सोऊ ॥ जिमघृतपायस है सुखदा
ना ॥ अजीर्णरोगीकरनविघाना ॥ १११ ॥ दोहा ॥ निरतिशयसु
ख अनंतजो चिनवृत्ते आत्मरूप ॥ नांको उरधर थिररहो
भवरुगभेषजभूप ॥ ११२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहा ॥ विवेकाश्र
मचिनवृत्ति को यों विधकर उपदेश ॥ तृप्ती होइ स्थित भये
उरधरकरमायेश ॥ ११३ ॥ यों की माया प्रवलकर मोहित-
जीव अशेश ॥ प्रथमकवल सो पायकर तृप्त होइ मायेश ॥
॥ ११४ ॥ इतिश्री अर्हनामृतभाषाप्रवंधे विवेकाश्रम चिनवृ-
त्ति संवादे विषयत्याग उपदेशवरननंनाम प्रथमः कवलः
॥ १ ॥ श्रीमन्नारायणार्पणमिदमस्तु ॥ ॥

---

१ = रासभरव गधेकाशब्द = । २ । = कोला अंगार = । ३ । = रसालफल आंबका
फल = । ४ । = इंद्रवारणफल अतिकटु होना अनारूकहनेहै पंजावमेंतुं
माकहनेहै = । ५ । = विनाधूम विनाकाधूंवा = । ६ । = हेमद्रे = । ७ । = घृतपायस
चीनीघृतकरमिश्रितखीर = । ८ । = भव संसाररूपरोगकापरम औष
धीरूपहै = । ९ । = मायेश नारीरूपमायाकूंदेखकरके मायाका नियं
ता भगवानका ध्यानकरनभया यांते भगवानका ध्यानकरनेसेपुरुष
भगवतमायासेवचेहै = । = ॥ इतिप्रथमकवलटिपणी ॥ ॥

॥अथद्वितीयकवल्लारंभः॥ कविरुवाच।दोहा।पंचद्वारकरपंच कोजोनितकरेप्रकास।सोज्योतिश्रीकृस्नममकरेसदाउरवास॥ ।१। श्रीगुरुचरणसरोजका धरकरउरमैध्यान।भाषाटूसरक वल्लकी करोंनिजमतिसमान।२।विरागादिसाधनविना नही। ज्ञानअधिकार।तांतेप्रथमेकवल्लमैकीनविषयपरिहार।३। क हितदूसरेकवल्लमै आत्मतत्वयतिभूप।नानाविधप्रमाणकर॥ तथाज्योतिनारूप।४।यांविधसुनयतिवरगिराआदरकरउरधार ।जिज्ञासाआत्मतत्वकीउपजीतिसेअपार।५।निकटवैठकरजो रकर चितवृत्तिसीसनिवाय।विवेकाश्रमयोगीप्रति वोलीअव सरपाय।६। चितवृत्तिरुवाच। चौपाई। आनंदरूप यांकोगा वो। कोअसआत्मामोहिवतावो।पापशून्यआत्मतत्वजोऊ ।सदाविचारेपंडितसोऊ॥७॥ जाननयोग्यअसआत्मरू पा। श्रुतिशासनअससुनीअनूपा॥ मैत्रेयीप्रतिआत्मज्ञा ना। याज्ञवलकमुनिकीनवखाना।।८। कैसउदेशउरआ त्मज्ञाना।श्रवणमननकरआत्मध्यांना। आत्मदर्शन श्र वणाकरआना। मननज्ञानकरहोवेभाना॥९॥ तौतैकहो। ममआत्मरूपा॥ चिदानंदघनएकसरूपा।जिसकरस कलविषयहमत्यागें।चिदात्मविंनतमेसदलागें॥१०॥ देहादिसंघातसेन्यारा।अबतकनहिअसरूपनिहारा॥ जबअसआत्मनहिकोउभासा॥ तबसुखनाकीत्यागोआ सा।११।शब्दादिजनितसुखसेआना।भासेसुखनराईसमा ना।कहोविवेकाश्रमयतिराई।कैसेलखोंआत्मसुखदाई।१२

१= पंचद्वारपांचज्ञानइंद्रियद्वारा।पंचकोशब्दादिपंचविषयांकू।सोज्योति ।सोप्रकाशरूपश्रीकृस्न=।२।= अपनीबुद्धिकेअनुसार=।३।= तिसे०चि तवृत्तिकों=।४।= हाथजोडकरके=।५।= श्रुतिशासन· छांदोग्यके। अष्टमअध्यायमै सुरअसुरकेप्रतिब्रह्माकाकथनरूपश्रुतिकीआज्ञा। सुनीहै तथाचतत्रश्रुतिशासना यआत्मापहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशो कोविजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोन्वेष्टव्यः सविजि ज्ञासितव्यः इति=६।= आत्मावाअरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासि तव्योमैत्रेय्यात्मनोवाअरेदर्शनेनश्रवणेनमत्याविज्ञानेनेदं सर्वंवि दितं=।९।=ध्याना० निदिध्यासन=।

॥ दोहा ॥ तौंनेहमरेबोधहितमुंजसेतृणसमान। कार्यक
रणसंघानसेभिनकरकरौंवखान ॥१३॥ कविरुवाच ॥
ऐसेवचनचितवृत्तिके सुनयतीशउरधार॥नेत्रमूंदहि
नभरनदा असउरकरतविचार॥१४॥ अथमानसीविचा
रा॥ चौपाई॥ हैअज्ञविपरीतनितचीना॥गुरुशास्त्रश्रद्धा
सेहीना॥हैरंडापंडितअभिमानी॥कैसेयाकोबोधेज्ञानी॥
॥१५॥जोनरहीराकरेविदारन॥करेपानपावकअतिदारु
न॥नरेभुजाकरसागरजोऊ॥खलकोबोधसकेनहिसोऊ
॥१६॥जोविपरीतमतिखलमानी॥तौंकोहमकरसकुनज्ञा
नी॥याविधकथनकरनजरजोऊ॥नजनयोग्यखलनृपन
रसोऊ॥१७॥नगटसमीपविषयअपिहोऊ।विपरीतमति
नजानेसोऊ॥पितकरहतहैरसनाजांको॥ गुडदाताकि।
मकरैसुनांकों ॥१८॥ यद्यपिमहामूढ़यहनारी॥ नहोत्वि।
दात्मबोधअधिकारी॥ तथापिअसबोधनविनुनाहीं।वने
वासममयाँमठमाहीं ॥ १९॥ तौनेकरअसतर्कविदारन
॥उरमैउपमाकरकेधारन। करौंयाकोआत्मउपदेशा॥
जिसकरयतिनपावेकलेशा ॥२०॥ कविरुवाच ॥ दोहा॥
याविधकरसुविचारउर सवाधाननापाय। मूलाज्ञान
आवृतलख असबोलेयतिराय ॥२१॥ विवेकाश्रमउवा
च॥दोहा॥भवसंज्ञकवनशोभने हैदुर्गमगंभीर।भटकेजु
तअनेकनिंह निकसेकोइकधीर॥२२॥ चौपाई॥विचरेंज
हांपिसाचीनारी ॥ कालरूपअजगरभयकारी ॥ ॥

१= कार्यकरण॰ शरीरइंद्रियादिसंघातसे=।२।= अज्ञ॰विवेकसेरहि
तहै इसीहेतुसे विपरीतदेहादिसंघातकूंआत्मरूपकरइसनेजानाहै=।
३=।रंडा॰पतिसेरहितहै=।४।= सोऊ॰ हीरादिकके वेधनादिकरनेवाला
पुरुषभीमूर्खपुरुषकूंबोधननहीकरसकेहै=।५=।खलनृप॰मूर्खोंका
राजाहै=।६।= तर्क॰ देहादिसंघातमैआत्मत्वबुद्धिकासाधकयुक्ति॥
=।७।= उपमा॰दृष्टांतकूंआश्रयकरके=।८।= मूलाज्ञानकरआछा
दितबुद्धिजानकरके=।९।= जहां॰जिससंसारवनमे॰॥ ०॥ ॥

कामरूपजनसकरडरभारी क्रोधव्याघ्रगजेभयकारी २३
परोक्षनिंदकवानीजोऊ। करणशूलकझिलीरवसोऊ ॥ उ
रअनिष्टमुखसेप्रियवादी। असउलूजहांवसिनअनादी ॥
॥२४॥ लोकिकयशहिनकरणीचारू। पर्वनकरदुर्गम्यअनिभा
रू। तृस्नावनकूरणीकरसाखा॥ योविधभववनवुधजनभा
खा। २५। असेकांताररटनतुमत्यागा॥ राजमार्गमेनव
मनलागा। बोधनयोग्यआजतुमजानी। करौंनवआत्मसंश
यहानी। २६। अथआत्म बोधनप्रकार॥ कवित्त॥ भंद्रेमृद
पात्रभारूघटाकारलीजेचारू नाकेमध्यमाहिवालेछिद्रपांच
कीजीये। पुनादीपपात्रलीजे तेलवानीनामेदीजे गाढनमपा।
वोजहांतहांधरदीजीये॥ दीपकजगायकर राखोवालेभूमि।
पर अधोमुखीघटदीप ऊपरधरीजीये ॥ शब्दादिजनक।
पांचवीणादिकलीजेपांच प्रतिछिद्रभिन्नभिन्नवाले।
धरदीजीये ॥ २७॥ चौपाई ॥ शब्दजनकवीणावर।
लीजे॥ प्रथमछिद्रसमीपधरदीजे॥ स्पर्शजनकशिरी।
षन्नरफूला॥ द्वितीयछिद्रकेकरअनुकूला॥२८॥ रूपज।
नककांचनवरजोऊ॥ तीसरछिद्रढिगराखोसोऊ।रसव्यं।
जकरसपात्रलीजे॥ तुर्यछिद्रकेसनमुखकीजे।२९। गंधनि
मित्तकस्तूरीजोई। पंचमछिद्रढिगराखोसोई॥ यांविध।
पांचवस्तुवरवाले। छिद्रछिद्रप्रतिराखनिराले।३०। कविरु
वाच ॥दोहा॥ यांविधजवमुनिवरकहा चितवृत्तितब।
चितलाय॥ तथाविधतिनकीयोसभमुनिवरआज्ञापा।
य॥ ३१॥ देखकरमुनिप्रसन्नचित चितवृत्तिकूतसभ।

१= झिलीरव झिलीनाम जंतुविशेष ग्रीषमऋतुमे वृक्षोंपरवहुतशब्द
करेहै पंजाबमे बिंडाकहतेजिसकाशब्दहै=।२।= असेसंसाररूपवन।
काभ्रमण=।२॥ राजमार्ग॰ वेदांतवाक्यरूपराजमार्गमे=४= हेभ
द्रे=५= मध्यमाहि॰ घटकेउदरमेचारोतरफ=६= शब्दादिपांचविषय
काजनकवीणादिपांचलीजे=७= ढिग॰ समीप=८= तुर्यछिद्र॰चौ।
थेछिद्रके =।९।= निराले॰ जुदाकरके =।= ॥

जुदा

काज। विवेकाश्रम चितवृत्तिको पुनवोलेयराज ॥ ३२॥
विवेकाश्रमउवाच॥ ३२॥ चौपाई॥ कमलपत्रसमनेत्र
विशाले। तममैकिमनवभासेवासे। कविरुवाच। यौवि
धजबमुनिगिराउचारी॥ सुनिमनमनोहरवोलीनारी॥
।३३। चितवृत्तिरुवाच। सुनोमुनेअसघटकेपासे। वी।
णादिपंचकमोहिभासे। आनवस्तुयांहोरनकोऊ। कहो
मुनेकिमभासेसोऊ।३४। कविरुवाच। यौविधसुनचितवृ
त्तिकेवैना। प्रसन्नमनमुनिविकसितनैना। हर्षसहितवोले
पुनवानी। विवेकाश्रमयतिपरमज्ञानी।३५। विवेकाश्र
मउवाच॥ पंकजदलसमनेत्रविशाले॥ चितवृत्तेअव।
कहोममवाले। वीणादिपंचकजोउगावे॥ स्वनेभानकि
मनांकापावें॥३६॥ किमवाछिद्रप्रकाशकमाने॥ किमवा
घटप्रकाशकरजाने। भिंनप्रकाशककिमवाधारा। कहो
वृत्तेसंशयममभारा।३७। कविरुवाच। यौविधसुनयतिनि।
वचनरसाला। वचनमनोहरवोलीवाला। चितवृत्तिरुवा
च। शालाशोभासंपनभारू। स्वनेनलखोवीणादिचारू॥
।३८। मुनेननांकोछिद्रप्रकासें। नहिघटकरवीणादिक
भासें। घटमैजोचमकनअनिचारू। दीपतेजभोयनिवरभा
रू।३९। निसकरभासितसकलसमाजा। घटसमीपजोमुने।
विराजा। दीपतेजविनआननकोऊ। भासकयांमैभासेमो
हू।४०। कविरुवाच। दोहा। विवेकाश्रमचितवृत्तिके सु।
नेअसवचनमहान। प्रसन्नमनवोलेपुना वचनसक
लसुखखान॥ ४१॥ ॥ ॥ ॥

१= तममैं॰ इसअंधकारमैं॰ =। २।= वीणादिपंचक॰ वीणादि।
पांचवस्तु=।३। हेकमलपत्रवतविशालनेत्र वाली=।४।= स्वनेभान॰
अपनेप्रकाशकरकेभानहोतेहैक्या=। ५।= संशयममभारा॰ इसमैंमेरे
कोंभारीसंशयहैतिसकीनिवृत्तिवासनेकहो=। ६।= हेमुनेघटकेसमीप
विराजमानजोवीणादिसकलसमाजहै भोगकासाधनसमग्री है
सोनिसदीपतेजकरकेप्रतीतहोवैहे।=।०।=। ॥

॥ विवेकाश्रमउवाच ॥ चौपाई ॥ मृत्तिकामयघट भाँजन जोऊ। दीपनेज पदार्थ किमसोऊ। किमवावातीयुगनशरावा। दीपनेजपदकरनुमगावा ४२ किमवाइन सेकोऊन्यारा॥ दीपकपदकरनोहिउचारा। जोदीपकपदकरनुमगावो। चितवृत्ति मोहिप्रगटसुनावो।४३। ।कविरुवाच॥ दोहा॥ याविधमुयतिवरवचन चितवृत्तिकरसुविचार। विवेकाश्रमयोगीप्रतिहसकरवोलीसार।४४। चितवृत्तिरुवाच। दोहा। मृत्तिकामयशरावानहि दीपअर्थयतिभूप। सनेहयुतवातीनदशा॥ नहिदीपार्थसरूप।४५। घृतयुगनदशापात्रकर चामकनचंपाकार। तेजगिराकरमुनेमम सोवाच्छिन। उरधार।४६। कविरुवाच॥ चौपाई।जवचितवृत्ति असवचनसुनावा। तोकरतोषयतीश्वरपावा॥ नेत्रमूंदकरभयेअसंगा। रोमांचकंचुकव्यापअंगा।४७। चलननेत्रजलविंदुमहाना। अचलभयोमुनिअचलसमाना। अखिलरूपआत्मनलजोऊ। करविचारउरपेषनसोऊ।४८। दोहा यांविधविषयसंवंधसे भासितअंधसमान यांतेसभवंधनभयेआत्मभानकरहान।४९। निजसमीपमेदेखकरयोविषयनिवरूप।तदाअवलाचितवृत्तिउर विसमितभईअनूप।५०। चौपाई। पूर्वअपरविचारउरमाहीं। करनभईअवलाप्रवलाही। मोहिआत्मवोधनकेकाजा। भयोप्रवृत्तयहयतिवरराजा।५१। मुनिउपमाउपमेयवखाना॥ घटशरीरदोनोसममाना॥ इंद्रियछिद्रकीतुलनाकीनी ॥उरशरावकीसमनालीनी॥ ५२ ॥ ॥

१=। दीपतेजपदार्थ॰ दीपनेजपदकावाच्यहैका=।२।=शरावा॰सनेहकाआधारमृत्तिकापात्र=।३।=सार॰ दीपनेजपदकापृथ्यार्थअर्थ=४=। दशा॰ वाती=५।= चंपाकार॰ चंवेलीकीकलीकीन्याईजोचमकेहै=६=। तेजगिरा॰ दीपनेजशब्दकरके=।७।= कंचुक॰ जामा=।८।=अचलपर्वतकेसमान =। ९ ।= नामकरकेअवलाहै वस्तुनःप्रवलाहैः ॥ =॥१०॥ उर॰ हृदय॰ ॥

सनेहलिपिनवानीसमाना। अंतस्करणमुनिकीनव।
खाना। दीपसमानजीवमुनिभाखा। वीणादिसमविषय
शरखा। ५३। दोहा॰। याविधचिदात्ममोहिकोदेहादिक
सेआन। स्वप्रकाशदेहादिकाभासिककीनवखान। ५४।
अनुसंधानप्रसंगसेप्रत्यकचिदात्मपाय। मुकरछायसम
दृशासे रहितभयोमुनिराय। ५५। चौपाई॥ आत्मज्यो
तिरूपताजोऊ। तामैमानमुनिकहांनकोऊ। ताते प्रश्न
योग्यमुनिराया॥ ऐसविचारकरपरसीकाया। ५६।
जबनिजतनुस्पर्शमुनिजाना। तबमुनिभयोसमाधिउथा
ना। प्रफुल्लनेत्रनोंकीढिठताई॥ देखनहीबोलेयतिराई।
॥५७॥ विवेकाश्रमउवाच॥ परमहंसशरीरभवमाहीं
स्पर्शनयोग्यकिसीकरनाहीं॥ कामादिमलमलनतनुधा
री। विशेषकरकरेस्पर्शननारी। ५८। ज्ञानसमानपवित्र
नआना। इमअर्जुनप्रतिकृष्णबखाना। आत्मभानगोदाक
रपूना। रहितसदायतिवरअवधूना। ५९। आनस्पर्शपंक
भवमाहीं। ताकेयोग्ययतिदेहनाहीं। दोप्रकारकरशौच
यखाना। वाहिरआंतरभेदकमाना। ६०। मृद्जलकरशुध
ताहैजोऊ। वाहिरशौचकहावेसोऊ। रागादिमलरहित।
मनजोऊ। आंतरशौचकहावेसोऊ। ६१। स्मृतिकथनेशौ
चदोऊधारी। सोयतिपदमरहनअधिकारी। वाहिर।
आंतरसदामलीना। असतुमयतिस्पर्शकिमकीना। ६२
दोहा। स्वअंगकोपरअंगसेस्पर्शकरेनहिकोइ। अस।
निषेधगरजैसदाऊचेभुजकरसोइ॥ ६३॥ ॥

१=विषयशर॰ शब्दादिविषयपांच। =२=। अनुसंधान॰ आत्मचिंतनप्रसंग
करके=। ३। =मुकरछायाकेसमानजोदशा दर्पणकेसमानजोसमष्टिव्यष्टि।
स्थूलसूक्ष्मकारणशरीररूपाबाह्यदशा तनप्रतिबिंबितविराटसूत्रदेव्य
रूपानंदतरगनविश्वतैजसप्राज्ञरूपा तिससेरहितभयोतुरीयस्वरूपमें।
स्थितभयाहै=४ = चित्तमैऐसाविचारकरके=५= असतुम वाहिरआंतर
मलीनजोतुमतिसतुमनेयतिकूंस्पर्शकाहेकूंकीया। =। ॥

चौपाई मुमुक्षा कर देहादि सारे। विषय संग से जो नर टारे। अ
स्य यति करे उलंघन नाहीं। उक्त निषेध धरे मन माहीं। ६४।
पद मरदन ननु पूर्व बखाना। पुना निषेध सर्वथा माना। पू
र्व पर अस जानो विरोधा। अस शंका कासु नो निरोधा। ६५
। सर्व संग यति दूर विहावे। निर्जन देश वसन मन लावे॥
यौं विध अर्थ करै निरदेशा। निषेध वाक विरोध न लेशा
॥ ६६॥ श्रद्धावान मूढ नर जोऊ। विधि निषेध अधिकारी
सोऊ। मीमांसिक अस कथन सु कीना। निषिध कर्म मैं।
श्रद्धा हीना। ६७। श्वान चंडालादि सहचारी। विषय संग
कर दूषित नारी। सो किम करे स्पर्श मम अंगा। परमहंस ह
म सदा असंगा। ६८। अंगुल स्पर्श खल नर पावे। सो हि
कूद कांधे पर आवे। यौं विध कथन करै प्राचीना। तथा
हि नु मद्दुष्टे अब कीना। ६९। दोहा। यति न हि परसे।
आन को न हि यति को नर आन। उभे शुद्धि कर युगन जोव
से सफटक समान। ७०। चौपाई। ये अधीन के थाले सोवे
। ये यति चीर कवी न हि धोवै। शैनन लजि नक वहून धोना
ये राखैं नित दंड अधोना। ७१। द्रव्य संचय हि न उदम धारी
। ये पुना मठ माहि अधिकारी। याना रूढ ये शव समाना॥
ये नारी भाषण लपटाना। ७२। वृथा कथा मैं ये अनुरागी
परिहास प्रिय जो को लागी। ये अथर्व करणी के ज्ञाना।
ये यति जन रंजन मे रानी॥ ७३॥ ये न रहै परमार्थ भारी॥
जों का चिन निन वाहिर चारी। ये पर दूषण स्वच कलेठा॥

१=देहादि संघान=।२।=टारे वर्जै।=।३।=उक्त निषेध॰ स्व अंग को पर अंग से दूसदेहा
मे कहा जो निषेध=।४।= ननु शंका अर्थ मै है॥=५=॥ श्रद्धावान॰ गुरु शास्त्र वाक्य
मे विश्वासवान पुरुष=।६।= ननु निषिद्ध आचरण को पाप का जनक होने से निषि
ध कर्म मै श्रद्धावान की प्रवृत्ति कैसे होवे है इस शंका कूं मन मै रख कर कहा है श्रद्धा
हीना॰ निषिद्ध कर्म मे केवल राग की ही प्रवृत्ति का जनक होने से श्रद्धा विना ही प्रवृ
त्ति होवे है॥=।७।=॥ प्राचीना॰ वृधा।=८=। अथर्व करणी मारन मोहि-
नादि कर्म के =।९।= लंग मूढा =॥

कलहाँमेंजाँकीउतकंठा॥ ७५॥ चिनहृने असउक्तयति भासा। ताकेस्पर्शकीकीजेआसा। निषेधशास्त्रविननरजोऊ॥ सुखनरनप्रबोधेसोऊ। ७। चिदात्मचिंतनकंचुकधारी॥ असयतिकोकिमबोधेनारी। चिनहृत्तेरहोकथानिराले॥ याँमेनवअपराधनवाले। नवसंवाददोषकरजाना। दीनदंडअसमोहिविधाना। ७६। दोहा॥ चिनहृनेकहोममवचातुमकिमनिश्चयकीन। किमवानहिहमनहिलखेँ आनठौरमनलीन। ७७। कविरुवाच॥ चौपाई॥ याँविधसुनकरमुनिवरवानी। चिनकरदुखितनभईभवानी। निजअपराधसुनिश्चयकीना। निजस्वामीकोदोषनदीना। ७८। स्वभावकदुसृचिननरजोऊ। सनसंगतयुदिपायेसोऊ। प्रसंन्नमनयदिहोंवनभाना। सोनरनहिकुशमुष्टिसमाना॥ ७९॥ ॥ ॥ सोरठा॥ मलनवदनजलजाय चिनहृतिनिजअपराध कर॥ बोलीसीसनिवाय विनयनीनिसंयुतवचा॥ ८०॥ ॥ चिनहृतिरुवाच ॥ चौपाई॥ जोहिपरअपराधकरजाना॥ साधुकोपअनलप्रख्याना। परअज्ञानकेविनाविचारे। शांतिकरसकननजलधिभारे। ८१। जिज्ञासाजबमनमेंजागी। प्रश्नउतकंठानबमलागी। अतिनिंदितअविनयहमकीनी॥ क्षमाकरोनहिआज्ञादीनी॥ ८२॥ क्षमानिमित्तनयाचाममजोऊ॥ नवआगेविफलाकिमहोऊ। क्षमासनकासहजस्वभाऊ॥ दीनवचनकरनहिउपजाऊ। ८३। दोहा। घटदीपकदृष्टांनकर देहादिकसेआन। प्रगटकीयोतुमआत्मा सोममनिश्चितजान॥ ८४॥ चौपाई ॥ ॥

१=। यतिभासा॰ यतिकीन्याईप्रतीयमाना=।२।= इसप्रसंगकोजाणे=।३।= आनठौर॰ आत्मअनुसंधानमेंलगाथा=।४ = जेकरप्रसन्नमननहोवे=।५ = कुशाकीमुष्टिसमानहै=।६ = जलजायकमलमसनहैमुखरूपकमलजिसकाऐसीचिनहृति=।७ = यहकामइसनेजानकरनहीकीयाइसप्रकारकाजोविचारतिससेविना=।८ = जलधिसमुद्र =।९।= आपपरआज्ञानहीकीया॥= ॥

अतिमूर्खविपरीतमतिवारी। स्त्रीस्वभावकरदूषितभारी।
तुमविनकौनसुनेअसजाना। तुरतकरेममआत्मज्ञाना॥८५
आत्मानिष्टज्योतिताजोई। जिज्ञासाताकीममहोई।मोँ
नयुक्तिकरसुनेकहीजे। दासीजानदयाममकीजे।८६।कवि
रुवाच।दोहा।यौंविधकहाचितवृत्तिजब तबबोलेयतिराज॥
॥विवेकाश्रमचितवृत्तिको चिदात्मवितसिरताज।८७।विवेका
श्रमउवाच।चौपाई।आत्मज्योतिरूपताजोऊ। कहौंमानतौ
मैसुनतोहू। भयोविदेहदेशकाराजा।जनकनामचिदात्मसु
खभाजा।८८।ताकेगृहमेसहजस्वभावा।योगीयाज्ञवलकच
लआवा। विधिवततुसपूजननृपकीनी।विविधभेटनृपतौ
कोदीनी।८९।भक्तितुष्टमुनिवचनउचारा। वरमागोनृपजो
मनधारा।कामप्रश्नवरभूपतियाचा।तैसीतवमुनिदीनीवा
चा।९०।दोहा।जनकसभासंवादमे चिदात्मवितमुनिजा
नावहुतप्रश्नअवसानमे वोलेजनकमहान।९१।किंमज्यो
तियहपुरुषपुनकरतसकलविवहार।इमयोगीप्रतिमही
पतिकीनप्रश्नअतिसार।९२।चौपाई। यौंविधसुनकरनृप
वरवानी।याज्ञवलकवोलेमुनिज्ञानी।रविज्योतियहपुरु
षकहावे।तिसकरनरविहारसभपावे।९३।ताकासाध
कवाचाजोऊ।नरपतिप्रतिवोलेमुनिसोऊ। स्थितहोवेगृ
हवाहिरजावे।करेकर्मसभपुनगृहआवे॥९४॥ ॥

१=मानश्रुतिप्रमाण=२=आत्मवेत्तोमेशिष्ट=३= बृहदारण्यककेचथे
अध्यायमे तीसराब्राह्मण जनकं ह वैदेहं याज्ञवल्क्यो जगाम इत्या
दिजनकयाज्ञवल्क्यसंवादरूपचितवृत्तिप्रति विवेकाश्रमसुनावेहै भ
योविदेहदेश इत्यादि=।४।= तस्मैह याज्ञवल्क्यो वरंददौ सहकामप्र
श्नमेव वव्रे तंह्मास्मै ददौ इसश्रुतिका अर्थएकचौपाईकरकहेहै भ
क्तितुष्ट इत्यादि=।५।= याज्ञवल्क्य किंज्योतिरयंपुरुष इत्यादित्यज्यो
तिः सम्राडिति होवाचादित्येनैवायं ज्योतिषास्ते पल्ययते कर्मकुरुते
विपल्येतीत्येवमेवयाज्ञवल्क्य। इसश्रुतिकाअर्थएकदोहासाढेदोचौ
पाईकरकहेहै किमज्योति इत्यादि। व्यवहारकासाधककौनज्योतिवाला
यहपुरुषहै ॥ इसीतरासर्वत्रकिंमज्योतिपुरुषपदकाअर्थकरना॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यावनकरेपुरुषविवहारा॥ रविज्योतिकरसोउरधारा॥यों
विधसुनमुनिवरकीवानी।पुनबोलेनृपआत्मज्ञानी।९५। जे
बरविअस्तभावकोपावे। किमज्योतिनबपुरुषकहावे।सुननृ-
पवचनसकलसुखकारी। चंद्रज्योतिनबमुनिउचारी।९६॥
चंद्रज्योतिकरनरसभकाजा। पूर्वउक्तकरतधरोराजा॥यों
विधसुनमुनिवचनरसाला। बोलेपुनाजनकभूपाला॥९७॥
अदृशभयोजबचंद्रमुनिराज। किमज्योतिकरकरेनरकाज।
यांविधजनकप्रश्नजबकीना। तबबोलेमुनिशास्त्रप्रवीना॥
९८ तबनरअनलज्योतिउचारा। अनलकरकरतउक्तवि-
हारा॥ सुनमुनिवचनसकलसुखदाई॥मुनिप्रतिपुनबो
लेनरनाई॥९९॥ उक्ततीनेरजहांनपावे। किमज्योतिनबपु
रुषकहावे॥ असमुनजनकवचनमुनिराई।नबबोलेनृप।
प्रतिवरदाई।१००।जबनरनिजकरकोंपिनपावे।नबवाचाज्यो
तिश्रुतिगावे।आसनादिक्रियाहैजेती।वाचाकरनरकरतसु-
नेती।१०१। असजुबकथनमुनीश्वरकीना। नबबोलेनृपज
नकप्रवीना।निखिलज्योतिनरजहांनपावे॥नहांपुरुषकि
मज्योतिकहावे॥ यांविधनृपमुनिप्रतिजबभाषा॥ स्व-
यंज्योतिनरमुनितबराषा॥१०२॥ दोहा ॥ आत्मज्यो
तिसरूपता विषेश्रुतितोहिमान॥ कहाभलीविधशोभ-
नेनिश्चयकरउरजान॥१०३॥ ः ॰ ः ॥

१=। अस्तमितआदित्येयाज्ञवल्क्यकिंज्योतिरेवायंपुरुषइति चंद्रमाएवास्य
ज्योतिर्भवतीति चंद्रमसैवायंज्योतिषास्तेपल्ययतेकर्मकुरुते विपल्येतीत्ये
वमेवैतद्याज्ञवल्क्य१ अस्तमितेआदित्येयाज्ञवल्क्यचंद्रमस्यस्तमितेकिंज्योति
रेवायंपुरुषइत्यग्निरेवास्यज्योतिर्भवतीति अग्निनैवायंज्योतिषा॰ २अस्त
मितआदित्ये चंद्रमस्यस्तमिते शांतेअग्नौ किंज्योतिरेवायंपुरुषइति वागे
वास्यज्योतिर्भवतीति वाचैवायंज्योतिषास्ते॰ =।३।= यहतीनश्रुतिकाअ
र्थ संक्षेपकरकेविवेकाश्रमचित्तवृत्तिप्रति कहतेहै जबरविअस्तभावईहां
सेलेकरछेचोपाईमैंदिखावेहै=।२।= धराराजा॰ हेधराराज =।३।=
अस्तमितेआदित्येयाज्ञवल्क्यचंद्रमस्यस्तमिते शांतेग्नौशांतायांवाचि
किंज्योतिरेवायंपुरुषइत्यात्मैवास्यज्योतिर्भवतीत्यात्मनैवायं॰ इसकाअ
र्थएकचोपाईमेकहाहैनिखिलेति॥=॥

॥ चौपाई ॥ सुनो युक्ति अब नो हि वखानो। चित्त दृत्ते चित लाय-
कर जानो॥ कहो ज्योति स्व वस्तु कि मरूपा। जिस निमित्त नव प्र
श्न अनूपा। १०४। जाति रूप यदि नो गावैं। नव आत्म मैं कव हूं
न आवैं। जाति व्यक्ति नहि आत्म माहीं। सभ से पर संग को नाहीं
॥१०५॥ शुक्ल भास्वर रूप ना जोऊ। ज्योति रूप यदि माने सोऊ। उ
ष्ण स्पर्श ना यदि सौभागे। ज्योति रूप ना तव मन लागे। १०६। चित्त
दृत्ते नव अनल के माहीं। रहे दोऊ आत्म मैं नाहीं। रूप स्पर्श से भि-
न्न अनादी। आत्म रूप गावैं श्रुति वादी। १०७। उदय अस्त मय नो-
दी प्रधाने। ज्योति रूप ना यदि तुम माने। नव नैं रूणी अस्त रूणी उ
चारा। आत्मा उदै अस्त से न्यारा। १०८। कारण जन्य अँधिंधन रू-
पा। यदि अस राखे ज्योति सरूपा। नव चपले चपला नव जाना॥
नहि आत्म ज्योति नो हि भाना॥ इंधन रहित हेतु से शून्या। आत्म
ज्योति जान अन्यूना॥ १०९॥ दोहा॥ स्वप्रकाश जो है सदा भा
सक पर को जान॥ अस ज्योति यदि इष्ट नव सो आत्मा नहि-
आन॥ ११०॥ चौपाई॥ सो हि ज्योति का ज्योति महाने॥ श्रु
ति धर सुन इम श्रुति वखाने॥ दीप्यमान चिदात्म पछाना।
॥ भासित है सभ भासक जाना॥ १११॥ याँ विध दूसर श्रुति व
खाने॥ स्वयंप्रकाश आत्म को माने॥ जास भासकर भासित
सारे॥ चित दृत्ते अस अपर उचारे॥ ११२॥ जिसकर सकल
वस्तु को जाने। अस आत्म नत्व किसकर जाने। चित दृत्ते अस अप
र श्रुति गावे। स्वयंप्रकाश आत्म ठहरावे॥ ११३॥ ॥

१= नानाविध विकल्प करके आत्मा निष्ठ ज्योति रूपता सिद्ध करें हैं कहो ज्योति स्व इ-
त्यादि करके =।२।= भाग से विना वेदांन का श्रवण दुर्लभ है इस आशय कर कहने है॥
हे सौभागे =।३।= हे नारीयों मे श्रिष्ट नारी। =।४।= हे नरुणी यौवने = नरुणी सूर्य इ-
स कर के चंद्रादिक का भी ग्रहण करणा =।५।= अप जल है इंधन काष्ट रूप जिस
मैं =।६।= हे चपले चपला विजली =।७।= न देवा ज्योतिषां ज्योति रायुर्होपासनेदू-
ति श्रुतिः। वेदांन श्रवण कर पुरुष महान भाव को प्राप्त होवे है इस आशय कर संबो
धन दीया है हे महाने =।८।= दीप्यमान॰ कठ श्रुतिः न तत्र सूर्यो भाति न चंद्र तारकं नेमा
विद्युतो भांति कुतोयमग्निः तमेव भांतमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति = मुंड
क श्रुति अपि तस्य भासा सर्वमिदं विभाति =।९।= येनेदं सर्वं विजानाति तं केन विजा
नीयात् इति बृहदारण्यक श्रुतिः =।=

किसकर आत्मन त्वनरजाने। यौंविधअर्थकाश्रुतिमें । हाने। प्रत्यगात्मगतप्रगटवखाने। ज्योतिरूपतापरमसु। जाने। ११४। यदिआत्मानहिंसुतेप्रकासा। नबहोवेजडता। कावासा। निजजडताकरअंधप्रसंगा। जगतमाहिंनहिं। होवेभंगा। ११५। दोषप्रसक्तियुक्तिमहाना। आत्मतेजरू। पत्वमेमाना। यौंविधश्रुतितर्कप्रमाना। ज्योतिरूपताविषे। वखाना ॥ ११६॥ दोहा ॥ आत्मतेजरूपत्वमें नूतन। सुनइतिहास। श्रवणमात्रकरजासके नरतमहोवतनास ॥ ११७॥ चौपाई ॥ भरतखंडभुविपूतकहावे॥ भद्रकर्मकरभद्रेपावे॥ गोदागरूड़मतीकोसंगा। करत दुरितसेवनकरभंगा। ११८। हरिद्रानामनदीप्रख्याता। करतदुरितजनकेसभघाता। सेवितहरिद्रासललमहाना। पुसकरकरतदुरितसभहाना ॥ ११९॥ वंजराजलसीस जोधारे॥ तीनदिवसकरदुरितविदारे॥ गोनमीजलहेअ तिमहाना। करतदुरितदर्शनकरहाना ॥ १२०॥ संगमज लसुननेत्रविशाले। हरतदुरितदर्शनकरवाले। चितव्र। तेब्राह्म्यादीपुराना॥ वारंवारअसकरतवखाना॥ १२१॥ ॥नहिंवंजरासंगमसमाना॥ नरकोमुक्तिदातीर्थआना॥ ॥ब्रह्मशर्माद्विजभयोप्रवीना॥ असंसंगमवासातिनकीना॥ २२॥ सुमंगलाख्यामंगलरूपा। द्विजपत्नीसंगअति अनूपा॥ पूजापाठादिकनपभारी॥ करतभयेदोनोनरनारी ॥ १२३॥ दोहा ॥ गोदावरीसेवामे प्रसक्तचित। नरनार॥ कीनवासचिरकालतिन सुतवांछाउरधार॥ ॥ १२४ ॥ सुतवांछाकरकर्मतिन नरनारीमिलकीन ॥

॥=१॥=॥ आत्मानंकेनविजानीयात् इतिश्रुतिः ॥ २ ॥ =। हेम हाने=।३।= हेसुजाने=।४।= निजजडता॰ आत्मजड़त्वकरके=।५।= । तेजरूपत्व॰ ज्योतिरूपत्व=। ६।= भद्रकर्म॰ सुकृतकर्म=। हेभद्रे॥ =।७।= गरूडमती॰ गरूडगंगा=। ८।= नेत्रविशाले हेविशालनेत्रवाली॥ =।९।= हेवाले=।१०।= सुमंगलाख्या॰ सुमंगलाहैनामजिसका= मंग लरूपा शोभनरूपा=।=

वृद्ध भये जब शोभने भयो सुत नेत्रहीन ॥ १२५ ॥ तव प्रभाव कर शोभने अशोभन सुख विशेष ॥ विषयजन्य चाहें सदा चिन्तत जे जन अशेष ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ अस सुत जब नरनारी पावा ॥ पुष्ट भये नन्तु तुष्टि मन आवा ॥ सुत पालन मैं अति हित लागा ॥ आनन्द जन सम दंपती त्यागा ॥ १२७ ॥ मोह शक्ति सुत मैं अति जाना ॥ निसदिन लालन मैं मन राना ॥ अष्ट वर्ष जब भये विनीना ॥ कीन पिता सुत को उपनीना ॥ १२८ ॥ नेत्रहीन सुत पठन लगाया ॥ वेद पाठ निस सकल पडाया ॥ यथाशक्ति सुत धर्म मे राना ॥ पिता प्रभाव वुद्धि वल जाना ॥ १२९ ॥ दोहा॰ ॥ सदाचार लख पुत्र को ब्रह्मचर्य में वास ॥ पिता वृद्ध अति प्रेम कर आए निज सुत पास ॥ १३० ॥ चौपाई ॥ खर कर पुत्र पिता को चीना ॥ प्रज्ञा नेत्र प्रश्न अस कीना ॥ को अस कर्म तात नहि मम कीना ॥ जिस कर भये नेत्र से हीना ॥ १३१ ॥ यां विध जब सुत वचन उचारा ॥ सुनत पिता दृग चलि जल धारा ॥ दुखित चित चिन्तत ने अस वैना ॥ वोले पिता मौंजे कर नैना ॥ १३२ ॥ सुन सुत जो नर रतन चुरावे ॥ नेत्रहीन तासो नर पावे ॥ अस जब सुनी पिता की वानी ॥ हसकर तब वाले सुत ज्ञानी ॥ १३३ ॥ जन्मान्तर कृत नकरणी जोऊ ॥ अत्र हेतु किम भाषो सोऊ ॥ कहो हेतु कारण यां माहीं ॥ सुनो तात संशय कुछ नाहीं ॥ ॥ १३४ ॥ कार्य माहि कारण गुण जावे ॥ भूमे सकल लोक अस गावे ॥ शुक्ल तन्तु से सित पट होवे ॥ यां विध सभ नरनारी जोवे ॥ १३५ ॥ तिम हम अंध पिता से जाता ॥ नेत्रवान कस करे विधाता ॥ यदि कहो अंधता मम केसे ॥ ९

॥ १ ॥ दंपती॰ स्त्री पुरुष ॥ २ ॥ गोदावरी तट पर पिता कृत पुण्य के मनाप कर क ॥ ३ ॥ नेत्रजल पोंचकर के ॥ ४ ॥ अत्र वर्तमान जन्म में ॥ ५ ॥ दृष्ट मन्य सिद्ध ॥ यां माहीं अंधता विषे ॥ ६ ॥ सित सुपेद ॥ ७ ॥ जो वेजाने है ॥ ॥

॥सुनोतातनुमअंधेजैसे॥१३६॥तत्वज्ञानगोदाहैतात॥ निष्कामकर्मवंजरारव्यात॥उभेसंगमैजोऊस्नाता।सोनर् तानमुक्तिकोपाता।१३७।गोदावरीसुनदीमहाता।जहांवं जरासंगमिलाता।तहांस्नाननिवासजलपाता।मुक्तिहेतु व्यासादिमाना॥१३८॥ दोहा ॥ नदीगारूतमतीजहां संगगोतमीभास॥धरेमागतिसतीर्थकी भृत्यभावकीआ स॥१३९॥ चौपाई॥ पावननदीगोतमीजोऊ॥धारा ब्रह्मज्ञानकीसोऊ॥सकलकर्मकरेसुहानी॥तांमैजल मतीभ्रमज्ञानी॥१४०॥ तातब्रह्मअस्त्रतुमधारा॥ अहो तातनुछमशोकविदारा॥ यांतेगोदामुक्तिदासाचा॥तांको पायमुक्तितुमयाचा॥१४१॥ अहोपितानअज्ञतुमकरनी ॥ करीसकलजोजाननवरनी॥यांविधसंभजनकरन वखाना।सुनवांछाकरकीनोहाना॥१४२॥स्नानअग्निहो त्रादिककर्मा॥सुनइछाकरकीयेसभधर्मा।श्वानशूकरादि कभवमाहीं॥प्रियवालककिमचाहेनाहीं॥१४३॥सुनहि तकौनधर्मतिनकीना।अहोतातनुमअबीनचीना।का यकलेशवृथातुमदीना॥नहिकार्यसिद्धकिंचिनकीना॥ ॥१४४॥दोहा॥ नरसूकरसुखश्वासोकहितरमणाकरत हैंनार॥सुनउत्पतिस्वभावकरहोवेदेखविचार॥ ॥ १४५।चौपाई॥जीवउत्पतिनानभवमाहीं॥पिताकर्मक रहोवतनाहीं।येदिनमानोतातनुमअैसे।विटकृमीकहो जन्मेकैसे॥१४६॥जोनरजहांजन्मकोपावे॥ स्वकृतकर्म

॥१॥ गोदा गोदावरी॥२॥ गोतमी गोदावरी॥३॥ भृत्यभाव दासी भाव॥तांमै गोतमीजलधारामैजलवुद्धिवालापुरुषभ्रमज्ञानीहै॥ भाग॥५॥ श्वानसूकरादिकोंने पुत्रकेनिमित्तकोतपत्रे स्वादि धर्मकीयाहै सोकहो यांतेधर्मादिककेअभावेपिश्वान सूकरादिककापुत्रवहुतदे रव्याहै ताते व्यतिरेक व्यभिचारआया कारणाभावेपिकार्यकासत्व व्यतिरेकव्यभिचारकहावेहै।॥६॥ हेतातजेकरपिताकाअदृष्टसु तउत्पतिमेहेतुमानो तबविटकृमकीउत्पति नहुईचाहीये॥ +

तसहेतुकहावे।जननीजनकतृथानपभारा॥पूर्वकहायाँ
नेव्यभिचारा।१४७।यदिसुधर्मवांछितसंताना।जनेतानन
बऐसेजाना॥ग्राम्यधर्मविनसंततिचारू।किमनकरनकृ
तकरणीभारू॥१४८॥ दोहा॥इष्टकर्मउत्पाद्यमे करेऔरह
षुवखाना॥ सोपाकजन्यतृप्तिहित करेयगादिमहान।१४९
जिसज्ञानहितजानसुनकरतविवेकीत्याग।तजकरआ
त्मज्ञानअससुनवांछातवलाग।१५०। चौपाई। पशुप
क्षिसेजोऊअलावा॥ ऐसानरशरीरजिनपावा॥ यदि।
नआत्मज्योतितिनचीना॥ सोअंधानहिनेत्रविहीना॥
।१५१।उदयुअस्तवर्जितसनरूपा।तजअसआत्मज्योति
अनूपा।उदयअस्तज्योतिजिनचीना॥सोनरतानननेत्रसे।
हीना॥ १५२॥ श्रुतिअवश्यदर्शनजसगावे।जोअसआ
त्मज्योतिविहावे। कलत्रमित्रसुतादिनिहारे।सोअंधाअ
सशास्त्रउचारे॥ १५३॥ पायगौनमीतातुमहाना।जहाँ
वंजरासंगमिलाना। दर्शनयोग्यनदेख्योयाने।तुमअंधा।
संशयनहितताने॥१५४॥ बहुतकथनसेकामनकोऊ। गौ।
नमीनटवसेनरजोऊ। यदिअसक्तहैभोगनमाही॥ सो
अंधाहैसंशयनाहीं॥१५५॥ दोहा॥ अंधपितासेजानहू
म भयेअंधइमजान॥सुनप्रायाहिपिताके होवेतानस
मान ॥१५६॥ चौपाई॥ तथापितटैं परनतुमनवाचा
।कृतसुकृतकरजन्ममममयाचा। ननीतानहममअंधेनाहीं।

१= श्वानसूकरादिकभवमाही इसचौपाईमेव्यतिरेकव्यभिचारकहाहै=।२।=
मैथुनसेविना=।३।= करणी।कर्म।=।४।=। जोपुरुषपितासूतनधर्मकोहे
तुकहेहै=।५।= पाकजन्य भोजनसेजन्य=।६।= अलावा॰ विलक्ष
ण=।७।= उदयअस्तरूपसूर्यादिदृश्यज्योति=।८।= श्रुति॰आत्मा।
वाअरेद्रष्टव्यइत्यादिश्रुति जिसआत्मदर्शनकूंआवश्यकथनकरेहै आत्म
ज्ञानसत्वेमोक्षकासत्वआत्मज्ञानाभावेमोक्षकाअभाव इसप्रकारअन्वयव्य।
तिरेककरकेआत्मसाक्षात्कारकीअवश्यताजाननी=।९।= निहारे॰ कल्या
णसाधनत्वरूपकरकेदेखे=।१०।= तटपर॰ गौनमीतीरमेशरीरमनवा
णीकरकीयाजोधर्मतिसकरतुमनेमेराजन्मप्रार्थनाकीयाथा॥ =॥ =॥

॥ सर्वदृग[1]मम जानमन माहीं ॥ १५७॥ दृग[2]सूर्यादिप्रका
शकभारी॥ भासकचिदात्मकेसहकारी। दृश्यविशेषरू
पादिमाहीं॥ निजसरूपप्रकाशकनाहीं।१५८।नानन मो
गन वस्तु अनेका॥ भासेनाकोदीपकएका॥ नेत्रादिक
सहकारीजैसे॥ सहायकचितिसूर्यादिनेसे।१५९।सूर्या
दिनहिस्वनेप्रकाशै॥ चेतनसत्तापायकरभासै।स्वनेप्रका
श्यदिमानोतान॥ कदापिनहोवैंममसाक्षान।१६०।योग्य
करणकरविषयकाज्ञान। होवन हैनहि अन्यथा भान ॥
विमलनेत्र अनिहोवेजाको। शब्दमैकिमकरेसोताको।
।१६१।वधिरपदमदललनेत्रकहावे। कहोशब्दकोंकैसे।
पावे। तातेसर्ववस्तुदृश्यजान। चेतनज्योतिकरभासैता।
न॥ १६२॥ द्रष्टारूपसभवस्तुकहावे। चिदात्मभिन्नना।
सतापावे। असज्योतिजिसभासेस्पष्टा। सोनहिअंधास
मकाद्रष्टा।१६३। दोहा॰ ॥ जोनानासमअंधना सोनपा
पकरजान। यातेचिदात्मरामकी भईअनुग्रहनान ॥
।१६४।अंधनाकरयातेममदारादिबंधहान। नहींकर्मअ
धिकारमम ननानार्थममभान।१६५।चौपाई॥ वाह्य।
ज्योतिजोऊप्रकाशे॥ असज्योतिममअंतरभासे।वाधि
नदृष्टिनातममजाता। लखौनवाहिरजडसंघाता॥
॥१६६॥जायाविनपुत्रादिकजोऊ॥ मायामात्रलखेहम।
सोऊ।देहादिभिन्नचिदात्मताकी।भईरहाकर्तव्यनवाकी॥

१=।सर्वकाद्रष्टा=।२।= दृगसूर्यादि॰ नेत्रअरसूर्यादिजोभारीप्रकाशकहैसोदृ
श्यविशेषरूपादिककेप्रकाशनमेआत्माकेसहकारीहै॥=।३।=।अपनेसरू
पकाप्रकाशकनहीहै=।४।= चिति चेतनत्र ५।= ममसाक्षाना॰ मेरेभास्य
सूर्यादिनहूयेचहीये यातेसूर्यादिमेरेदृश्यहैइसीकारणसेस्वतेप्रकाश।
नहीहै=।६।= दर्शनक्रियाकेयोग्यजोनेत्रनिसकरकेरूपकाज्ञानहोवेहै।
शब्दकाज्ञानहोवेनही नैसेश्रोत्रादिकरणभीअपने अपनेविषयकूंग्रह
णाकरेहै=।७।= सर्ववस्तुद्रष्टारूपहै द्रष्टाचेतन सेभिन्ननही याते
सर्वकल्पितवस्तुअधिष्ठानसरूपहोवेहै रज्जुसर्पवत्ततथाचश्रुति स
र्वंखल्विदंब्रह्मेति=।८।= ताकी साक्षात्कार =।=।०। ॥

।१६७। निर्जनदेशवासहमकीना। अमलज्योतिचिंतनमैंलीना
। कहांदिवस कहांरजनीनातन॥ व्यापकरूपभासेसाक्षातन॥
।१६८। हमहैंरामपरमसुखधामा॥ नहिंसुनविनसेममभवका
मा। मोहकथाममदूरपलाना॥ कर्मवीजसहवीजजलाना ॥
।१६९। भवजलधिकानामभयदाना॥ कहांगयाकुछकहानजा
ना। नहिममदर्शनयोग्यशशिभानु। नाननहिंदर्शनयोग्यकृ-
शानु॥१७०॥ परनरकोजोवचनविशेषा। नहिममकरेसोका
र्यलेशा। चंद्रादिकाजहांव्यतिरेका। लसेनहांआत्मज्योतिएका
॥ १७१॥ असज्योतिभासेममअंतर॥ चिंतनताकाकरोंनि
रंतर॥ शांतभईमैंनरदशाविशेषा॥ विषयसनेहयातेले-
शा॥ दीपतज्ञानअग्निमैंतात॥ भयोममकर्मपतंगविघा
त॥१७२॥ दोहा॥ सुनोतातअवहितकथा तुमसेकरौं
वखान॥ जिसकरविषयासंगतज पावैंपदनिर्वान।१७३।
॥चौपाई॥ अहंरामअसजोसंवेदन॥ हंतामममताकरतउ
छेदन। अज्ञानरूपदावानलतात। भसमकरतलखप्राणीजा
त।१७४। सुधाजलधिज्ञानभवमाहीं॥ अहोकष्टकिमसेवतना-
हीं। गंगातटवासीनररूपा। खनेजिमतृषशांतिहितकूपा॥
।१७५। तिमआत्मसुखतातकरवारन। लहौंदुखकिमविषय-
सुखकारन। खंडयुतशीतजलस्वादुपान। ज्वरपीडितकोकर
तजिमहान।१७६। तातविषयसुखतिमदुखदाई। तजोभज-
सुखरूपरघुराई। चेतनसुखस्वरूपहैजोऊ। असआत्मनित्य

१= कर्मकावीजजोवासनासोअपनेकारणअज्ञानकेसहितज्ञानरूपअग्निकरभसम
भयाहै=।२।= शशिभानु० याज्ञवलकनेराजाजनककेप्रतिज्योतिस्वरूपकरकेकहेजोसूर्या
दिकसोमेरेकूंदर्शनयोग्यनहीहैतातव्यवहारकासाधनतत्वरूपकरकेमुझकूंआपेक्षितन
हीहैं।=३। कृशानु० अग्नि।=४=।वचनविशेषा·ज्योतिस्वरूपकरकेकह्याजोशब्दविशे
ष=।५।=व्यतिरेका·अभाव=।६।= विषयतेलसेरहितमनरूपवतीशांतभईहै=।७।= हे
तात=।८।विषयासंग·विषयोंमैआसक्तिकूंत्यागकर=।९। हेतातमैरामहूं इसप्रका
रकाअभेदउपासना=।१०।= वनकीअग्नि=।११।=जीवसमूह=।१२।= तृष० तृषा=
।१३। विषयसुखकेवास्तेकलेशकाहेकोंपावतेहौ॥ ॥

माप्नतोहू॥१७७॥ सिशिकु विषयसुखको किमनाना॥
करे तृथा चिंतन दिनराता॥ खंड घृतपयकर जोमूमाना। सो
नचहें कांजीजलपाना॥१७८॥ पश्यनानचिंतकी ढिठना।
ई। यातेपरेक्षन घ्रनकाई॥ जिंह चेतन सत्ताकरभारू॥ क
रतसकलविहारचिंतचारू॥१७९॥ असचेतनचिंतनवि
नत्यागा॥ करे किमतुछ विषयअनुरागा॥ भवकाहेतुना।
नचिंतजाना॥ वारवारमुनिवशिष्ठवखाना॥१८०॥ कर
तनानचिंतचेष्टाजेती। भवकलेशकाकारणनेती। चिंत
कीशांतिविनाकल्याना॥ होवनतहिकरयनतनमहा।
ना॥१८१॥ चिंतशांतिहितयेतनअतिकीजे॥ यातेनान
परमसुखलीजे॥ कामादिषुतजंडमनतवनाना। जिसक
रसाधेनितकार्यजान॥१८२॥ असज्योतिज्ञोस्वनेप्रकाशी
।भासेतवअंतरअविनाशी। अहोनानकरनीसउपेक्षा। वा
हिरज्योतिकरेंअपेक्षा।१८३। दोहा। होवेनाननवमनयदि
याविधशंकालेश॥ पंडितसमयहवालमम करतकथं
उपदेश।१८४। चोपाई॥ सुनोतुमससमाधानअसनानप्रां
करहोवनव संशयघान। परहंसपशुनामभवमाहीं। देह
माहिदेहीमेनाहीं॥१८५॥ देहनिवासीचिदात्मअछेदा॥
कहोनाननोमेंकिमभेदा॥ विवेकाविवेकधर्मसुजोऊ। प
रमहंसपशुभेदकसोऊ। नांनेमनपरिणामसरूपा। चेत
नभास्यनचेतनरूपा।१८६। दोहा। ब्रह्मादिसकलभूतमे।
चेतनइकरसजान। ऊंचनीचनागुणनमेभ्रकरचेतनभान॥

।१।= नाना० हेनानहेपिना=।२।= खंडघृतकरकेमिश्रितजोपय
पयदूधकाविकारक्षीरादिकतिसकर=।३।=जिसकर०जिसचेतनक
रके=।४।= नास०निसचेतनज्योतिकीउपेक्षाकरके।=।५।= परहंस०
परमहंसअरपशुसंज्ञा=।६।= देहमेंहैदेहीआत्मामेनहीहै।=।
।६।= विवेकअरअविवेकरूपअंतस्करणकेधर्मपरमहंसअरपशु
काभेदकहैं=।७।= विवेकअविवेकमनकापरिणामहै=॥ ८॥=
गुणनमे० सत्वादिगुणोनिष्ठहै आत्मानिष्ठनहीहै=॥=

।१८७। चौपाई ॥ गमनागमनभिन्नताजोऊ ॥ लिंगगत हैनचितिमैकोऊ ॥ जिमघटीयंत्र घटीकरुछन्ना ॥ भासिनतानभ्रमननभभिन्ना ॥ १८८ ॥ तथादेह्यादिगत कार्यजात ॥ भासेभ्रमकरआत्मगततात ॥ काममोहमलयुतमननोहू ॥ शोधनकरोतातुमसोऊ ॥ १८९ ।विनाचितशुद्धिचिदात्मरामा ॥ होवतभाततनासुखधामा ॥ चितनिरोधकरतातविचारो ॥ आत्मादेहादिकसेन्यारो ॥ १९० ॥ शोकमोहादिधर्मकरलेपा। नहिसाक्षीकोयतोअलेपा ॥ नीलपीतादिरूपविशेषा ॥ जिमभानुमैभासेनलेशा ॥ १९१ ॥ दोहा ॥ ॥ शोकमोहमनकेधर्म जरामृत्युतनुजान ॥ क्षुधापिपासाप्राणगत तूंहैशुद्धमहान ॥ १९२ ॥ जिमपरधनकेतिम आत्मादूषितजान ॥ १९३ ॥ चौपाई ॥ भासमानदेहांतरजोई ॥ अन्यतेजप्रकाशकसोई। सोअविनाशीनेत्रमहाना। नेत्रमाननरतांकरजाना।१९४।पूर्वकृतये दुरितसंघाना। तिसकरअंधपुत्रममजाना॥ असभ्रांतिकरतातनिवारन॥ विमलनेत्रचेतनकरधारन ॥ १९५ ॥ चिदात्मामुख्यनेत्रहैतात ॥ जोप्रकाशेसकलदृश्यजात ॥ चितसंगातकरभासेमलना ॥ नजोतातताँतेचितकलना ॥ १९६ ॥ असमुनसुनवानीसुखदाई ॥ ॥

१= गमनागमन॰ लोकपरलोकमैजोगमनआगमनहै अरभिन्नताजो परस्परजीवोकाभेदहै सोलिंगशरीरनिष्ठहै चेतनमैनहीं = ।२। = जिमघटीयंत्र॰ घटीयंत्र पंजावमैहरटकहतेहैं तिसमैवांधीजो घटीसुद्रघटिकाहै तिनघटिकाके उदरगत जोनभआकाशहै सोआकाश जैसे घटिकाके अधः ऊर्धगमनकरनेकरगमनकर्ताप्रतीतहोवेहै अरघटिकाभेदकरके आकाशकाभेद प्रतीतहोवेहै तथा गमनागमनादि आत्मामैप्रतीतहोवेहै = ३ ।= चितकालना चितकाफुरना = । =

बोलेपुनापिताद्विजराई॥ ननुकरणप्राणादिसंघात॥ कहोआत्मातांमैकोतात॥१९७॥ यांमैअन्यनरकिमवाआन।जोहैसोमोहिकरोवखान॥ यांविधसुनतपिताकीवानी॥ चिन्तनतैबोलेसुनज्ञानी॥१९८॥जिसकरनरसभरूपनिहारे॥ सुनततशब्दजिसकरनरसारे॥ जिसकरजानतगंधसुहावन।लहेस्पर्शयांकरनरपावन॥१९९॥ जाननतरजिसकररसजाना॥ सोआत्मानिश्चयकरताना॥ नाननयांमेक्षुधापिपासा॥शोकमोहकाजहांनवासा॥ २००॥ जरामरणनहीयांमैजानु॥ सोआत्मतातलखोचितधानु॥ असआत्मताततोहिसुनावा॥ उक्तियुक्तिप्रमाणवतावा॥२०१॥ यांविधकथनपुत्रजबकीना॥भयोब्रह्मशर्मादुखहीना॥संगमनीरआत्ममनलाई।कृशांगिमुक्तभयोद्विजराई॥ ॥२०२॥ दोहा॥अंधकथाबरतोहिको चिन्तनतैकरीगान॥ चिंतनकरएकाग्रचित।विषयाशाकरहान॥२०३॥कविरुवाच॥ यांविधसुनएकाग्रचित चिन्तनतियतिउपदेश॥निश्चयकरचिद्रूपतात्यागेनिखिलकलेश।२०४।भासैंयांकेभासकर भांसकतेजअशेष॥ धारेसोश्रीकृष्णउर द्वसरकवलविशेष॥२०५॥ ॥ इतिश्रीअद्वैतामृतभाषाप्रबंधेविवेकाश्रमचिन्तनतिसंवादेचिदात्मरूपतावरननंनामद्वितीयःकवलः॥२॥ ॥

---

१ = देहादिकमैकोईएकआत्माहै अथवादेहादिकसेन्याराकोईआत्माहै सो। कहो = ।२। = जिसकर॰जिसआत्माकेप्रकाशकरकेपुरुषरूपादिसकलविषयकूंजानेहै सोआत्माहै॥ तथाचकठश्रुतिः॥ येनरूपंरसंगंधंशब्दान्स्पर्शांश्च मैथुनान।एतेनैवविजानाति इति = ।३। = जिसकेप्रकाशकर॥ = ॥ = ।४। = भासकसूर्यादि = ॥ तथाचमुंडकश्रुतिः तस्यभासासर्वमिदंविभाति इति॥ इतिद्वितीयकवलः॥२॥ ॥

॥ नमः शिवाय ॥ ॥ अथतृतीयकवलारंभः ॥ ॥
कविरुवाच ॥ दोहा ॥ योगींद्रश्रीचंद्रके पदपंकज
उरधार। भाषानीसरकवलकी करौंस्वमतिअनुसार॥
॥ १ ॥ यांविधदूसरकवलकर पदार्थशोधनद्वार। क
ही आत्मचिदरूपता उक्तियुक्ति अनुसार॥ २॥ अथ।
अबतीसरकवलमे आत्मानंदविचार॥ वेदयुक्तिप्रमा
णकरयतिवरकरनउचार॥ ३॥ विवेकाश्रमयोगीज।
बयांविधबोधनकीन॥ निश्चयकरचिदरूपतापुनबोली
अतिदीन॥ ४॥ चितवृतिरुवाच॥ चौपाई ॥ वेदयुक्ति
मानकरभ्राना॥ उ. कचिदात्मज्ञानममजाना॥ आत्मा
नंदरूपताजोऊ॥ तौमैमानकहानहिकोऊ॥ ५॥ मे
यसिद्धिविनमाननहोऊ। यांविधकथनकरनसभको
ऊ॥ तांतेवेदयुक्तिअबमाना॥ करोमुनीश्वरमोहिव।
खाना॥ ६ ॥ कविरुवाच ॥ असचितवृतिकावचनम
हाना॥ विवेकाश्रमसुनअतिहर्षाना॥ भ्रमदर्शनभे।
दकअसवानी॥ यतिवरबोलेपरमज्ञानी॥ ७॥ विवेका
श्रमउवाच॥ कृशांगिफलवांछानवजागी॥ नहिहो।
वैंसाधनअनुरागी। मलनचितावियनकरभारू ॥
पूछेकथंआत्मसुखचारू ॥८॥ विषयजन्यक्षणिक।
सुखजोऊ॥ ताकर आवृतहैमननोहू॥ यतिविरक्त।
वांछितसुखजोऊ॥ किमजानेभद्रेतुमसोऊ॥ ९ ॥
॥ दोहा ॥ नरकाअंतस्करणहै ॥ ॥

।१।= उक्ति॰ श्रुतिप्रमाण=। २।= वेद॰ श्रुतिप्रमाण=। ३।= हेभ्राना=।
॥४॥ मेय॰ प्रमेयवस्तुकीसिद्धि= ५।= भ्रमदर्शन॰ विपरीतज्ञानके।
दूरकरनेवालीवानी=॥ ६ ॥= आवृत॰ आछादित=॥ ७॥= विरक्त।
सन्यासीयोंकोंवांछितजोआत्मानंदसो कैसेजाने =॥= ॥

आम्रवृक्षफलसमान॥अपक्वजनकवहुदोषकाकरनतोष
पक्वजान।१०। चौपाई।दोषयुक्तइंद्रियनरजोऊ॥इष्टन।
मविषयलखिकिमसोऊ।पित्तकरहतरसनाहैजाको॥गुड
गुनरसहैदुर्लभताको।११।वलवननिजसजानीकोज्ञान॥
ताकरजनितहै अपरअभान।कामलकरजिमपीतनताभान
॥ होवेनशास्त्रश्रुकलनाज्ञान।१२।दोहा।विषयानंदज्ञानक
रनिमतनवभयोअभान।कृशागिआत्मानंदका होवकिमस्फु।
टतिभान।१३।विषयसुखलवचुंमनमे लंपटेश्रुनिसमा
न॥ होइआत्मसुखजलधिनव कैसेदृष्टिभान॥ १४ ॥
॥ चौपाई ॥ भूमिपूरितहेमकीखारी ॥ क्षेत्रज्ञानशून्य।
जिमप्रानी॥ऊपरताकेवसेनिरंतर॥ विनावोधनहिपा।
वेअंतर॥१५॥ तथाजोप्यहंप्रजाकहावे॥ ब्रह्मरूपतानि
सदिनपावे॥ प्रत्यकरूपनताकोजाने॥ महामोहकरयों
नेछाने॥ १६॥ यांविधश्रुतिशिखाश्रयजोऊ॥ वार्तिक
कारवाक्ययहदोऊ॥ मदुक्तअर्थकाकरनवखान॥
तत्वंगिअसनिश्चयकरजान॥१७॥ महामोहविलास।
उत्पन्ना।विषयरूपीमेघ करछन्ना॥ प्रत्यगानंदचंद्रम।
हाना।निकटस्थअपिहोवेनभाना।१८।त्रिलोकराज्यल
ब्धनरजोऊ।नहिभिक्षाचाहैजिमसोऊ। यांविधपरानंद
जिनपाई॥ चहैनतुछानंददुखदाई॥ १९॥ ॥

पुष्टि
१=।जैसेकचाआम्रफलरोगकाजनकहै अरपकाफलतुष्टिकाहेतुहै।तेसेअ।
शुद्धचित्तजन्ममरणसंसारकाहेतुहै शुद्धचित्तज्ञानद्वारामोक्षकाहेतुहै।=२=
विषयवासनारूपदोषकरयुक्तहै अंतस्करणजिसका=।३।= इष्टनम०अ
धिकारीपुरुषकोइष्टवस्तुवैराग्यहै इष्टतरआत्मज्ञानहै इष्टतमस्वरू।
पसुखहै=।४।= निजकरकेयुक्तरूपतिसकासजातीरूपत्वधर्मकरकेपीत
रूप=।५।=स्वर्णराशी=।६।=स्वर्णस्थानज्ञान=।७।=अंतरभेद=।८।=श्रुतिशि
खावेदांतासोहैआश्रयमूलजिसका।भूमिपूरतइत्यादिदोचौपाईवार्तिकवा।
क्यहै।=।९। महामोहअज्ञानतिसकाविलासभ्रमज्ञानतिससेउत्पन्नभयाविषय।
रूपमेघसर्वजगतकोभ्रमकाविषयहैतिसेअथवामहामोहकाविलासईषणारू
पतृष्णाविशेषतिससेजन्यविपदादिप्रपंचसोईमेघसदृशहै=।। ९ ॥

।सोरठा।उपमामिष[1]इमजान वार्तिककृत[2]कोवाक्यह।दुरा[3]
प्तिकरतवखान परमानंदस्वरूपको।२०।चौपाई।यांविधपरा
नंदहैजोऊ।पावैंकष्टचितदृढतेसोऊ।विषयजन्यसुखमैंअनुरा
गा।चितदृढतेजबकरैंसुत्यागा।सम्यकश्रवणतातबपावैं।परानं
दमैजाइसमावैं।२१।रंभादिकजोहैसुरनारी।तौकेभोगजनित
सुखभारी।स्वर्गमानश्रवणकरसोऊ।चितदृढतेनरपावेनकोऊ
।२२।ज्योतिष्टोमादिककाकारी।स्वर्गमानश्रवणविनभारी।सु
रपुरगतसुखपाविनसोऊ।मानसुननकाकामनकोऊ।२३।
दोहा।तिमनवज्ञवचितशुधीकर विद्वान्मपरताहोइ॥वरा
रोहैतवहिलखैपरानंदहैजोइ।२४।तौतेउद्यमविफलनव
वक्ताकेश्रमहेत।आत्मानंदप्रमाणजो पूछैयुक्तिसमेत।२५।
चौपाई।यद्यपिकथनयोग्यतूंनाहीं।प्रसक्तचितयातेभवमा
हीं।तथापिभगतीहैंतूंज्येष्टा।शास्त्रमार्गमैहैतवनेष्टा।२६।
उपदेशयोग्यतातेतोहिजाना।करौंसुश्रुसंशयतवहाना।आत्मा
नंदमैश्रुतिप्रमान।कहौंप्रथमपुनायुक्तिमहान।२७।करअन्वय
व्यतिरेकमहाना।तपकरभृगुचिदात्मसुखजाना।श्रुतिधर
सुनभृगुश्रुतिगावै।आनंदरूपआत्मठहरावै॥२८।विज्ञानानं
दरूपहैब्रह्म।यांविधश्रुतिमेटैसभभ्रम।सुनौश्रौतआनंदवि
चारा।करौंदूरतवसंशयभारा।२९।योवनयुक्तसतमार्गचारी
।श्रुतिअधीतअतिभोजनकारी॥रोगरहितअतीवबलवा
ना।वितयुतसकलधरापतिदाना।३०।यांविधयदिनरहोव
महाना॥मानुषसुखतांकोइकमाना॥ ~ ~ ॥

।१।=उपमामिष०दृष्टांतव्याजकरकै।२।=महामोहइत्यादिचौपाईदोमैवार्तिककारसुरे
श्वराचार्यवाक्यकाअर्थहै।३।=दुराप्ति०दुर्लभता।४।=हेसुभ्रु।५।इंद्रियमनकीएका
ग्रतारूपतपकर।=तथाचतैत्तिरेयश्रुतिःसतपोऽतप्यतसतपस्तप्त्वाआनंदोब्रह्मेतिव्य
जानात्।=६।विज्ञानमानंदंब्रह्मेतिश्रुतिः।७।=श्रौत०श्रुतिप्रतिपाद्यआनंदवि
चारसुन।=तथाचतैत्तिरेयश्रुतिः।सैषानंदस्यमीमांसाभवति युवास्यात्साधु
युवाध्यापकःआशिष्ठोदृढिष्ठोबलिष्ठःतस्येयंपृथिवीवित्तेनपूर्णास्यात्सए
कोमानुषआनंदः॥आशिष्ठः।अतिशयेनअशिताभोजनशक्तिमान्।दृढिष्ठः
अतिशयेनदृढःरोगादिकसेरहित।यहश्रुतिपदकाअर्थहै॥ ॥

कर्मकरगंधर्वनायोंको। नरसेशतगुणाहैसुखतं। को।३१। येद्विजाति
गंधर्वकहावें। तनोअधिकशतगुणसुखपावें। गंधर्वसुखशतगुणि
तमहाना। पित्रसुखश्रुतिकीयोवखाना।३२। पितृसुखसेशतगुणा
महाना। अजानजानदेवसुखमाना। स्मार्तकर्मकरसुरतनुधारी। श
तगुणसुखतांकोहैभारी।३३। श्रौतकर्मकरसुरताजाको। ततोशत।
गुणअधिकसुखतांको। तांतेशतगुणसुखमहाना। सुरपतिका
सुखश्रुतिवखाना।३४। सुरपतिसुखशतगुणितमहाना। देवगुरु
सुखकीयोवखाना। तांतेशतगुणसुखअधिकाना। होवतप्रजाप
तिकोभाना।३५। तांतेसुखशतगुणितमहाना। ब्रह्माकोहोवतहैभा
ना। कामहीननरश्रोत्रियमहान। तांकोहोवतउक्तसुखभान।३६।
विषयीभावनिर्मुक्ता। आत्मसुखश्रुतियांविधउक्ता। भद्रीयांविधक
थाविशेषा। तैतरेयमेजानअशेषा।३७। दोहा। उत्तरोत्तरसुखश।
तगुणयांविधकरसुविधान। अनुतमआत्मानंदकोश्रुतिइमकी
नवखान।३८। चौपाई। ब्रह्मानंदविनभयनंपावे। यांविधश्रुति
अंतमैगावे। परमानंदयहयांकोजान। यांविधपुनाश्रुतिकर
तवखान।३९ भवमेंअन्यजीवहैजेते। ब्रह्मानंदलवभोगेतेते॥
अपरायांविधश्रुतिमहाना। आत्मापरमानंदवखाना॥ ४०॥९

१=। अजाननामस्वर्गलोककाहैतिसमेजानदेव=।२।=सुरपतिइंद्र=।३।=देवगुरु
बृहस्पति=।४।=प्रजापतिविराट=।५।=ब्रह्माहिरण्यगर्भ=।६।=पापरहितविद्वाननर।७।
= तैतरेयउपनिषदमैसंपूर्णजान। तथाचतैतरेयश्रुतिः तेयेशतंमानुषाःआनं
दाःसएकोमनुष्यगंधर्वाणामानंदःश्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंमनुष्यगंध
र्वाणामानंदाःसएकोदेवगंधर्वाणामानंदःश्रोत्रियस्यचाकामहतस्य। तेयेशतंदेवगंध
र्वाणामानंदाःसएकःपितृणांचिरलोकलोकानामानंदःश्रोत्रियस्य०। तेयेशतंपितृणां
चिरलोकलोकानामानंदाःसएकआजानजानांदेवानामानंदःश्रोत्रियस्य०। तेयेशतमा
जानजानांदेवानामानंदाःसएकःकर्मदेवानामानंदः येकर्मणादेवानपियंतिश्रोत्रि।
यस्य०। तेयेशतंकर्मदेवानामानंदाःसएकोदेवानामानंदःश्रोत्रि०। तेयेशतंदेवानामा
नंदाःसएकइंद्रस्यानंदःश्रो०। तेयेशतमिंद्रस्यानंदाःसएकोबृहस्पतेरानंद श्रोत्रिय
स्य०ब्रह्मापर्यंतजाननाः=।८।=आनंदंब्रह्मणोविद्वाननबिभेतिकुतश्चिनः।९।एषो
स्यपरमानंदः।=।अस्य सुप्तपुरुषकास्वरूपकाअनुभवरूपआनंदपरमानंदहैविष
यसंबंधजन्यसुखसेविलक्षणाहै।=।१०।एतस्यैवानंदस्यान्यानिभूतानिमात्रामुपजी

यदि यह आनंद रूप न होऊ। करै प्राणादि क्रिया न बकोऊ।
यों विध अपरा श्रुति सुन काने। चिदात्मानंद स्वरूप बखाने।४१। चि
नतृने यों विध श्रुति नाना। ब्रह्मानंद रूप मैं माना। उक्त श्रुति प्रमाण
ना माहीं। चिनतृ ने संशय कोउ नाहीं।४२। ये त्रिवर्णक पूर्व पर जाना
।शिष्ट व शिष्टादि श्रुति ज्ञाना। ते श्रुति वांछित अर्थ उचारे। सो न ज
कल्पित हम न हि धारे।४३। सोरठा। सदानंद विज्ञान आत्म अद्वय
अनंत मैं। तात्पर्य श्रुति जान षटविध लिंग प्रमाण कर।४४। उप
क्रम उपसंहार अभ्यास अपूर्व फल तना। अर्थवाद उर धार उप-
पत्ति यों विध लिंग षट।४५। चौपाई। सदेव सौम्य इति श्रुति महा-
ने। सृष्टि पूर्व सत वस्तु बखाने। यों विध है प्रतिपादन जोऊ। उपक्र
म लख चिनतृ ने सोऊ।४६। प्रतीयमान जगत अवसाने। सदात्म-
रूप जो श्रुति बखाने। वाले लख अस उपसंहारा। मिलरो उ लिंग
एक उचारा।४७। उक्त वस्तु का जो अंतराले। वारंवार आपादन वा-
ले। तत्त्वमसी ति यथा नव वारा। अस अभ्यास स्वरूप उचारा॥
।४८। आत्मा श्रुति प्रमाण कर गम्य। प्रमाणांतर कर सदा अग
म्य। अपूर्व ताइ मजान महाने। औपनिषद मिति श्रुति बखा-
ने।४९। प्रारब्ध निवृत्ति यावत नाहीं। तावत काल चिर मुक्ति मा
हीं। जब होवे प्रारब्ध की हानी। ब्रह्म रूपत बपावे ज्ञानी ॥५०॥

=।१।= को ह्येवान्यात्कः प्राण्यात् यदेष आकाश आनंदो न स्यात्। इस श्रुति के पदो
का अर्थ॰ यत् यदि। एष सर्व साक्षी आकाशः परमात्मा। अन्यात् जीवन क्रिया को
कौन करे। प्राण्यात् निश्वासन क्रिया॰ =२= शिष्ट॰ सर्वोत्तम। त्रिवर्णक वि-
शिष्टादि ब्राह्म। जनकादि क्षत्रया। समाधि प्रभृति वैश्य है =३= छांदोग्य के ष
ष्ठ अध्याय मैं॰ सदेव सौम्येदमग्र आसीत्। हे महाने। सृष्टि पूर्व उत्पत्ति से पूर्व =
।४। ऐतदात्म्यमिदं सर्वमिति श्रुति =५= उक्त॰ प्रकरण प्रतिपाद्य वस्तु का अंतराले
मध्य मैं =६= औपनिषदमिति श्रुति॰ तंत्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामीति श्रुति। औप
निषदं उपनिषद प्रमाणगम्यं। त्वा तामनेरे कूं। =७= हानी निवृत्ति। तथा च श्रु-
तिः तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्ये अथ संपत्स्ये। तस्य ति स विद्वान को। यावन्न
विमोक्ष्ये॰ जितना काल प्रारब्ध नाश नहीं भया। अथ॰ प्रारब्ध नाश से अनंतर।
॥ संपत्स्ये॰ मोक्ष को प्राप्त होवेगा इति श्रुति अर्थः ॥=॥ ॥
॥ ॥

यौं विधं कोप्रतिपादन जोऊ। चिनवृनैनफलजाननुमसोऊ। कि
मननवस्तु प्रश्नश्रुतमकीना। श्रुनहोवेयांकरश्रुनहीना। ५१। अ
सप्रशंसावाचाजोऊ। अर्थवादजानोनुमसोऊ। वाचारंभण
मृत्तिकविकारा। मृत्तिकाएकसत्य उरधारा। ५२। याविधमृद
जन्यकार्यसारे। मृदसरूपजिमश्रुनिउचारे। ब्रह्मविरचित
दृश्यनिमवाले। ब्रह्मसरूपननतोनिराले। यौंविधकोप्रतिपा
दनजोऊ। उपपत्तिलिंगचित्तनूनैसोऊ। ५३। दोहा। यौंविधषट
विधलिंगकर अद्वैतार्थमहान। चितलगायसुनचिनहृनैश्रुति
समकरनवखान। ५४। चौपाई। औपानरस्पनर्ककरवादी। करैअ
त्रविवादप्रमादी। श्रुतिस्वार्थसंसर्गसरूपा। कल्पैजोनिजमति
अनुरूपा। ५५। विशिष्ट अर्थकल्पैवाजोऊ। तेनरनहिवानरल
खसोऊ। रासभारोहणादिकदंडा। नृपनांकोपुनकरैप्रचंडा
। ५६। अद्वयचिदानंदश्रुनिवेद्य। कल्पनकरैजोनामैभेद॥
तिनमुखदर्शनयोग्यनवाले। पुरसेनांकोकरैनिराले। ५७॥
भूमैहैवरवंध्यानारी। व्याघ्रजननीवरिष्टउचारी। ऐसीनहो
वेसुभ्रुमाना। यत्नोभेदवादीनरजाना। ५८। भेदकथनमद्य।
करउन्मना। विहिताविहितकृनवर्जितचिना। कैसेसोनर
द्विजकहावे। यत्नोभेदमदरामनलावे॥ ५९॥ ९ ॥

१८। ननवस्तु॰ किमसोवस्तुनैनेपूछ्याहै जिसवस्तुकेशास्त्रद्वाराश्रवणकरने
२ करअश्रुनवस्तुभीश्रुनहोवेहै॥२॥ वाचा॰ श्रुतिवचना। तथाचननश्रुतिः। उनन
मादेशमप्राक्ष्यो येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातंइति। जिस।
वस्तुकेशास्त्रद्वाराश्रवणकरनेकरअश्रुनभीश्रवणकाविषयहोवेहै जिसके
नर्ककरमननकीयेसेअमतभीमतहोवेहै अविज्ञातवस्तुभीविज्ञातहोवेहै त
मादेशशास्त्रआचार्यकेवचनकरजाननेयोग्यवस्तुनैनेपूछीहैक्याइतिश्रुति
अर्थः। ॥३॥ श्रुतिउचारे॰॥ वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येव
सत्यमितिश्रुतिः॥ ४॥ अविचारित॥ ।५।॥ जीवब्रह्मअभेदअर्थमैं॥
॥६॥॥ श्रुतिस्वार्थ॰ तत्त्वमस्यादिमहावाक्यकाजो अभेदअर्थहै तिसको
संसर्गकल्पनाकरनेहैं तत्त्वंपदार्थोंकापरस्परतात्त्वकस्वस्वामीभावादिसंबं
धकूंहीवाक्यकाअर्थकल्पनाकरैहै। अथवापरस्परव्यावृत्तिकीआपेक्षासेरहित
संसृष्टपदार्थोंकाप्राधान्यरूपकरकेविशिष्टअर्थकीकल्पनाकरैहैनीलविशि।
ष्टउत्पलहै दंडविशिष्टपुरुष इत्यादिवाक्यार्थवत्॥ ॥ ॥

जीवब्रह्मअभेदमेदोष। अरोपणाकरजोपावेतोष। सोनरभद्रे
द्विजातिनाहीं। त्रिजातिलखनाकोमनमाहीं। ६०। दोहा। यदिनहो
वेत्रिजातिसो तवभद्रेअसजानु। श्रौतअर्थविपरीत नवकवी।
नकरैंवखान। ६१। सोरठा। तीनदोषविनजानअपौरुषेयाश्रु
तिवचा। सुभुकहानवमानु चिदात्मसुखरूपत्वमे। ६२। यौविध
श्रुतिसुमानु कथितेअपिवालेयदा। चाहेयुक्तिमहाननांकोसु।
नअबशोभनु। ६३। चौपाई। सकलजंतुआत्मप्रियमाने। यांमे
नहिसंदेहमहाने। आत्मगतप्रियताकिमरूपा। यांहितनवहे
प्रश्नअनूपा। ६४। सुखउत्पतिहेतुत्वमहाने। विषयकरणसं।
मप्रियतामाने। सुखकीआश्रयताहैजोऊ। किमवाप्रियता
मानेसोऊ। ६५। सुखप्रकाशहेतुताजोई।। किमवाप्रियता
मानेसोई॥ अथवाइष्टतमकोऊ आन। प्रियरूपताकिम
करेवखान। ६६। सुखउत्पतिकारणताजोऊ॥ प्रियत्वप
दार्थवनेसोऊ। यांतेइंद्रियमेव्यभिचारा॥ आवतभद्रेदू
षणभारा॥ ६७॥ दोहा। यदिकरणप्रियरूपतवइष्टात
वअसजान॥ आत्माहिप्रियरूपअस वचनविरोधम।
हान॥ ६८॥ शेषनहोवेआनका अभिवांछितहैजोइ॥
असप्रियताकोविदकहैं तथानइंद्रियहोइ॥ ६९॥ ॥

१=। त्रिजाति॰ वर्णसंकरादिनीचजातितिनकोंजान=।२।= श्रौतअर्थ॰श्रुतिप्र।
तिपाद्यअभेदअर्थ=।३।=तीनदोषविन॰भ्रमप्रमादप्रलिप्सारूपतीनदोषसेरहि
त=।४।= ईश्वरकानिश्वासहोणेसेपुरुषप्रणीतनहीहै=।५।= हेवाले॰ ६= हेशोभने।७।
=।हेमहानेआत्माकेप्रियत्वमेकिसीकोसंदेहनहीहै=।८।=प्रियता॰श्रुतिसिद्धआनंदरू
पताकिमरूपाहैसोकहो=।९।=हेमहानेजेसविषयइंद्रियमेसुखकीउत्पतिकाहेतुत्व
रूपप्रियत्वहेतेसेआत्मामेप्रियत्वमानेहेक्या=।१०। सुखउत्पतिहेतुत्वरूपलक्षणका।
इंद्रियोंमेसत्वहोणेसेअलक्ष्यमेलक्षणकीप्रवृत्तिरूपदोषआवे है=।११।= यदिजेक
रइंद्रियभीप्रियरूपताकरकेतेरेकोंइष्टहै तवआत्माहिप्रियरूपहै इसवाक्य।
काविरोधरूपदोषआवेगा=।१२=। जोकिसीकाशेषनहोवेअरसर्वेकूं
अभिलाषाकाविषयहोवे ऐसीप्रियतापंडितजनमानेहै सोइंद्रियों
मैनहीआवेहै=।। ॥

॥ चौपाई ॥ विषयजन्यजोउसुखमैंहाने। सुखत्वरूप।
जोकोनरमाने॥ असप्रियत्ताअपिनहि सुहावे। उक्तल।
क्षणानयाँनेआवे॥ ७०॥ अनुकूलत्वेघजोसुखविशेष।
असप्रियत्तामैनजोनिवेश॥ आत्माशेषनाहैयामाहीं॥
अन्यशेषचिदात्मसुखनाहीं। ७१। कुलजनअनुकूलत्व।
करजाना। अन्यशेषत्वनयामैमाना॥ यौंविधसुखनैया।
यिकमाने। सोआत्मामैंवनिनमहाने। ७२। दोहा। सुखउ।
त्पत्तिहेतुत्वको यौंविधकरसुनिरास। सुखआश्रयत्व प
क्षकीनजभद्रेअबआस। ७३। चौपाई॥ कहोभद्रेस्वम
तिअनुरूपा। आत्मगनआश्रयत्वकिमरूपा सुखउपा
दाननायदिगावैं॥ नवआत्मपरिणामिनापावे॥ ७४॥
जहांकरेपरिणामिनावास। नहीँअनित्यनाकरेनिवा।
स। प्रियासखीदोनोसहचारी॥ रहैंनपलभरदोनोन्यारी॥
। ७५। यत्रअनित्यनाकरेप्रवेशा। आवैनहांसुदोषअशेशा॥
यौंविधभयोअमुक्तिप्रसंगा। यौंनेभयोनिजआत्मभंगा। ७६।
श्रवणादिकसाधनहैजेते। भयेव्यर्थभद्रेअबनेते। भयोव्य
र्थगुरुशास्त्रसमाजा। भयोव्यर्थभद्रेपरिव्राजा। ७७। कोसु
खभोगेस्वर्गादिमहाना। यागादिकमव्यर्थसभजाना। यौंविध
वालेदूषणनाना॥ उक्तपक्षमेहोवनभाना॥ ७८॥ ॥

।=।१।=। हेमहाने।=।२।=। नहि सुहावे॰ नहींवनेहै=। ३। = उक्त।
लक्षण॰ शेषनहोवेआनका अभिवांछितहैजोइ यहपूर्वउक्तलक्षण॥
=।४।=अनुकूलरूपताकरकेजाननेयोग्यजोसुखविशेषहै।=।५।=। नि।
वेश॰ ऐसीप्रियत्तामैभीहठकोत्यागो=।६।= वनिन॰ आत्मामेसोलक्षणव
नेहैं हेमहाने=।७।= सुखकाआश्रयत्वरूपप्रियत्वहैयहदूसरेपक्षकी।
=।८।= यत्र॰ जिसस्थानमै।=।९।=। आत्मभंगा॰ आत्माकानाश॰=।१०।= हेभ।
द्रेपरिव्राजासंन्यासभीव्यर्थभया=।११।= उक्तपक्ष॰ सुखआश्रयत्वप
क्षमेभानप्रतीतहोवैहै।=।०।=।

बदर[1] आश्रय जिम कुंड महान ॥ तिम आश्रय त्वयदि[2] करे बखान ॥ नब नव मूत मै असस्तु नवाले । उपादानता[3] देख निराले ॥ ७९ ॥ सुख कारण त्व चिदात्म माहीं ॥ उक्त दोष[4] वश मानें नाहीं ॥ हुय कोटी अस दूर पलाना । सुननीसर अब करो बखाना ॥ ८० ॥ दोहा ॥ सुख ज्ञान हेतुत्व[5] की चिनहृ नेन जो आस ॥ उक्त दोष[6] प्रभाव कर याने भयो निरास ॥ ८१ ॥ चौपाई ॥ इष्टनम प्रियरूपता रूप ॥ तुर्य पक्ष यदि धरे अनूप ॥ नब सुखता प्रियता है जोऊ ॥ आत्मनि षमानो तुम दोऊ ॥ ८२ ॥ चिनेहृने अस पक्ष प्रमानी ॥ कस वादी की करन न हानी ॥ इम आत्मानंद ता मै मान ॥ संक्षेप कर युक्ति करी विधान[7] ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ उक्त चिदात्मानंद मै । चिनहृ ने चिनलगाय[8] ॥ विषयजन्य सुख को न जो मन अव वहु न कहाय । ८४ । कविरुवाच ॥ विवेकाश्रम चिनहृ निको अस जव बोधन कीन ॥ नब चेतन आनंद मै छिन भर भई विलीन ॥ ८५ ॥ आत्मानंद विचार यह कवल नीसरो पाय[9] ॥ उर अंगण[10] रिंगण करे विकसित मुख यदुराय[11] ॥ ८६ ॥ इति श्री अर्हन्नामृत भाषा प्रबंधे विवेकाश्रम चिनहृति संवादे आत्मानंदरूपता वरननं नाम तृतीयः कवलः ॥ ३ ॥ ॥

।=१।= बदरीफल का आश्रय जैसे कुंड है तिसी प्रकार सुखआश्रयतारूप प्रियता जे कर कथन करो =।२।= उपादानता आत्मा से भिन किसी मेरा । खो =। ३।= सुख की उपादान कारणता =। उक्त दोष० परिणामिता अनित्यतादि दोष के वश से =। ४।= सुख ज्ञान हेतु त्व रूपनीसरे पक्ष की =।५।= उक्तदोष० परिणामिता अनित्यतादि दोष =। ६ ।= विधान० कथन =।७। ।= चिनलगाय० चिनको लगावो ।=। ८ ।=। पाय० स्वीकार करके =। ९ ।= उर अंगण० मेरे अंतस्करण रूप अंगण मे रिंगण करें० क्रीडा करें ।१०। यदुराय० श्रीकृष्ण ॥ इति श्री तृतीय कवल टिप्पणी समाप्ता: ३ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः। अथचतुर्थकवलारंभः। कविरुवाच॥

।दोहा। श्रीऋभुपदद्वंद्वको करोंननिधरध्यान। यांमैभासैमृषाभव रज्जुमैफणीसमान।१। करुणानिधिश्रीगुरुकेपदपंकजउरधार। तुर्यकवलभाषाकरौं भवमिथ्यात्वविचार।२।

॥सोरठा॥ नआत्मसुखकीचाहि उपजेजगतनमृषात्वबिन॥ तांतेचतुर्थमाहि॥ कहतजगतमिथ्यात्वकों॥३॥ चौपाई। योगींद्रविधुवचनप्रभाकर। विकसितचित्तवृत्तिप्रीतिकर॥ निजभ्राताप्रतिवचनरसाला। कोकिलसमबोलीपुनबाला॥४॥ चित्तवृत्तिरुवाच॥ आत्मसुखरूपनामेमाना॥ श्रुतियुक्तितुमकीयोवखाना॥ यतिवरहमजानाहैसोऊ॥ यांमैनहिममसंशयकोऊ॥ अबभ्राताकुछपूछोंआन॥ प्रसन्नमनमोहिकरोवखान।५। उक्तविषयसुखत्यागनमाहीं। भ्राताकारणभासितनाहीं। सकलधरापतितुरमहाभाग॥ मृगानलब्धशशाकरतनत्याग॥६॥ ततोपूर्णापिपरसुखमाहीं॥ विषयगतसुखत्यागोनाहीं॥ सुनेकौनअसपंडितज्ञानी॥ सुखसंपनमेंतृप्तिजिनमानी॥७॥ विषयसुखतृप्तिकरभ्राता॥ विवेकाश्रमहृद्धिममजाना। आत्मानंदकथाअबपाई॥ ॥

।=।१।=। तुर्यकवल। चतुर्थकवल=।२।= भवेति जिसकवलमैजगतकेमिथ्यात्वकाविचारहै=।३।= जगतनिष्ठमिथ्यात्वज्ञानसेंविना=।४।= योगींद्रविवेकाश्रमरूपविधुचंद्रमातिसके वचनरूपीप्रभाकरकेचांदनीकरकेविकसितहै हर्षकरयुक्तहै चित्तजिसका असीचित्तवृत्ति=।५।= हेयतिवरविवेकाश्रम=।६।= हेमहाभाग। अथवामहाभागराजाकाविशेषणरखणा=।७।= मृगानामशिकारकाहै शिकारकरप्राप्तभयाशसाहासोतिसकात्यागनहीकरैहै=।८।= ततो पूर्वउक्तहेतुसे परसुखनामपरमानंदमैपूर्णापि परमानंदकरकेव्याप्ता अपि विषयजन्यसुखकोनत्यागोगी।=।९।=। विषयजन्यसुखकरकेभईजोतृप्तितिसतृप्तिकरके।=।११।=। अबपाई० अबसुनीहै।=॥ ॥

तजोकिमविषयसुखयतिराई ॥ ८ ॥ त्यागोंअबयदिवि
षयसनेहा ॥ पापकरहोइभस्ममदेहा । यथासतोसतपा
लितकोऊ । विनुअपराधनजेनससोऊ । ९ । ध नीपुरुष
कीसंगतपावे ॥ तोकेसंगविरोधकमावे ॥ यतिवरअसक्त ।
तघ्नजोप्रानी । होइनाशनिश्चयकरज्ञानी । १० । विषयजन्य
सुखत्यागमेहेतु । तोनेकहोअबपंडितकेतु । विनहेतुतवव
चनसुनकाना । त्यागोनहिंविषयसुखमहाना । ११ । कविरु
वाच ॥ यांविधअविनयवचनविषलता ॥ विषयसंगम
करदूषनचिता । देखविपरीतमति असनारी ॥ वोलेवच
नयतिनमोहारी ॥ १२ ॥ विवेकाश्रमउवाच ॥ दोहा ॥ विष
यसरूपपूर्वकहा तन्विनीकोभुलाय ॥ विषयपसउरधा ।
रकर पुनपूछेमनलाय ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ स्वप्नेलब्धराज्य ।
कररंका ॥ मनमेधरेनहर्षकीशंका ॥ सकलधरापतिरा ।
जाजोऊ ॥ तोकोहर्षकहीकिमहोऊ ॥ १४ ॥ सकलभूमिप
तिनरयुदिआना ॥ चिनवृनेसुखचाहेमहाना ॥ सोसत्यसु ।
खचाहेवरवरनि ॥ करतनस्वप्नसुखहितकरनी ॥ १५ ॥ वो
लेकोउनृपसुतनिदाना ॥ वनमेभिल्लकरभयोमहाना ॥
तूंनहिंभिल्लहैराजकुमारा ॥ यांविधआप्तवचनसुनधारा ॥

= १ = यतिराई॰ हेयतिराज = २ = क्तनघ्ना पापकरके = ३ = इसीअर्थ
मेदृष्टांतकूंकहेहे सताससनेत्यादि सतसाधुअसतअसाधुजे सेकोऊपुरुषसा
धुअथवाअसाधुपुरुषकरकेपालितहोवे = ४ = पालकपुरुषकेअपराधसे
विना = ५ = अपनेपालककेसाथ = ६ = पंडितकेतुहेपंडितोमेधजारूप =
। ७ । यांविधपूर्वउक्तप्रकारकरकेअविनयअशिक्षितवचनरूपविषकर
युक्तलताकेसदृशचितवृत्ति पुनाकैसीहै विषयसंबंधकरकेदूषनहेचि ।
तजिसका ऐसीचितवृत्तिकोदेख्यकरके = ८ = पूर्वप्रथमकवलमे । हे
तन्विसूक्ष्मशरीरवाली = । ९ । = हेवरवरनि सुंदररूपवाली = १० = करनी ।
पुण्यकाजनककर्म = ११ । हेवाले = १२ = निदाना-वालक = १३ = महाना-यो ।
वनयुक्त = १४ = आप्तवचन-यथार्थवक्तापुरुषकेवचनसुनकरउरधार
णाकीयाजव = ॥ =

नजभिलधर्मभिलनसेनाना ॥ राजधर्ममैसोजिमरा।
ना ॥ १६ ॥ तिमनुमजवविषयसुखविहावें ॥ चिदात्ममे।
भद्रेमनलावें ॥ चिनहृने असकोनअपराधा ॥ जोनवा।
करेवामोरूवाधा ॥ १७ ॥ जिममूर्खनज्यराज्यसमाजा ॥
भद्रेस्वप्नराज्यकेकाजा ॥ सनजनवर्जिनवनमेजावे ॥
निद्राहितमृदुसेजविछावे ॥ १८ ॥ नथाकरगनआ।
त्मसुखनजकर। भ्रांतिकरसिधविषयसुखउरधर ॥
॥ इनउनभोगनिमिनउठधावें ॥ चिनहृनेनोहिलाज
नआवे ॥ १९ ॥ सोरठा ॥ सन्यरूपयदिहोइ विष।
यानबसुनशोभने ॥ वारणकरेनकोइ ननसुखलं।
पटपुरुषको ॥ २० ॥ चौपाई ॥ जोकोफणीमेमाला
ज्ञान ॥ नजकरकरगनमालामहान ॥ सर्पसमीपगं।
धहिनजावे ॥ सोनरभद्रेकिमसुखपावे ॥ २१ ॥ भ्रांनि
सिधनिमविषयसभवाले ॥ निजसरूपसेलखेनिराले ॥
भ्रांनिसिधनासुविषयुनमाहीं ॥ कहनश्रुनिसुनसंशय।
नाहीं ॥ २२ ॥ दोहा ॥ वृहदारएयचतुर्थमे ॥ तुर्यब्राह्मण।
जान उक्तअर्थकोशोभने सुनअबकरनवखान ॥ २३ ॥

।=।१।=। वामोरु॰ हेसुंदरऊंवाली =।२।= स्वप्नजन्यराज्यकीप्राप्तिके
निमित=। ३ ।= करगन॰ हाथमेप्राप्तवस्तुकीन्याईनित्यप्राप्तआत्म
सुख=।४।= ननसुख॰ विषयसुखलंपटपुरुषकोवारणकोईनक
रे अरनिवारणशास्त्रकरेहै इसीकारणसेसनरूपविषयसुखनहीं।
है =।५।= करगत॰ हाथमेप्राप्त=॥ ६ ॥= श्रुतिवृहदारएयकश्रु
ति=। ७ ।= वृहदारएयकउपनिषत्केचतुर्थअध्यायमेचतुर्थब्रा
ह्मणजान=। ८ ।= उक्तहमरेकरउक्त अर्थकोहेशोभने कथनकरेहै।=
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥

॥ चौपाई ॥ जिस अज्ञान दशा मैवाले। द्वैत समभासे वस्तु निरा
ले। तिस दशा मै होइ कर आना। करे स्वभिन्न गंध आदाना॥
॥२४॥ होइ कर अन्य देखे आना। इतराइतर सुनन धर काना॥
इतराइतर सु करत वखाना॥ इतरा करत इतर का ध्याना॥२५॥
ज्ञानत इतर इतर कों ज्ञाना। सकल विहार सुभ्रु इम जाना॥ स
कल वस्तु मै आत्मज्ञाना॥ उदिन भयो जब भानु समाना॥२६॥
॥ तब किस कर सुगंध कों धारे। किस कर कोन रूप निहा-
रे। श्रवण करे किस कर नर किस कों॥ करे कथन नर कि-
स कर किस कों॥ २७॥ किस कर नर किस कों पुन माने॥ कि
स कर किस कों भामिनि जाने॥ जिस कर सर्व वस्तु कों जाने
॥ तिस आत्मा कों किस कर जाने॥ २८॥ जो है सर्व वस्तु का-
ज्ञाना॥ किस कर तिस कों लखे प्रमाना॥ भद्रे यों विधवा-
चन महाना॥ याज्ञवल्क मुनि की नवखाना॥ २९॥ मैत्रे
यो सुन कर उर धारे॥ निषेध मुख मुनि पुन उचारे। सो यह-
नेति नेति कर जाना। अग्राह्य श्रुति कर नवखाना॥ ३०॥ ॥

॥=१॥ निराले॰ अपनेसे भिन्न॥२॥= होइ कर आना॰ ज्ञेय से भिन्न घ्राना हो-
इ कर स्वभिन्न गंध कों घ्राण इंद्रिय से गृहण करे है इसी प्रकार आगे भी अर्थ क
रना=।= तथा च बृहदारण्यक श्रुतिः। यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितर इ
तरं जिघ्रति तदितर इतरं पश्यति तदितर इतरं शृणोति तदितर इतरमभि
वदति तदितर इतरं मनुते तदितर इतरं विजानाति॥३॥= हे सुभ्रु॥४॥= स
कल वस्तु मे॰ कर्तृ कर्म क्रिया फलादि सकल वस्तु मे प्रत्यगात्म रूप कर के जब ज्ञा
न उदे भया॥५॥= तब तिस ज्ञान काल मे किस इंद्रिय कर किस गंध रूप विषय
कों कौन प्रमाता गृहण करे। इसी प्रकार आगे भी अर्थ करना॥६॥= माने॰ मनन
करे॥७॥= हे भामिनि॥ तथा च बृहदारण्यक श्रुतिः। यत्र वा अस्य सर्वमात्मै
वाभूत्तत्केन कं जिघ्रेत्तत्केन कं पश्येत्तत्केन कं शृणुयात्तत्केन कमभिव
देत्तत्केन कं मन्वीत तत्केन कं विजानीयात् येनेदं सर्वं विजानाति तं-
केन विजानीयात् विज्ञातारमरे केन विजानीयादिति॰॥८॥= निषेध॰
सकल प्रपंच निषेध द्वारा=।= तथा च श्रुतिः सएष नेति नेत्यात्माऽगृ-
ह्यो न हि गृह्यते॰ ॥ ॥

शब्दप्रत्ययप्रवृत्तिनिमित्ता। सकलधर्मसेयतोअतीता॥ तनोकरणकरजाननजाई। याविधकथनकरतमुनिराई॥ ३१। ऐंपक्षयही नतशीरराहोऊ। असंगोहिनहिसंगनकोऊ। हैअसितनव्यथाकौंपावे। नाशहीनचिदात्मामुनिगावे। ३२। दोहा। आत्मभिन्नसभवस्तुकौं मिथ्याभईजान। मुनिवरप्रिपुभार्यामनि याविधकीनबखान॥ ३३॥ चौपाई॥ ब्राह्मणत्वनसकरत अपमाना॥ आत्मभिन्नजिसतोकोजाना। क्षत्रत्वकरतनासुअपमाना। आत्मभिन्नजिसतोकोजाना॥ ।३४। करतलोकतांकाअपमाना। आत्मभिन्नजिसलोकपछाना। करतदेवतांकाअपमाना॥ आत्मभिन्नजिनदेवपछाना। ३५। करतवेदतांकाअपमाना। आत्मभिन्नजिसतोंको। जाना। करतभूततांकाअपमाना। आत्मभिन्नजिसतांकोजाना॥ करतसर्वतोंकाअपमाना॥ आत्मभिन्नजिससर्वपछाना। ३६। दोहा। ब्राह्मणक्षत्रलोकसुरवेदभूतसभजान। पावतवस्तुलखआत्मा श्रुतिअसकरतबखान॥ ३७॥ ९

१= अशीर्योनहिशीर्यतेऽसंगोनहिसज्जते॥ सितोनव्यथतेनरिष्यतीति= नरिष्यति॰ नाशनहिहोवेहै =।२।= ब्राह्मणत्वजाति=।३।= क्षत्रत्वजाति=।४।= लोक॰ चतुर्दशलोक=।५।= भूत॰ पृथिवीआदिकपंचभूत=।६।= ब्राह्मण॰ ब्राह्मणत्वजातिक्षत्र॰ क्षत्रयत्वजाति। तथाचबृहदारण्यकश्रुति ब्रह्मतंपरादाद्योऽन्यत्रात्मनोब्रह्मवेद क्षत्रंतंपरादाद्योन्यत्रात्मनोक्षत्रंवेद। लोकास्तंपरादुर्योन्यत्रात्मनोलोकान्वेद देवास्तंपरादुर्योन्यत्रात्मनोदेवान्वेद वेदास्तंपरादुर्योन्यत्रात्मनोवेदान्वेद भूतानितंपरादुर्योन्यत्रात्मनोभूतानिवेद सर्वंतंपरादाद्योन्यत्रात्मनःसर्ववेद इदंब्रह्मेदंक्षत्रमिमेलोकाइमेदेवाइमेवेदाइमानिभूतानिइदंसर्वंयदयमात्मा इति। इसश्रुतिकाअर्थतीनचौपाईएकदोहामेलिख्याहै। श्रुतिमैब्रह्मशब्दकरकेब्राह्मणत्वजातिकाग्रहणकरना॰ श्रुतिकाअर्थजोपुरुषआत्मासेअन्यत्रभिन्नब्रह्म॰ ब्राह्मणत्वजातिकोंजानेहै तिसअयथार्थदर्शीपुरुषकूंसोब्राह्मणत्वजातिपराद्यात्॰ निरादरकरेहै यहअनात्मरूपकरकेमेरेकूंदेखेहै इसीअपराधसेमोक्षनहीहोणेदेवेहै यहीनिरादरजोननाइसीप्रकारआगेभीअर्थजाननाः॥ ॥



आत्मभिन्नसकलोजगत यौविधमिथ्यारूप। बृहदारण्यकमै कह्याभार्याप्रतिमुनिभूप॥३८॥ सुनभद्रछांदोग्यमै उदालकमुनिप्रबीन। आत्मभिन्नमिथ्याजगत सुतकोबोधनकीन॥३९॥ चौपाई॥ सदेवसोम्यइदृश्यपूर्वजान॥ एकअद्वितीयवस्तुमहान॥ यौविधसुतप्रतिपितासुनावै। जगतसत्ताकोंप्रगटउडावै॥४०॥ नेहनानास्तिश्रुतिअसआना। भवमृषात्वकोंप्रगटवखाना॥ मृत्युसेसोमृत्युकोंपावै। योयौमैनानासमगावै। भेददर्शीकोश्रुतिमहाने। जन्ममृतिधाराप्रगटवखाने॥४१॥ निखिलप्रपंचचिदात्मरूपा। सोआत्मसत्यएकअनूपा। इत्यादिकवाकोश्रुतिनाना। भवमृषात्ववोधनमैमाना॥४२॥ ननोभासितजोभवमहाना। जानसकलमरूसलसमाना। सच्चिदानंदआत्माजोऊ॥ उरधरयोंनेविघ्नकोऊ॥ ४३॥ जोप्रपंचभासितहैतोहू। गंधर्वपुरसदृशहैसोऊ। आत्मधामनजकरउरअंदर॥ चहैंवृथाकिमकुत्सितमंदर॥४४॥ नाडितछिन्नपुछछिन्नकरणा॥ चरमआयुगतकंपितचरणा। यौविधसरमायथाछिनमात्र। नजैनभ्रमणाभटकेदिनरात्र॥४५॥ दोहा॥ कहुंछिन्नाभिन्नाकहुंकहूं पायकरहान॥ चितचहैविषयरटनको॥ नजैनसुनीसमान॥ ४६॥ ॥

१=मुनिभूप·मुनिराजयाज्ञवल्क्य।=२=।हेसौम्यप्रियदर्शनपूर्वउत्पत्तिसेपूर्वसकलदृश्यसतरूपथाऐसेजान सोसतकैसाहै एकहैअद्वितीयमहानव्यापकहै।तथाचश्रुतिः सदेवसोम्येदमग्रआसीत=।३।=आना·पूर्वउक्तश्रुति०। मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यतियहश्रुतिहैमहाने=।५।=।सोआत्मासत्यहै एकहैअनूपहै उपमासेरहितहै॥ तथाचश्रुतिः ऐतदात्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यंसआत्मातत्त्वमसिश्वेतकेतोइति =। ६।= उरधर·सच्चिदानंदब्रह्ममैहूं इसप्रकारनिश्चयकर जैसेब्रह्मलोकादिककीप्राप्तिमैनानाविघ्नहै तैसेकोऊविघ्ननहीजिसकारणसेअपनास्वरूपहै।=।७।=। चरम·अंतिम अवस्थामेप्राप्त=। ८।= सरमा·कुत्ती=।९।= छिन्ना।नाडिता भिन्ना·भेदनकोंप्राप्ता=।१०।= मृत्तिकापिंडवत नाशकोंपायकर=।=

सेभिन्ना·तथाचश्रुतिः नेहनानास्तिकिंचन=।४= श्रुति· बृह· ४पं·

वारवारवारितयथा मक्षिकाव्रणकोंजाय। तिमिधापि तिमभद्रेतुम भजेविषयमनलाय।४७। अविद्याकल्पित। जगतका आश्रयचेतनएक। भ्रमकरतजेतोकोयदि ह सेतवजनअनेक।४८। गलगतमालाकोयथा फणीजान करनारा। तजैंभीतिकरशोभने हसेसकलसंसार।४९।
।चौपाई। अज्ञानजातजगतयहजान। अवरनकारणसत्य उरमान। भासितरजतशुक्तिमेजोऊ। नजअज्ञान हेतुनहि कोऊ।५०। जगतजनिसत्यसेयदिहोऊ। मृषानतासक हेतबकोऊ। अनुभवसिधमृषात्वभवमाहीं। भद्रेयामेसं शयनाहीं।५१। भद्रेभासितहे अबजोऊ। भावीदिननक रहेनसोऊ। असप्रसिधभवनाशीजाना। आस्थातामेनजो महाना।५२। भवमृषात्वमेभद्रेमाना॥ बाध्यत्वहेतुतर्क वखाना। आत्माएकरससभजानो। षटविकारशरीर गतमानो॥ ५३॥ उत्पतिरहिततहोवेलीना॥ स्थि तिरहितपुनावृद्धिविहीना॥ क्षीनहीनपरिणामनपा वे॥ चितवृत्तेअसयास्कमुनिगावे॥५४॥ दोहा॥ ॥ देशकालपरिछेदसे रहितसर्वदृगजान॥ बाह्यांतर यांमैनहीं पूर्णव्योमसमान॥ ५५॥ ॥

१=।व्रण-फोडादिघाउपर=।२।=तांको-कल्पितजगतका अधिष्ठानरूपचेतनन कों।=।३।=।अज्ञानसेजन्य=।४।= अवर-अज्ञानसेभिन्नसत्यब्रह्मजगतकाकारण नहीं। जोयांमें ऐसीशंकाकरेकेसूत्रकारभाष्यकारादिकोंनेब्रह्मजगतकाकारण। कह्याहे तांनेईहां केवलअज्ञानकोंकारणकहनाअयुक्तहै सोशंकावनेनही का हेसेकेएकविज्ञानकरसर्वविज्ञानकीप्रतिज्ञासिद्धिकेवास्तेप्रधानकारणवादखं डनमे सूत्रकारभाष्यकारादिकोंकातात्पर्यहे ब्रह्मकारणतामेतात्पर्यनहीअर ब्रह्मकारणत्वप्रतिपादकश्रुतिकाअद्वैतमेतात्पर्य है ब्रह्मकारणत्वमेतात्पर्यनहीं। है। इसीकारणसेवार्तिकग्रंथमेसुरेश्वराचार्यनेब्रह्मकारणत्वकाखंडनकीयाहेअधि ष्ठानत्वमात्रकरकेब्रह्मकारणत्वकहाहे तांनेअज्ञानसेविनासत्यब्रह्मजगतका कारणनहीं=।५।= जगतमिथ्याबाध्यत्वात्शुक्तिरजतवत इसप्रकारबाध्यत्वहेहे तुजिसमे ऐसीतर्क =।=

सुरनरतिर्यगभेदजो वृद्धिलघुतासमान। चितवृत्तेदेहग
तलखो आत्माइकरसज्ञान॥५६॥ तांतेसुखचितिएक
रस प्रत्यगात्ममनलाय। शोकरहितचितवृत्तेभव शोकनि
वृतिश्रुतिगाय॥५७॥ कविरुवाच॥ दोहा॰। निजध्यानाचित
वृत्तिको असजबबोधनकीन। विषयनसेरतिकोनवी त्या
गनभई प्रवीन।५८। चौपाई। जलनिमगननलिनीकोन्यारा॥
करतसललसेजिमकरिदारा। जिमनिजरतिविषयनसेवा।
रन। करतभईचितवृतिसुखकारन।५९।दीपशिखायोंमे
अतिभासे॥योविधकचघटयथाप्रकासे। तिमपरज्योति
उरधरवाला॥भासितहैतजविषयजवाला।६०॥ दोहा॥
योविधअवसरपायकरमुमुक्षाअतिसुजान। विवेकाश्रम।
योगिनि कट आईसुखकीखान।६१। तपकरकृपामुक्षाको।
देखकरयतिमहान। प्रसन्नमनवोलेगिरा जलयुतमेघस
मान।६२। विवेकाश्रमउवाच॥ चौपाई॥ करभंद्रेअब।
मठमेवासा॥ भूषितकरमनरहोउदासा। पांचज।
न्यसंज्ञिकमठमाहीं॥ यसभयकरनववासानाहीं॥
६३॥ सोचितवृत्तिनिर्मलहमकीना॥ रागादिकमलति।
ननजदीना। मुमुक्षसकलअबतवकाजा। साधेगीचि
तवृतिसुखभाजा।६४। हेतापसिअबदसमठमाहीं॥

।=।१।=। ननुएकपूर्णआत्मामेसुरनरसूकरकूकरादिभेदकिमनिमित
कहे इसशंकाकूंमनमेरखकरकहतेहैं सुरनरइत्यादि। वृद्धिलघुतासमा
न जैसेवृद्धिह्रास्वदेहगतहै तैसेसत्वादिगुणोकरजोसुरादिभेदहै।
सोदेहमैंहै आत्मामेनहीं।=।२।=। नरतिशोकमात्मविदितिश्रुतिआ।
त्मज्ञानकरकेशोक उपलक्षितसकलसंसारअनर्थकीनिवृत्तिकूंकहे।
है।=।३।= कमलिनी=।४।= सुखकारन॰ आत्मानंदनिमित।=। ५।=
वाला॰ चितवृति =।६।= जलसहितमेघकेसमानगंभीरवाणी=।७।=
हेभद्रेमुमुक्षे।=। ८ ।= यसभयकर॰ जिसचितवृतिकेभयकर।=।९।=
हेमुमुक्षे तवकाजा॰ आत्मानुसंधानरूपसकलकार्य।=।१०।= सुखभाजा॰आत्मा
नंदसेवनपरायणचितवृति।=।०।=

करोनिवासविघ्रकोनाहीं। कविरुवाच। यौंविधसुनयनिवर कीवानी। मुमुक्षाकृशिततनुहर्षानी। ६५। चितवृत्तिअपिकुद लतानजकूर। देखनहितापसीकोउठकर। दंडवतकरतभई प्रणामा। अदृष्टपुराश्रुतजांकोनामा। ६६। सोरठा। विकसित। मुखअरविंद स्वच्छचितजानचितवृत्तिकों। बोलीवचनअनिं। द्यमुमुक्षावृधतपस्वनी। ६७। मुमुक्षोवाच। चौपाई। अहोपुत्रित वभागसुजागा। यतिवरकेपदतवमनलागा। पूर्वकरनवरक रणीजोऊ। सतसंगतपावेनरसोऊ। ६८। साधुदर्शनपुत्रिभु विपावन। तीर्थरूपसाधुमुनिगावत। विधुचंदनतनुतापनि। वारे। साधुसंगउरतापविदारे॥ ६९॥ दुर्लभमानुषतनुतवपा वा। अहोभागचिदात्ममनलावा। चिदात्मदेवकृपातवहोऊ। हरणाकरेनविषयमनतोहू। ७०। कविरुवाच। दोहा। अस मुमुक्षाचितवृत्तिकों देकरवरआसीस। नेत्रमूंदचिंत तपुनाकरतभईजगदीस। ७१। सोरठा। लखअस मठअभिराम वैराग्यतीर्थमहामुनि। आयेपरसुख। धाम विवेकाश्रमसेवरयति॥ ७२॥ चौपाई॥ त्यक्त दंडदिगअंबरधारी॥ मंचकजांकाभूमीसारी॥ भुज उपधानकरपात्रआशी॥ नग्रपादगुहागेहवासी॥ ७३। जलपात्रजिहनदीतडागा॥ नहिंकाहूसेदूषनरागा॥ मूढउन्मतपिशाचसमाना॥ विचरतरहितमानअपमाना॥

१। अदृष्टपुरा॰ जोमुमुक्षापूर्वनहीदेखी। श्रुतजांकोनामा॰ जिसमुमुक्षाका नाममात्रसुन्याहै। २। वचनअनिंद निंदासेरहितउत्तमवचन। ३। हेपुत्रि। ४। विधु॰ चंद्रमा। ५। चिदात्मदेवकीकृपातेरेपर। होवे। ६। भुज॰ भुजाहैसिरहानाजिसका। ७। गुहा॰ गुफारूपगृहमेनि वासकरनेवाला। ८। मूढउन्मत्तादिपुरुषजैसेसंकल्पसेरहि त पूर्वपश्चिमदिशाकूंगमनकरेहै तथायहवैराग्यतीर्थसंकल्पसेर हितमानअपमानसेरहितपृथिवीमेविचरेहै॥ ॥

१८
।७४। कर्तृकरणकर्मादि विहीना। ब्रह्मरूपसम निश्चयकीना॥
अयाचितलब्धदैवअधीना। करतअगदसम अदनअदीना॥
॥७५॥ उरधरपरमज्योतिअसंगा। बाहिरधूलीधूसरअंगा॥
करसुननिविवेकाश्रमनाई॥ आज्ञालेबैठेयतिराई।७६। दो
हा॥ बैराग्यतीर्थभिक्षुकायों विधदेखसरूप। विवेकाश्रम प्रेम
कर बोलेयतिवरभूप॥ ७७॥ विवेकाश्रमउवाच। चौपाई॥
॥दंडत्यागमुनेकिमकीना॥ करमंडलपुनकिमनजदीना।
।कौपीनाछादनपटजोऊ॥ मुनेत्यागकिमकीनासोऊ॥७८।
कंथापादुकअतिसुखदाई। किमत्यागातुमसोयतिराई॥
शास्त्रविहितत्यागकेमाहीं। यतिवरकहोदोषकिमनाहीं॥
।७९। कविरुवाच ॥ दोहा ॥ विवेकाश्रमयतींद्रकेसुन
करवचनरसाल॥ वैराग्यतीर्थवचनतब बोलेपरम
दयालु॥ ८०॥ वैराग्यतीर्थउवाच ॥ चौपाई ॥ परमहं
सउपनिषदकासार॥ विवेकाश्रमसुनकहोविचार। एकका
लनारदऋषिराई॥ वदराश्रमपहुचेसुखदाई।८१। देखा
तहांनारायणदेवा॥ सुरनरकरतसदाजिनसेवा। नारदता
कोकीयोप्रणाम ॥ आज्ञापायबैठेतिसधाम॥८२॥ दोक
रजोड विनययुतवानी॥ बोलेहर्षसहितमुनिज्ञानी॥६॥

१=। कर्तृकरणकर्मादिविहीना॰ यत्रत्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येदि-
त्यादिश्रुतिसेस्वरूपसाक्षात्कारजबभया तबकर्ताकरणकर्मादिसर्ववस्तु-
कोंब्रह्मरूपकरकेजाननेसेसोवैराग्यतीर्थकर्त्ताकरणकर्मादिभावनासेरहि
तहै=।२।=आज्ञापायकरके=।३।= यतिराई॰वैराग्यतीर्थ=।४।= दंडादिकसे
रहितसरूप=।५।= कौपीनाछादनपट॰ कूप मेंपतनकेजोग्यहोवे सोकहावेकौ
पीन पापकानामकौपीनहै तिसपापकासाधनहोणेसेपुरुषकालिंगइंद्रि
यभीकौपीनकहावेहै तिसलिंगइंद्रियकाआछादकपटवस्त्रलंगोटीआ
या। अथवा कौपीननाममलिंग तिसकाआछादकहोणेसेलंगोटीकानाम
भीकौपीनजानना। आगेआछादनपटपदकरकेजलपात्रआछादकज
लशोधनवस्त्रजानना। अथवाकौपीनकाआछादनपटकटिवस्त्रजानना॥
।=। ६।=। सार॰ सारार्थ।॰।

।नारदउवाच। भगवनपरमहंसनरजोऊ। कहोमार्गनांकाहै
कोऊ॥ ८३॥ परैनिष्ठानांकीहैजोऊ॥कहोकृपाकरभगवन।
सोऊ॥यहजाननवांछाहमधारी॥ दयाकरोममसंशयभा
री॥ ८४॥ वैराग्यतीर्थउवाच॥ यांविधनारदविनयमहाना
।सुनकरभक्तवत्सभगवाना।मार्गकथनहेतमुनेवानी।बो
लेघनसमानसुखखानी।८५।श्रीभगवानुवाच॥यहपरहं।
समार्गभवमाहीं॥दुर्लभनारदसंशयनाहीं। असमार्गक।
रचलननरजोऊ।दुर्लभनारदहैनरसोऊ।८६।सोनरस
दामुक्तिमेराना।सोनरश्रुतिशेषकोज्ञाना।सोनरनारदपुरुष
महाना।यांविधमुनिसभकरनवखाना।८७।चित्तनासमोहि
वसनिरंतर।वसेसदाहमतिसचित्तअंतर।नारदयांविध
नरहैजोऊ। त्यागेसुनमीनादिकसोऊ।८८। दारांभ्रातावां
धवजेते॥ त्यागेसोनरनारदनेते। शिखासूत्रयागादित्या
गे। वेदपाठमेकवीनलागे॥ ८९॥ नजेकर्मज्योतिष्टोमादि॥
॥ नजेब्रह्मांडसकलसुखसादि० ॥ ॥

१=कोऊ·कौनहै=।२।=परमस्थिति=।३।=घनसमान·मेघगर्जनकेसमानगंभी
रसुखकीराशीवानीबोले=।४।मुक्तिनामब्रह्मरूपतानिसमेंसदास्थितहै।=।५।=
श्रुतिशेष·नेतिनेतिवाक्यकरकेंसर्वनिषेधकाअवधिरूपकरकेजोशेषरहेहै
तिसकेजाननेवालाहै=।६।=परमहंसकूंकहकरमार्गकूंकहेहै नारद इति
हेनारद=।७।=दारास्त्री=।८।=यागादि·स्मृतिउक्तयागादिकर्म।आदिपद
करकेंदानादिकजानने=।९।=वेदपाठ·वेदाध्येनकात्यागकरे।इतनेकरकेइति।
हासपुराणादिककाभीत्यागजानना।=।१०।=ज्योतिष्टोमादि·वेदउक्तकर्म।कर्मप
दकरकेलौकिकवैदिकनित्यनैमितिकनिषिधकाम्यादिकर्मत्यागे=।११।=नजे
ब्रह्मांड·ब्रह्मांडकीप्राप्तिकासाधनविराटहिरण्यगर्भादिउपासनाकूंत्यागे।इसप्र
कारसकलउक्तअनुक्तसुखकासाधनसकलपदार्थकाप्रेष्यमंत्रउचारणपूर्व
कत्यागकरे=।१२।= तथाचपरमहंसउपनिषदश्रुतिः अथयोगिनांपरमहंसा
नांकोयंमार्गस्तेषांकास्थितिरितिनारदोभगवंतमुपगत्योवाच तंभगवानाहयोयं
परमहंसमार्गोलोकेदुर्लभतरोनतुबाहुल्योयद्येकोभवतिसएवनित्यपूतस्थः सए
ववेदपुरुषःइतिविदुषोमन्यंतेमहापुरुषोयच्चित्तंतत्सदामय्येवावतिष्ठतेतस्मादद
हंचतस्मिन्नेवावस्थीयतेअसौस्वपुत्रमित्रकलत्रबंध्वादीन्शिखायज्ञोपवीतेच
यागंस्वाध्यायंचसर्वकर्माणिसंन्यास्यायंब्रह्मांडंचहित्वाइति=॥ ॥

कौपीनकटिवस्त्रादिजोऊ॥ नजेनदंडजलपात्रकोऊ।९०।देहभोगहेतुनिंहजाने। नथालोकेउपकारपछाने।यांविधहैमार्गमुनेजोऊ।सुक्तनकर्मक्तनपावेकोऊ।९१।दोहा॰।परमहंसकोमार्गयह मुख्यननारदज्ञान।सुखनिष्ठापरहंसकी सुनअबकरोंवखान।९२।चौपाई।दंडनपात्रनशिखानेसूता।वस्त्रनपाइकहैअवधूता। कुंथानहिनहिवासस्थाना।शीनउष्ननहिसुखदुखमाना।९३। मानअमाननमैल्यावे।ऊर्मीस्पर्शनकबहूंपावे।शब्दस्पर्शरूपरसगंधा।नहिंतसकोउ विषयसंबंधा।९४। निंदागर्वअसूयाहीना। द्वेषदंभजिनकबीनचीना।दर्पकामक्रोधसेन्यारा।नजिसलोभमोहअहंकारा। निजननुदेखेकुरूपसमाना। शोकरहिननहिननुअभिमाना।९५। सोरठा॥
चिदात्ममेंअज्ञान संशयभ्रांतिहेतुजो।मूलाविद्याहानभयोचिदात्मज्ञान कर।९६। चौपाई।नारदनित्यमुक्तअसमानी॥

१=।देहभोगहेतुः कौपीनकरकेलज्जाकीनिवृत्ति॰वस्त्रकरशीनादिककीनिवृत्ति दंडकरकेगासपोदिकका।निवारणकरना।=।२।=लोकउपकार॰डंडादिचिंह्नकरकेतिसकूंउनमाश्रमीज्ञानकरनमस्कारभिक्षादानादिकरकेलोकाकूंपुण्यउत्पत्तिरूपउपकारकूंमाने=।३।=मानअमान॰मानअपमान।=।४।=ऊर्मीस्पर्श॰क्षुधापिपासाशोकमोहजरामरणरूपषटऊर्मीकूंप्राणमनशरीरकाधर्मजानकरआत्मामैसंलगनचिन्त्योगीपुरुषकोषटऊर्मीकास्पर्शनहीहोवेहै=।५।=परदोषकथनंनिंदा।अन्यपुरुषसेआपकूंअधिकजाननागर्व।परगुणमेंदोषकाआरोपआसूया=।६।=अपनेप्रतिकूलकाअनिष्टचिंतनद्वेष।निजकर्मकाकीर्तनदंभ=।७।=परनिंदरमैचित्तकीवृत्तिदर्प।विषयाभिलाषाकाम। यांचाकेविघानसेजन्यचित्तविक्षेपक्रोध=।८।=प्राप्तवस्तुकेत्यागकूंनसहारनालोभ।दारापुत्रादिकमैचित्तकीआसक्तिमोह।देहादिकमैअहंताअहंकार=।९।=अज्ञानकरकेकार्यअविद्यालीयासोचारप्रकारकीहै अनित्यपदार्थनमैनित्यत्वभ्रांति।१। अशुचिपुत्रकलत्रादिदेहमैशुचित्वबुद्धि।२।दुखरूपभोगोंमैसुखत्वमति।३।स्वदेहपुत्रदेहादिकअनात्मामैआत्मत्वबुद्धि।४। आत्माकर्ताहैकेनहीइत्यादिसंशय। देहादिकमैअहंमतिभ्रांतिइनकाहेतुमूलाविद्यामूलाज्ञान=।=

।विचरेभूमैनिरअभिमानी॥परमहंसमुनेनांकोजान।नम
निरूवानोहिकरीवखान॥९७॥शांनअचलअद्वयसुखरू
पा॥असविज्ञानघननिजसरूपा॥सोनारदपरधामवखा
ना।सोसत्त्वंसोशिखामहाना॥९८॥परमात्मआत्मसेक्यज्ञाना
।सोनारदआसनहममाना।अज्ञानकृतभेदकीहानी॥सोना
रदसंध्याहममानी॥९९॥तूजकरसकलवासनाआना॥धा
रेब्रह्मात्मउरध्याना॥पंचमुद्रायुनवरयहदंडा॥लखना।
रदसभअपरपखंडा॥१००॥ज्ञानदंडकीयोजिनधारन॥
दंडीनांकोकरनउचारन। काष्टदंडधारनजिनकीना॥
सर्वाशीहैज्ञानविहीना॥रौरवघोरनरकसोपावे॥ज्ञान
दंडनांनेममभावे॥१०१॥योविधज्ञानजिनउरपाया॥
परमहंसनारदसोगाया॥नूनिनकरैकाहूकोसोऊ।सुधाकारकृ
नकरेनकोऊ।१०२।नहिऔषटवषटअधिकारी।नहिवाहिनन।
विसर्जनकारी। नमंत्रनकरेअपरकोध्यान।कबहूंनकरे
उपासनआन।१०३।स्वर्णसंचयमेचितनलावे।रंनयुन।
दर्शस्पर्शनपावे॥यदियतियुवतिकनकमनलावे॥०॥

१=अज्ञानकीहानी अज्ञानकृतभेदकीहानी=२=पंचमुद्रा-नागमुद्रा धेनुमुद्रा प
रशुमुद्रा वैष्णवी शंखमुद्रा ब्रह्ममुद्रा यह पंचमुद्रासहितदंड=३। सुधाशब्दकोउचार
णाकरकेजोपितृकर्मश्राद्धादिककीयाजानाहै=४=औषटवषटशब्दकूउचार।
नकरकेदेवनादिककोंहविदाननकरे= पूर्वपृष्ठाकेआरंभसेलेकरइसपृष्ठाके
अंततकयहपरमहंसउपनिषदकावाक्यहै॥कौपीनंदंडंकरमंडलुमाच्छादनंच
स्वशरीरस्योपभोगार्थायचलोकस्योपकारार्थायचपरिगृहेत्तच्चनमुख्योऽस्तिको
मुख्यइतिचेदयंमुख्योनदंडंनकरमंडलुंनशिखांनयज्ञोपवीतंनस्वाध्यायंना
च्छादनंचरतिपरमहंसः नशीतंनचोष्णंनसुखंनदुःखंनमानापमानंचषड्र्मि
रहितंनशब्दंनस्पर्शनरूपंनरसंनगंधंनचमनोप्येवंनिंदागर्वमत्सरोदंभदर्पेच्छा
द्वेषसुखदुःखकामक्रोधरोषलोभमोहमदहर्षासूयाहंकारादींश्चहित्वास्वव
पुः कुणपमिवदृश्यतेइत्यादिपरमहंसउपनिषदमेशेषवाक्यदेखना।
लिखनेसेविस्तारहोवेहै =।=

नरकपर्यंतअतिदुखपावे॥१०४॥ दोहा॰॥ परमहंसउप
निषद्यह निजहरिकरीवखान।विवेकाश्रमनारदप्रति
तांनेमम असजान॥ १०५॥ चौपाई॥ जोचेतनघननि।
जसुखसागर॥ अंतर्यामीसत्यउजागर।तांमैरमतममचि
तयतिराज।नहिकंथादंडादिसेकाज।१०६। कविरुवाच।अ
सवैराग्यतीर्थकीवानी। श्रवणकरतचितहूनिविस्मानी॥
कोकिलसमअतिवचनरसाला।निजअनुजप्रतिबोलीबा
ला।१०७।चितह्नुनिरुवाच।भ्रातजीवात्माहैजोऊ।सुखस।
रूपकह्यातुमसोऊ।नजुकरविषय रतिपुनातांमै।जोतुमक
हीनसंशययांमै।१०८।परमेष्ठिनिष्ठयहयेमहान।सुखरूपता
अबकुरनवखान।येनिवरअबममतिअनिकपलो।संश
यदोलाकीनीचपला।१०९।त्यागपिंडकरचटरात्याया॥ मु
नेविवेकाश्रमअबआया।यतोविषयतजकरभवमाहीं
॥चिदानंदकोभासितनाहीं।११०।कहांमृदुलअबलाहम
नारी।परनिष्ठामममभासितभारी।कपलादिकऋषितपक
रभारी।परनिष्ठापाईसुखकारी॥ १११॥ तथाभ्राताअब।
पूछोआन। कृपाकरकुरममसंशयहान। चिदात्मामेय
हजगतमहाना। अबोधकल्पितहोवितभाना॥जोअ
सपूर्वकहातुमभ्राता॥नहिनिश्चयतांमैमैजाना॥ ९ म

१=।निजसुख॰आत्मानंदसमुद्र=।२।= उजागर॰प्रसिद्ध=।३।=विस्मानी॰
आचर्यकोप्राप्तभई।=।४।=निजअनुजविवेकाश्रमप्रति=।५।=विषयाकूंत्याग
करकेजोआत्मामेरतितुमनेकहीहै=।६।=परमेष्ठिनिष्ठब्रह्मानिष्ठा।यतिमहान॰म
हासंन्यासीवैराग्यतीर्थ=।७।=कपला॰ मुधा=।८।=संशयरूपमूलनानेचपलकीया
है=।९॥हाथमेप्राप्तपिंडकूंत्यागकरकेहाथकुंचाटणा=।१०।=मृदुलअतिकोमल
अबला बुद्धिबलसेरहितनारीमलनशरीरास्त्री=।११।=परनिष्ठा॰ब्रह्मनिष्ठा=
॥१२॥ अबोधकल्पित॰अज्ञानकल्पित=।१३।= तांमे॰अज्ञानकरकल्पितजगत
हैइसप्रकारकेकथनमे=।०।=

।११२। दोहा। जीवात्मा मै जगत यह किम कल्पित मुनिराज॥ परात्म मै किम वा कहो कल्पित सकल समाज।११३। चौपाई। प्रथम पक्ष मै जीव किम नाना। किम वा एक जीव तुम माना॥ प्रथम पक्ष मै भव किम नाना। प्रति जीव कल्पित मुने माना॥ ।११४। किम वा एक जगत सभ माही॥ कल्पित है दूसर भेद नाही। वनित नहि सुनु दोनो प्रकारा॥ याते भासित दोष अपारा।११५। दोहा। अबोध कल्पित जगत सभ कहो यदि आत्म माहि। । कल्पित सो अज्ञान किम किम वा कल्पित नाहि ॥११६॥ चौपाई॥ आद्य पक्ष मै दोष महाना॥ सुनो मुने अब करो वखाना। निज कल्पित यदि ना को मानो। आत्माश्रय दूषण नव पावो। ११७। यदि तुम मानो अपर अज्ञान। परस्पराश्रय दोष न व जान। यदि करो तृतीया स्वीकारा। चक्र दोष न व आविन भारा। ११८। मानो चतुर्थ यदि तुम भ्राना॥ अनवस्था दूषण न व जाना। यदि न माने कल्पित अज्ञान॥ नव होवे अद्वैत की हान। ११९। जीव पक्ष मै दोष महाना॥ सुनो मुने अब करो वखाना॥ अंतस्करण विशिष्ट सु जोऊ। जीवरूप किम मानो सोऊ॥ नहि उपहित किम जीव तुम माना॥ किम वा शुध को जीव वखाना ॥ १२०॥ ॥

१=। समाज॰ यावत वस्तु जात॰ =। २। = जीवात्म पक्ष मै =। ३। = प्रथम पक्ष नाना। जीव पक्ष॰ =।४। = दूसर भव॰ दूसरा जगत =। ५। = दोनो प्रकार॰ नाना जगत एक। जगत रूप दोनो प्रकार =। ६। = अबोध कल्पित॰ अज्ञान कल्पित =। ७। = जिस अज्ञान कर के आत्मा मै जगत संपूर्ण कल्पित है। सो अज्ञान कल्पित है। अथवा कल्पित नही सो कहो =। ८। = आद्य पक्ष अज्ञान कल्पित है यह पक्ष। =। ९। =। निज कल्पित॰ अपने कर अज्ञान कूं कल्पित यदि कहो =। १०। = प्रथम अज्ञान का कल्पक दूसरा अज्ञान जे कर मानो अर दूसरे अज्ञान का कल्पक प्रथम अज्ञान मानो न व अन्योन्याश्रय दोष आवे है =। ११। = दूसर दोष की निवृत्ति के निमित्त जे कर तीसरा अज्ञान मानो अर तीसरे अज्ञान का कल्पक प्रथम अज्ञान मानो न व चक्र का दोष आवे है =। १२। = जे कर तीसरे अज्ञान का कल्पक चतुर्थ अज्ञान मानो न व अनवस्था दोष आवेगा॰ =। १३। = अंतस्करण उपहित॰ =। ॥



॥ दोहा ॥ प्रथमपक्षमैंजीवअपि भयोकार्यसमरूप। अ
धिष्ठाननाजगतकी तसनवनेमुनिभूप। १२१। चौपाई। द्वि
तीयपक्षउपहितताजाको। स्वाधिष्ठाननावनेनताको। तृतीयप
क्षमेंशुधकीहान। यतिवरदूषणाजानोमहान। १२२। एकुआत्म
पक्षअपिअसारा। यामैंनहिंवंधमुक्तविहारा। यांविधआद्यपक्ष
करवारना। दूसरकोंअबकरौंविदारन। १२३। दोहा। परमात्मप।
क्षमैमुने जगतहेतुअज्ञान। विवेकाश्रमयतींद्रतुम कैसेक।
रोवखान। १२४। सर्वज्ञसर्वशक्तियुत ईश्वरमैअज्ञान। नहि
होवतयतिवरकबी श्रुतिअसकरतवखान। १२५। चौपाई ॥ क
ल्पेईशमेंजोअज्ञाना। पावेसोमुनेदोषमहाना। यांविधअज्ञना
रीमतिजाना। पंडितमतिभ्रमहोवेनभाना। १२६। तर्ककर्कशवु।
द्धिनरजोऊ। करैंमुनेअजकोंगजसोऊ। उठकरआजयति।
वरमाता। किसकामुखहमदेख्याभ्राता॥ १२७। कोअसउग्रक
र्महमकीना। जिसकरयांमठमैहमनीना। किमअबयहअनु
जश्रुतनामा। भयोदृष्टिगोचरदुखधामा। १२८। देखकरअ
सविनापटअंगा॥ भयंकररूपयथाभुजंगा। भ्रमतचि
त्तकंपितततनुमोरा॥ ताडनकरउरशिरहमफोरा॥ १२९॥
॥ थिरतारहीनमनमैराई॥ कौनउपावकरोयतिराई ॥ ९।
साधुसंगनकरतचिनशीना॥ सोममसुनेभयोविपरीता॥ ९॥

१=) प्रथमपक्ष॰ अंतस्करणावशिष्टपक्षमै अंतस्करणकोकार्यहोणेसेतत
वशिष्टकाभीकार्यकोटिमैप्रवेशभया=) २ = तस॰ अंतस्करणावशिष्टकोकल्पि
तवस्तुकोकल्पितकीअधिष्ठाननावनेनहीं=) ३॥= द्वितीये॰ उपहितपक्षमै॰ अंत
स्करणउपहितजीवनिष्टअंतस्करणकीअधिष्ठाननावनेनहीं= ४॥ आद्यपक्ष॰ जी
वात्मामैजगतकल्पितहै यहप्रथमपक्ष=) ५ ॥ दूसरपक्ष॰ परमात्मामैअज्ञानक।
रजगतकल्पितहै यहदूसरापक्ष=) ६ ॥ यांविध॰ हेविवेकाश्रमयहपूर्वउक्तप्रका
र। अतिमूर्खनारीजनोकीमतिजान=) ७॥ तर्ककरकर्कशतीक्षणहैवुद्धिजिनकी=) ८॥
अज॰ वकरेकोंगज॰ हस्ती=) ९॥ हेयतिवर=) १०॥ अनुज॰ छोटाभाई॰ श्रुतनामा।
पूर्वजिसकानामश्रवणकीयाहै सोवैराग्यतीर्थ=) ११ ॥ अंग॰ शरीर=)) =।

॰ ६ ॰ ६ ॰

॥१३०॥ यौंविधसंशयशूलविशेशा॥ यतिवरचित्तमेकरतक
लेशा। पूर्वजन्मकृतकर्मअसमोरा॥ दोषनयौंमैभ्रातानोरा॥
॥१३१॥ कविरुवाच·॥ दोहा ॥ संकुचिततनुचित्तवृत्ति
का यौंविधदेखअनीश। अप्रजानचित्तवृत्तिप्रति बोलेअनु
जयनीश। १३२। विवेकाश्रमउवाच। भयकोंतजोकृशांगि।
तुम चिदात्मसुखकोजान। नहिंआत्मसुखवेत्ताको श्रुतिभय
करतवखाना ॥१३३। चौपाई। जोतवभयोसंशयमहाना। तो।
कोकरौंअजौंतसमाना॥ चित्तवृत्तेचित्तकरसवाधाना॥ उत्तर
सुननोहिकरौंवखाना॥१३४॥ जीवात्मापरमात्माजोऊ॥वास्त
वभिन्नहौंवेयदिदोऊ॥ नवनतववने उभैविधशंका। वजितअ
भेदविषेश्रुतिडंका। १३५। जोमायाशुधसतोप्रधाना। तससं
गतकरईशवखाना॥ मलिनअविद्यामैचितिजोऊ॥ जीव
संज्ञाकहावैसोऊ॥१३६॥ अघटनाघटनपटुअज्ञाना। चि
तिवलकरसभकल्पकमाना। नैयायिकमतभेदसमाना।
स्वपरनिर्वाहिकसोमाना॥ १३७॥ आश्रयविषयइकचितिव
खाना। यौंविधदोषभयेसभहाना॥ जोजाकेअबोधकरभा
से। सोताकेहिबोधकरनासे। चित्तवृत्तेअसव्याप्तसमाना। रज्जु
सर्पादिमैह्वावैभाना॥१३८॥ निजाज्ञानउदितभवमाहीं ॥

१=) संकुचित· वैराग्यतीर्थकेदर्शनकरभयाजोभयतिसकरसंकुचितहैं॥
करपादादिअवयवजिसमै। अनीशअसमर्थ =) २॥ हेकृशांगि =) ३॥ श्रु
ति· आनंदंब्रह्मणोविद्वान्नविभेतिकुतश्चनइत्याकारकाश्रुति॥ =) ४॥
अजात· अनुत्पन्नकेतुल्य =) ५॥ उभैविधशंका·जीवात्मामैअज्ञानकरकेक
ल्पितजगतहै किसवापरमात्मामैहैयहदोनोप्रकार =) ६॥ श्रुतिडंका·सयश्चा
यंपुरुषेयश्चासावादित्येसएकः। अयमात्माब्रह्म। सत्यमात्माब्रह्मैव॥ तत्त्वमसि
। प्रज्ञानमानंदंब्रह्म। त्वंब्रह्मासिअहंब्रह्मास्मि त्वमेवाहमहमेवत्वंइत्यादिश्रुति।
डिंमि कीडिंमीवाजेहै=) ७॥ एकचेतनकीउपाधिकसंज्ञाकहतेहै· जोमायाइत्या
दिकरके=) ८॥ चितिवलकर·चेतनसत्ताकर =) ९ ॥ चेतनहिअज्ञानकाआ
श्रयविषयकहाहै =) १०॥ आत्मानिष्ठअज्ञान=) ॥ ००० ॥



भासितहैतिमसंशयनाहीं। आत्मबोधकरहोवेलीना। असमा
ननवेदांतप्रवीना॥१३९॥ दोहा॰। भद्रेकल्पितजगनयह स्व
प्नसृष्टिसमजान। बृहदारण्यकश्रुतिअपि करनतथाविध
गान॥१४०॥ चौपाई। जबभद्रेनरसेजामाहीं। करतशैनदूसर
कोनाहीं। नबनतत्रकोऊरथचारू। नहिंनहांअश्वनमार्गभा
रू॥ अथतहांइमृरथनरदेखे। अश्वनथामहामार्गपेखे॥
चिंतनकरभद्रेमनमाहीं। बिनअज्ञानहेतुकोनाहीं॥१४२॥
श्रुतिकरउक्तदृष्टांतमहान। सकलभ्रांतिउपलसराजान॥
स्वप्नमेरंकराज्यसुपावे॥ सकलधरापतिरंककहावे॥१४३॥
सोबिननरअवंतिकामाहीं॥ सभनरदेखिनसंशयनाहीं॥
सोनरनिजशरीरकोंबाले॥ मेरूशिखरपरलखेनिरा
ले॥१४४॥ मानुषतनुअभिमानीपुमान। करेपुनाव्याघ्रत
नुअभिमान। व्याघ्रशरीरउचितकृतजोऊ। चिनकृतेसभ
करननरसोऊ॥१४५॥ परमार्थदृष्टिकरदेखविचार। अबोधवि
लाससकलउरधार। गंधर्वपुरसमभद्रेजान। भासितहैपुनहो
वेनभान॥१४६॥ जिमनटीचूर्णकरनभचारो। रचनचतुर्विधसेनाभारी। तिममायानटीआत्ममाहीं। रचनजगतसभवासवनाहीं।
॥१४७॥ यदिनहोवेअबोधविलासा। नबनहोवेज्ञानकरनासा॥ न
त्वज्ञाननिवृत्तिभवमाहीं। पूर्वकेंहीकिमस्मरैंनाहीं॥१४८॥ ९

१=) हेभद्रे=) २॥ बृहदारण्यकश्रुति॰ षष्ठेअध्यायमेतीसरेब्राह्मणमे=) ३॥ तत्र।
सेजादिस्थानमे॰ तथाचतत्रश्रुति। नतत्ररथानरथयोगानपंथानोभवंत्य
थरथान् रथयोगान्पथः सृजते नतत्रानंदामुदःप्रमुदोभवंत्यथानंदान्मुदः
प्रमुदःसृजतेइत्यादिश्रुतिः।=) ४॥ सकलविपरीतज्ञानोंकाएकदेशजान=)
५॥ औरभीमिथ्याज्ञानकेबहुतदृष्टांतहैसोकुछकदिखावताहूंस्वप्नमेइत्या
दिग्रंथकरके=) ६॥ हेबाले=) ७॥ निरालेअवंतिकावासीजनोसेभि।
न्नदेशमे=) ८॥ व्याघ्रशरीरउचितमनुषमारणादिक्रूरकर्म=।९॥ अधि
ष्ठानकेअज्ञानकरकेभानहोवेहै पुनाअधिष्ठानकेज्ञानकरकेनहीभासने=)
१०॥ जैसेनटनीआकाशमेचूर्णकूंफेककरकेनभमेविचरनेवालीचारप्रका
रकीसेनाकूंदिखावेहै तथामायानटीअपि=) ११॥ एकसौबतीसकी।
चौपाईमेकही=)

॥ दोहा ॥ [1] तांतेस्वप्नसमानयह जगतचित[2]वृत्तेजान ॥
स्वप्नसमताविनभामिनि वर्नेप्रकारनआन ॥ १४९ ॥
॥ सोरठा ॥ स्वप्नेमुहूर्त्तमान भासेभ्रमकरवर्षशत ॥
चिरथिरतासमभान नहिचिरथिरतावास्तवी ॥ १५० ॥
मायामेकुछनाहि नियमदेशअरकालका अल्पहृदय
केमाहि भासैरथादिकभामिनि ॥ १५१ ॥ कविरुवाच ॥ ९
॥ दोहा ॥ यांविधजगतमृषात्वमे वेदयुक्तिप्रमान ॥ चि
तवृत्तिप्रतियोगीवर कीनभलीविधगान ॥ १५२ ॥ यांमे
मायामात्रयह भासेद्वैतअशेष ॥ तुर्यकवलसोपायकर ॥
तृप्तहोइमायेश ॥ १५३ ॥ ॥ इतिश्रीअद्वैतामृतभाषाप्र
बंधेविवेकाश्रमचितवृत्तिसंवादेजगतमिथ्यात्ववरननं
नामचतुर्थः कवलः ॥ ४ ॥ श्रीमन्नारायणायनमः ॥ ॥
॥ श्रीमन्नारायणार्पणमिदमस्तु ॥ ० ॥

१=) तांते॰ अज्ञानकरजगतकीप्रतीति ज्ञानकरनाशहोरोसे=) २॥ हे
चितवृत्तेस्वप्नपदार्थकेसमानजगतकोंमिथ्याजान =) ३ ॥ हेभामिनि=) =
।४। मुहूर्तमान॰ मुहूर्तप्रमाणकाल भ्रमकरकेशतवर्षप्रतीतहोवेहै ॥=) ५॥
अल्पहृदयदेशरथादिसृष्टिका आश्रयविशालदेशप्रतीतहोवेहैसोसभा
मायामात्रहै=) हेभामिनि =) ६ ॥ वेद॰ श्रुतिप्रमाण। योगीवरविवेकाश्रम
नेकथनकीयाहै =) ७॥ यांमे॰ सकलजगताधिष्ठानपरिपूर्णजिसश्रीकृष्ण
मे=) ८ ॥ पायकर॰ ग्रहणकरके=) ९॥ मायेश॰ मायाकानियंताभगवान।
मायेशइसविशेषणकरकेभगवतप्रसन्नताविनाभगवतमायाकीनिवृत्तिन
हीहोवेहै तांतेमायेशकीप्रसन्नतामेआवश्यकत्वकरनायोग्यहैयहसूचन
कीयाहै =) ॥ इतिचतुर्थकवलटिपणीसमाप्ता ॥ ४ ॥ ९ ॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथपंचमकवलारंभः॥ कविरु
वाच॥ दोहा॥ कमलनेत्रकमलापते कमलनाभकमले
श॥ वंदोनवपदकमलको कृष्णसखेकृष्णेश॥१॥आर्य
वर्यश्रीगुरुके पादपदमउरधार॥भाषापंचमकवलकी
करौंस्वमतिअनुसार॥२॥कहीचतुर्थकवलमे चितहृतिकू
यतिराज।द्वैतनिष्टमिथ्यात्वता अद्वैतार्थसमाज।३।स्थूणा।
खननन्यायकर पदार्थशोधनहार।कथनकरतयतिपंचमे
महावाक्यार्थसार।४।आत्मनिष्ठचिद्रूपता आद्यमेयतिम
हान।उक्तियुक्तिप्रमाणकर करतहृतिप्रतिगान।५। विवे
काश्रमउवाच॥ चौपाई॥ चितहृतेचिद्रूपतामाहीं॥वाद
किसीवादीकानाहीं॥ ज्ञाननमानेयदिनरजोऊ॥जगतां
धप्रसक्तिनसहोऊ।६। ज्ञानरूपकिमआत्मामाना।किम
वाज्ञानआश्रयवखाना॥ असंसंशयनरकरतमहाने॥
यथार्थचिदात्मरूपनजाने।७।

१=) हेकमलनेत्र।हेकमलापते लक्ष्मीपते।हेकमलनाभ।हेकमलेशलक्ष्मी
नियामक।हेकृष्णसखे अर्जुनसखे। हेकृष्णेश कृष्णाद्रोपदीकिरक्षक नवप
दकमलकूंनमस्कारकरताहूं =) २॥ द्वैतनिष्टमिथ्यात्वता॰अज्ञानविला।
सत्वहेतुकरके द्वैतनिष्ठमिथ्यात्त्वकाकथनकीयाहै मिथ्यात्वकाविशेषण
है अद्वैतार्थसमाज॰अद्वैतार्थ अद्वितीयअखंडार्थब्रह्मकीसिद्धिमेसमाजकही
ये सहकारीहै काहेसेद्वैतनिष्ठमिथ्यात्वकथनविनाअद्वैतार्थकीसिद्धिहोवेन
ही यांतेद्वैतनिष्ठमिथ्यात्वकाकथनअद्वैतार्थसिद्धिमे उपयोगीहै =) ३॥आद्य
मे॰इसकवलकेआद्यमे =) ४॥ हेचित्तहृत्ते चेतनरूपत्वमेकिसीवादीकाविवा
दनहीं ज्ञानमात्रकासत्वसर्वकूं अभिमतहै काहेसे यांतेसकलव्यवहारकूंज्ञा
नसाध्यत्वहै जोपुरुषज्ञानकूं नमाने तवजगतकेप्रकाशकका अभावहो।
णेसेजगतमे अंधप्रसक्तिहोवेहै इसीकारणसेज्ञानकेसत्वमेकिसीकावि
वादनही॥इतनेकहनेकरज्ञानसेविनाजगतप्रकाशककीअनुपपत्तिरू
प अर्थापत्तिप्रमाणभीचिद्रूपताकेसत्वमेसूचनकीयाहै =) ४॥ ज्ञा
नरूपहिआत्माहै अथवाज्ञानकाआश्रयआत्माहै इसप्रकारआत्मपदा
र्थमेजनसंशयकूंकरैहै हेमहाने =)

ज्ञानरूपआत्मपक्षमांही॥ जोजनसंशयसुनअबनांही॥ क्ष
णिकरूपकिमहैसोज्ञाना॥ किमवाहैसोनित्यमहाना।८।
ज्ञानाश्रयपक्षअपिवखाना॥ सोकिमएककिधौंहैंनाना॥
तर्ककलंकनष्टयेवादी॥ संतिअसकरैंविवादअनादी।९।
वेदांतकानउपवनचारी॥भूनतअत्रनिर्णयअसभारी॥ ज्ञा
नसरूपआत्मगनएका।करैंप्रतिपादनश्रुतिअनेका।१०।
विज्ञानानंदब्रह्ममहान॥ चितहृतेअसकरनश्रुतिगान॥ प्र
ज्ञानंब्रह्मश्रुतिमहान॥चिदात्मभावकोकरनवखान॥११॥
सत्यंज्ञानमनंतमहाना॥ असश्रुतिआत्मतत्त्ववखाना॥चि
तहृतेयोंविधश्रुतिनाना॥ज्ञानचिदात्मरूपमैमाना॥१२॥दो
हा॥ श्रुतिकरसिधमनशोभने शोभनेनानेजान॥ अनम
नकथावरांननें॥ मनसुनधरकरकान॥१३॥ ॥

---

१७ हेचितहृतें ज्ञानरूपआत्मपक्षमैजोजनसंशयकूंकरतेहैसोअवसुनयाने।
आत्मामैबहुतजनोंकाविवादहै बौधमतमैयोगाचार्यक्षणिकविज्ञानकूंआत्म
मानेहै।सौत्रांतिकज्ञानाकारानुमेयक्षणिकबाह्यार्थकूंआत्मामानेहै।वैभाषिक
क्षणिकबाह्यार्थकूंआत्मामानेहै।शून्यवादीमाध्यमिकशून्यकूंआत्मामानेहै॥दे
हादिआत्मवादीचार्वाकादिकदेहादिककूंहिआत्मामाननेहै।इसप्रकारआत्ममैं
विवादहोणेसेजनाकूंसंशयहोवेहै।=)२॥महाना॰व्यापक=)३॥नैयायिकमत
मैज्ञानकाआश्रयआत्मामान्याहै सोआत्माएकहैअथवानानाहैं सुखदुखादिव्य
वस्थाकीअनुपपत्तिकरसांख्यनैयायिकनानाआत्मामाननेहै =)४॥ हेसति
पतिव्रते।तर्ककलंक॰जेकरएकआत्माहोवेतबएककेमुक्तहोणेकरसर्वमुक्त
हूयेचाहीए।इत्यादिकश्रुतिविरुधशुष्कतर्करूपकलंककरकेनष्टहैचितजिन
काऐसेवादी=)५॥इसप्रकारविवादकूंदेखकर वेदांतरूपरमणीकउपवनखा मु
र्योपुरुषोंकरराचितगृहनिकटवर्तीवनकेसदृशतिससैचारीतिसमैहृप्रहृति।
जिनकीऐसेपुरुष। अत्र॰विवादअवसरमै=निर्णय॰सिद्धांत=)६॥विज्ञानमा
नंदंब्रह्म यहश्रुतिचिद्घननिरतिशयआनंदरूपब्रह्मकूंकहेहै=)७॥प्रज्ञा
नंब्रह्मयहश्रुतिप्रकृष्टनिरतिशयप्रकाशरूपब्रह्महै इसप्रकारचिदात्मभा
वकूंकहेहै=)८॥सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मयहश्रुतित्रिकालाबाध्यचिद्घनदेश
कालवस्तुपरिछेदसेरहितपरिपूर्णआत्मसरूपकूंकहेहै=)९॥हेशोभ
ने=)१०॥हेवरानने=॥ ॥

आत्मबोधरूपत्वमै कह्यौश्रुतिनोहिमान। चितरूनेसबाधा नचित सुनअबयुक्तिमहान।१४। चौपाई। चितिसाश्रयजोपुरुषवखाने। तत्रनित्यत्वहेतुकिममाने। किंमवानत्वगुणात्ववखाना। अथवाअर्थरूपतामाना।१५। प्रथमाहेतुअनुपसंहारी। यतोनउपमाउभेप्रकारी। अन्वयदृष्टांतनभासेकोउ। चितिमात्रयातेपक्षतोहू।१६। व्यतिरेकीदृष्टांतनकोऊ। अभावव्याप्तितयातेहोऊ। चिदाश्रयगुणात्वनहोवेभान। सरूपासिधदूसरइमजान।१७। नहिअंतिमपक्षवालेसाधु। यातेदूषणआवेअबाधु। वस्तुमात्रकोसाश्रयजाना। याविधनियमसकलजनमाना।१८। चिदाश्रयगतवस्तुत्वसमाना। सोचाहेनिजआश्रयआना। याविधभईअनास्थादारन॥ ॥बलीकरअपिनहोवेवारन॥१९॥ ॥

१=) चिति॰ चेतन।२=) तत्र॰ चेतनसाश्रयहैइसप्रतिज्ञामेकिमनित्यत्वहेतु है किमवागुणत्वहेतुहै अथवाअर्थरूपत्वहेतुहै इसप्रकारतीनविकल्प करकेवादीकूंपूछेहैं =।३=) प्रथमाहेतुनित्यत्वहेतु। अनुपसंहारी॰ अन्वयव्यतिरेकदृष्टांतसेरहितहेतुकूंअनुपसंहारीकहतेहैं यथासर्वमनित्यंप्रमेयत्वात् इसस्थलमैसर्वकूंपक्षहोणासे अन्वयव्यतिरेकदृष्टांतकोऊबनेनही यातेप्रमेयत्वहेतुअनुपसंहारीहै तथाप्रकृतमेनित्यत्वहेतुहै सोअसतहेतुहै यातेव्याप्तिज्ञानकाप्रतिबंधकहै जहांसाश्रयत्वाऽसमानाधिकरणानित्यत्वहै ऐसाज्ञानहोवेहै तहांनित्यत्वसमानाधिकरणात्यंताभावाप्रतियोगिसाश्रयत्वसमानाधिकरणंनित्यत्वं इसप्रकारअन्वयव्याप्तिज्ञानहोवेनही तथासाश्रयत्वाभावव्यापकीभूताभावप्रतियोगिनित्यत्वंइसप्रकारव्यतिरेकव्याप्तिभी नहीबनेहै। यातेदुष्टहेतुहै =।४।= इसीअर्थकूंमूलमैदिखावेहै अन्वयदृष्टांत इत्यादिकरके =।५।= पक्षमैहेतुकेअभावकूंसरूपासिद्धकहतेहै सोगुणत्वहेतुचितिरूपपक्षमैनहीहै याते श्रुतिस्मृतिमैचेतनकूंनिर्गुणनिरूपणकीयाहै =।६।=) चिदाश्रयगत॰ चितिकाजोआश्रयहैतिसमेवस्तुत्वहेतुसमानहै =।७।= सोचिदाश्रयवस्तुअपनेसेभिन्नआश्रयकीइच्छाकरेहै सोचिदाश्रयकाआश्रयभीवस्तुहै सोअन्यआश्रयकूंचाहेहै इसप्रकारअनास्थाअनवस्थादोषआवेहै =।८।= बलीकर॰ बलवानपुरुषकरके=)) ९

दोहा ॥ उक्तियुक्तिबहुमानकर चिद्रूपआत्मजान। केवला-
तर्ककर मतिमति असमतिमतकरहान।२०। क्षणिकआत्म
मतशोभने सुनअबकरोंनिरास। असमतसुननवाननेलो-
ककरेउपहास।२१। चौपाई ॥ क्षणिकविज्ञानआत्ममतजो-
ऊ। विनहूनेजानअसंगतसोऊ। भुक्तिमुक्तिक्षणिकमनमा-
हीं। प्रवृत्तिनिवृत्तिबनेकोउनाहीं।२२। पूर्वअनुभूतपदार्थजो-
ऊ। स्मृतितनौकीक्षणिकमनहोऊ। अनुभवकर्ताकाभयोहा-
न। अन्यकोंबनेनस्मृतिज्ञान।२३। पूर्वज्ञानउत्तरमेंजावे ॥
असमतकथननसुननसुहावे। अनुभवजननीकीना-
जोऊ। गर्भगतसुतकोंस्मरणहोऊ।२४। दोहा। किमदीप
कदृष्टांतवश किंधोअर्थउरधार। प्रतिक्षणनाशीआत्मा
तुमकीनोस्वीकार ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ चितिक्षणिकत्वम
तकेमाहीं। प्रयोजनकोउभासितनाहीं ॥ ॥

१=) उक्तिकरके श्रुतिस्मृतिकाग्रहणकरना=।२। मानकर· प्रमाणकरके=।
३=) हेमतिमति।=।४। असमति· पूर्वउक्त आत्मविषयिणीबुद्धिकाशुष्कतर्कों
करत्यागमनकरो। इसीअर्थकूंकठश्रुतिभीकहेहै नैषातर्केणमतिरापनेयादृ
ति=५) पूर्वपूर्वज्ञानउत्तरउत्तरज्ञानमेंजावेहै=।६) किंधो·अथवा। अर्थ·प्रयोज
न=।७।=उक्तविकल्पदोनोमेंसेप्रथमदूसरेपक्षकूंचौपाईकेदोपादकरनिरास
करनेहैं मूलमें चितिइत्यादिकरके=।८) भोक्षणिकआत्मवादी किमभोजना-
दिव्यवहारमेंचेतननिष्ठक्षणिकत्वकाप्रयोजनहै किमवायागादिकसेजन्यस्व-
र्गादिव्यवहारमेंप्रयोजनहै किमवाश्रवणादिजन्यतत्त्वज्ञानरूपव्यवहारमेंप्र-
योजनहै किमवातत्त्वज्ञानकरप्राप्यमोक्षरूपव्यवहारमेंक्षणिकत्वकाप्रयोज
नहै आद्यकापक्षनहीबनेहै यांतेभोजनकर्ताकाअभावहोणेसेभोजनजन्यतृप्ति
काहिअभावहै। दूसराभीनहीबनेहै यांतेयागादिकर्ताकाअभावहोणेसेस्वर्गादि-
फलभोक्तृत्वकीअनुपपत्तिहै। तीसराभीनहीबनेहै यांतेसाधककाअभावहोणेसे
ज्ञानकीअनुपपत्तिआवेहै। चतुर्थपक्षभीनहीबनेहै यांतेज्ञानकाआश्रयपूर्वक्षण
वर्तीपुरुषकाउत्तरक्षणमेंअभावहोणेसेमोक्षरूपव्यवहारहीअसिद्धहै। यहसं-
पूर्णअर्थमनमेंरखकरमूलमेंकह्याहै प्रयोजनकोउभासितनाहीं इति=)

॥ ॥

१=
यदि क्षणिकदीपकसममाना। स्थिरमानोनवभानुसनाना॥
२६। घटउपलब्धिकालकेमाहीं। पटज्ञाननरहोवननाहीं। जबहोवेनरकोंपटज्ञान। होवेननबनरकोंघटभान। २७। बाल
गोपालादिनरजोऊ। असप्रसिधिमानेसभकोऊ। स्थिरनहोतेयदिआत्माकोउ। नबनहिंऐसीप्रसिधिसिधहोउ। २८। दोहा॰। उपाधिकृतहैक्षणिकता स्थिरतावास्तवजान। इसीअर्थमैशोभने सुनअबउपमाआन। २९। चौपाई। जबमणिजतुरससंगसुहावे। नबनहिंपीनभावकोंपावे। पीनवस्तुजबनिकटधरावो। नबनहिरक्तभावमणिपावो। ३०। ऐसीप्रसिधिसकलजनमाहीं॥ चिनहृनेकोउसंशयनाहीं। अमलस्फटिकजिमस्थिररूपा। रागसंगकरक्षणिकसरूपा। ३१।

१=) प्रयोजनकाअभावरूपदूसरापक्षनिराकरणकरकेअबप्रथमपक्षकूं निराकरणकरैंहैं यदिइत्यादिदोपादकरके। दीपकसमानक्षणिकमाननेमें कोऊनियामकनहीहै=।२।बाल॰अतिमूर्खनकरप्रसिद्धबालादिपुरुष=।३। जेकरयांमेंकोईऐसीशंकाकरे पूर्वपूर्वज्ञानकानाशहोवेहै उत्तरउत्तरज्ञाननवीनउत्पन्नहोवेहै यांनेविज्ञानक्षणिकहैं स्थिररूपनही सोशंकावनेनहीकाहेसेजोउपाधिकेनाशकरउपहितकानाशभ्रमकरप्रतीतहोवेहै वास्तवसेनाशनहीहोवेहै नांनेअंतस्करणकीवृत्तिरूपउपाधिकेनाशकरचेतनमेनाशव्यवहारभ्रांतिकरहोवेहै वास्तवनहीं इसीअर्थकूंदृष्टांतसहितमूलमे दोहासेलेकरपांचचौपाईकरनिरूपणकरतेहै॰उपाधिकृतइत्यादि=।४।= उपमा॰ दृष्टांत=।५।= मणि॰ स्फटिकमणि। जतुरस॰लाक्षकालालरंगकेसमीपसुहावे शोभेहै=।६।= मणि॰स्फटिकमणि=।।७।= रागसंग॰ रक्तपीतादिरंगकेसंबंधकरके यथारक्तरंगकेसमीपरक्तमणिहै पीतनही पीनवस्तुकेसमीपकरनेसेपीनमणिहै लालनही इसप्रकारउपाधिकरक्षणिकव्यवहारहोवेहै वास्तवसे मणिनिर्मलस्थिररूपहैक्षणिकनही=।०॥ ०००॥

[1] निमयहूआत्माअमलमहाना। अचलनित्यज्ञानमयमा
ना॥ वृत्तिउदिताकरउदितसमाना। वृत्तिनाशकरनष्टस
मभाना। ३२। [2] मणिभित्तिप्रतिबिंबितरविजोऊ। जनिमृ
तिकोंपावेजिमसोऊ। [3] विषयाकारचितमनसु[4]आस्ये॥ प्र
तिबिंबितआत्मातिमभासे। ३३। चितविनाशकरनाशसमा।
ना। चितउदैकरउदितसमभाना। चितहूंतेचितगमनकूंगं।
[5] ता। भासेआत्मानित्यअनंता। ३४। करेप्रकाशनयाकोंकोऊ।
सर्ववस्तुप्रकाशेसोऊ। उत्पन्नकरेनयाकोकोऊ। निखिलभु
वनउत्पादकसोऊ॥ ३५॥ असहंताभद्रेकोनाहीं। करेह
ननभुवनक्षणमाहीं। चितैहूंतेअसवस्तुकोनाहीं। चिदा
त्मनत्वनयाकेमाहीं॥ ३६॥ चितहूंतेअसकालनहिकों।
ऊ। अधिगतआत्माजहांनहोऊ। चितहूंतेनहिअस।
कोउदेशा। जहांनआत्मतत्वप्रवेशा। ३७। तनुगतबाल्या
दिकसेवाले। अमलचिदात्मासदानिराले। लखनवागसंगसेही
ना॥ यतोअसंगकथनश्रुतिकीना॥ ३८॥ ०॥

१=) दृष्टांतमैंउक्तअर्थकूंदार्ष्टांतिकमेंदिखावेहैं निमयहइति। अमलमाया·
रूपमलरहित। महान·व्यापक=।२।उक्तअर्थकूंऔरदृष्टांतकरकहेहैं मणिभित्ति
मणिकररचितदिवालमैंप्रतिबिंबितसूर्यजैसेदिवालरूपउपाधिकेजन्मम
रणकरजन्ममरणकूंपावेहै=)३ दार्ष्टांतिककूंकहेहैं विषयाकारइति=)४ हे
सुआस्येसुष्टुमुखवाली=)५ गंता·गमनकर्त्ता=) तथाचकठश्रुतिः रूपंरूपं
प्रतिरूपोबभूवेति=)६ कोऊसूर्यादिप्रकाशक। तथाच मुंडकश्रुतिः॥
नतत्रसूर्योभाति नचंद्रतारकमिति=) ७ सर्ववस्तु·सूर्यादिवस्तुमात्रं। त
थाचमुंडकश्रुतिः यस्यभासासर्वमिदंविभातीति=)८ उत्पत्तिकेअभावमेंक
ठश्रुतिः नजायतेम्रियतेवा० =)९ उत्पादक·उत्पन्नकर्त्ता। तथाचतैत्तरेय।
श्रुतिः यतोवाइमानिभूतानिजायंते इत्यादि=)१० हंता·हननकर्त्ता। तथाचबृ।
हदारण्यकश्रुतिः अविनाशीवारेयमात्मइत्यादि=)११ ॥देशकालवस्तु
परिच्छेदशून्यताकूंडेढ चौपाई करकहेहैं चितहूंतेइति=॥ १२॥ =
श्रुति·असंगोनहिसज्जतेइतिश्रुतिः॥=

१=
मानरहितमनजांकेमाहीं ॥ करेप्रवेशचिनृतेनाहीं ॥स
र्वबुद्धिवृत्तिसाक्षीजोऊ॥ वृत्तिविषयकह्योकेसेहोऊ॥ ३९॥
॥दोहा॥ वाणीविषयनकरसके मनकीजहांनगौन ॥
असआत्मतत्वशोभने वोधेघटसमकौन ॥४०॥चौपाई॥
चित्रलिखितजेसेनृपसारे॥नेतिनेति करउषानिवारे ॥
जबअनिरुद्धचित्रदिखलाया॥ तूष्णीह्वैकरउषाजनाया॥
।४१।नथामौनुगनवस्तुअशेषा। करनसकलकोंवेदनिशेषा
।शेषचितिश्रुतिचकितजनावे। नहिवाचाकरतोकोगा।
वे ।४२।असेसूक्ष्मकोऊवस्तुनाहीं। चिदात्मतत्वनजांके।
माहीं। असवस्तुनहिंकोऊमहानो।अधिकनयांतेचिदात्म
जानो।४३।मनसेरहितसकलमनमंनो।सर्वगुहागतसकल।
नियंनो। ईशकृपाकरजोनरजाने।शोकरहितसोहोवेमहाने ४४

१=) मानरहित· जोप्रमाकाकरणहोवेसोप्रमाणकहावेहै व्यापारवा।
लाअसाधारणकारणकूंकरणकहनेहैं मनकूंसर्वज्ञानकेप्रतिसाधारणकार
णहोणेसेप्रमाणनहीं किंतुप्रमाणकासहकारीहै=।२=गौन·गमन=३
जैसेवाणकीकंन्याऊषानेस्वप्नमेदृष्टपुरुषकेपछानकेनिमित्तचित्रले
खांनेसर्वराजाकीव्यक्तीलिखीथी सोसर्वव्यक्तीकायहनहींयहनहीं इस
प्रकार ऊषानेनिषेधकीयाथा जबचित्रलेखांनेअनिरुद्धकीमूर्तिलिखी
नबऊषानेदेखकरलजासहितनीचेमुखकरकेमुसकायकरचुपरही न
वनिकटवर्तीसभसखीआनेजाना यहकथाहरिवंशमेलिखीहै इसीप्रकार
वेदभीसर्वकार्यजातकानिषेधरकेसकलनिषेधकाअधिष्ठानरूपआत्माकूं।
जनावेहै सोईअर्थदोचौपाईकरकहेंहैं चित्रलिखित इति=।४॥मानगत·।
प्रमाकाविषयरूप=।५॥ श्रुतिनेनिनेति इत्याकारकाश्रुतिभीनीकरकेजना।
वेहै।पुष्पदंताचार्यनेभीकहाहै अतद्व्यावृत्यायंचकितमभिधत्तेश्रुतिरपी
ति=।६॥श्वेताश्वितरउपनिषद्केतीसरेअध्यायमेमंत्र २० अणोरणीयान्म
हतोमहीयानात्मागुहायांनिहितोऽस्यजंतोः।तमक्रतुंपश्यतिवीतशोकोधा
तुःप्रसादान्महिमानमीशं यहमंत्रआत्माकीदुर्विज्ञेयताकूंकहेहैं सोइसमं
त्रकाअर्थदो चौपाई करकहतेहैं असेसूक्ष्म इत्यादि=) श्रुतिमेअक्रतुप
दकाअर्थ चौपाईमेमनसेरहितपहलिख्याहै=।७।= हेमहाने=) ६ ।

१० २०
पादनयांकेअतिजववाना। हस्तरहितसभकरनअदाना।
नेत्ररहितसभवस्तुनिहारे। सुननशब्दकर्णविनसारे। ४५।
सकलवस्तुकोंजानेसोऊ। नखेननाकोभद्रेकोऊ। कारणव
जितपुरुषमहाना। चिदात्मविनअसकरनबखाना। ४६॥
जोश्रुतिकाश्रुतिश्रुतिवखाना। मनकामनभद्रेजोमाना॥
जोवाचाकावाणकहावे। जोहिप्राणकाप्राणकहावे। ४७।
जोहिनेत्रकानेत्रमहाना। असआत्मनत्त्वश्रुतिवखाना। नांकों
पायविमुक्तशरीरा। अमृतभावकोंपावेंधीरा। ४८। जोहिवि
दिनसेन्यारा। कृताकृतसेजोभिनउचारा। भूतभविष्यकाल
सेआना। जोव्यास्थ्यापदविषयनमाना। ४९। दोहा। नानेया
विधशोभने। भूमाव्रह्मपछान। चेननसासीसर्वका॥ श्रु
तिसभकरनवखान॥ ५०॥ ॥

---

१०) अपाणिपादोजवनोगृहीतापश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः। सवेत्तिवेद्यंनचतस्यास्तिवेत्तातमाहुरग्र्यंपुरुषंमहान्तंइति इसउनीसकेमंत्रकाअर्थदोचौपाईकरकहतेहैं पादनजांके इत्यादि। अतिजववाना॰ अतिवेगवालाहै = २) अदाना॰ ग्रहणकूंकरेहै = ३) केनउपनिषदश्रुतिकाअर्थदोचौपाईकरदिखावेहै जोव्रह्मश्रुतिकाश्रुतिहै शब्दकीउपलब्धिकाअसाधारणकारणजोश्रोत्रइंद्रियतिसइंद्रियकूंशब्दग्रहणकीसामर्थ्यकाअसाधारणकारणहै। इसीप्रकारआगेभीअर्थकरना = ४) प्राणकाप्राण॰ पंचवृत्तिरूपजीवनकारणप्राणकाप्राणहै जीवनकारणताकीसामर्थ्यकाकारणहै = ५। नांकोंपाय॰ स्वाभिन्नरूपकरकेजानकर = ६॥ धीरा॰ व्रह्मचर्यादिसंयुक्तापुरुषा = । तथाचतत्रश्रुतिः श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनोयद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः। चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवंती।
केन तिः = ७। पुनःश्रुतिकाएकपादकरकहतेहै विदित॰ ज्ञानकाविषयसकलवस्तु। मात्रसेभिनहै। अविदितः ज्ञानकाअविषयसेभिंनहै। तथाचतत्रश्रुतिः अन्यदेवतद्विदिताद्थोअविदितादधिइति = ८। दोपादकरकठश्रुतिकाअर्थकहतेहै कृताकृतसे॰ कृतकार्यअकृतकारणसेभिंनहै भूतभविष्यतकालसेभिंनहै॥ तथाचतत्रश्रुतिः अन्यत्रास्मात्कृताकृतात् अन्यत्रभूताच्चभव्याच्चइति = ९
॥ शब्दात्मकवाणीकाविषयनहीं = ॥ ६ ॥ ६ ॥

अर्थ६

॥ चौपाई ॥ चित्त वृत्ते जो काल त्रय माहीं ॥ वाचा कर प्रका शित नाहीं ॥ जिसकर वाचा सकल प्रकासे। सो आत्मा न व अंतर भासे। ५१। मन कर लखे न जा को कोऊ। सदा ज्ञान मन जिसकर होऊ। सोई आत्मा ब्रह्म कहावे। चित त्र्हते असा सकल श्रुति गावे। ५२। चक्षु कर नर नहि जा को देखे। जिसकर चक्षु सकल को पेखे। सो आत्मा श्रुति सिध लख वाले। अनात्म लख सभ न तो निराले। ५३। श्रोत्र कर जन न जो को जाने॥ जिसकर सुनन श्रोत्र महाने। श्रुति कर सिध सद बोध सरूपा। सो आत्मा भई न वस्तू पा। ५४। प्राणन करे न प्राण कर जोउ॥ प्राणा चेष्टा सभ जिसकर होउ। सोई आत्मा तू वउर भासे। चिदानंद सभ वस्तु प्रकासे। ५५॥ सोरठा ॥ धरउ रफल का ध्यान जनय सकर त उपासना॥ अनात्म ना को जान॥
॥ श्रुति शेष कहे शोभने ॥ ५६॥ ॥

१=। पुनाकेन श्रुति का अर्थ पांच चौपाई कर के कहते हैं चित वृत्ते इत्यादि।=।२=वाचाकर॰ जो ब्रह्म वर्ण पदादि रूप लौकिक वैदिक वाणी कर प्रकाशित नहीं है=। ३= जिस ब्रह्म कर केवर्णादि वाणी के सहित वाग इंद्रिय प्रकाशे है शब्द उच्चारण रूप निज व्यापार कूं समर्थ होवे है। इसी। प्रकार आगे भी अर्थ करना=। ४। = हे महाने=। ५।= प्राणन करे॰ जो ब्रह्म पंच वृत्ति रूप प्राण कर के प्राणन नहीं करे है जीवन रूप प्राण चेष्टा कूं नहीं करे है। तथा च केन श्रुतिः यद्वाचानभ्यु दितं येन वागभ्युद्यते तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि॰ यन्मनसा न मनुते ये नाहुर्मनो मतं तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि॰ यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि॰ यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतं तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि॰ यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि॰ इति।०। ६= पांच श्रुति का शेष भाग का अर्थ एक सोरठा मे कहते उरधर इत्यादि। जनकर॰ अज्ञानी जन कर के=। तथा च श्रुति शेष वचनं नेदं यदिद मुपासते इति॥ सभ श्रुति का अर्थ चौपाई मे स्पष्ट लिख्या है ॥ ॥

॥ चौपाई ॥ [१]अनधिगत है आत्म चिति जाँको। ज्ञान विज्ञान
आत्मा ताको। अधिगत आत्मा यो नर माने। नहिं आत्म तत्व
सो नर जाने ।५७। याँविध विरुध अर्थ के माहीं॥ चित तू ने
कोउ संशय नाहीं। याँने सर्व कौ नैक की खान। चिदात्मा कों
श्रुति करन बखान ।५८। सुन अब सार बखानों तोहू॥ ब
हुत कथन से काम न मोहू॥ मेधा दृष्टि जूति संज्ञाना। धै
र्य स्मृति संकल्प विज्ञाना। ५९। मनन मनीषा क्रतु आज्ञा
ना। असु काम वश वाच्य प्रज्ञाना। याँविध नाम उपाधि अ
धीना॥ वास्तव चिति सब धर्म विहीना ॥ ६॰॥

१= अनधिगत॰ जिस पुरुष कूं ब्रह्म अनधिगत है कर्तृ कर्मादि भाव कर के
अधिगत नहीं है तिस पुरुष कूं सो ब्रह्म अधिगत है =।२।= जो पुरुष आत्मा कूं कर्तृ
कर्मादि भाव कर के अधिगत माने है ज्ञान मानता है सो पुरुष आत्म सरूप कूं
नहीं जाने है ॥ तथा च केन श्रुतिः यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः इति॥
=।३।= सर्व कौतुक॰ सर्व आश्चर्य का स्था न है =।४।= श्रुति॰ आश्चर्यो ऽस्य
वक्ता कुशलो ऽस्य लब्धा इति कठ श्रुति। आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनं इ
ति स्मृति अपि आश्चर्य रूप आत्मा कूं कथन करे है =।५।= ऐतरेय श्रुति॰
आत्मा कूं सर्व रूप कर के वरनन करे है मेधा इत्यादि डेढ चौपाई कर के मे
धा॰ ग्रंथ न तत् अर्थ धारण की शक्ति। दृष्टि॰ नेत्र द्वारा रूप की उपलब्धि का
जनक मन की वृत्ति। जूति॰ मन निष्ट रोगादि जनित दुखित्व की प्राप्ति॥
संज्ञान॰ सम्यक् ज्ञप्ति। =।६।= धैर्य॰ अपदा काल मे मन की स्थिरता। श्रुति मे
धृति शब्द का अर्थ है। स्मृति॰ अनुभूत पदार्थ का स्मरण। संकल्प अस
म्यक् वस्तु मे सम्यक् रूप कर के कल्पना वृत्ति। विज्ञान॰ यह हमारे सेशि
ष्ट है इस प्रकार का विवेक।=।७।= मनन॰ राज कार्यादिक का विचार श्रु
ति मे मति शब्द का अर्थ है। मनीषा॰ तिस विचार मे स्वतंत्रता। क्रतु॰ आव
श्यक कार्य करणे का निश्चय। आज्ञानं॰ आज्ञप्ति ईश्वर भावा =।८।= असु॰ जी
वन हेतु प्राणादि वृत्ति। काम॰ पदार्थ इच्छा। वशः स्त्री संसर्ग की इच्छा। मे
धादि शब्दों का वाच्य प्रकृष्ट ज्ञान रूप चिदात्मा है। तथा च ततश्रुतिः॥
संज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं मेधा दृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः।
संकल्पः क्रतुरसुः कामो वश इति सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि
भवंति इति। श्रुति के पदों का अर्थ चौपाई के टिपण मे लिख्या है॥ = ॥

॥ दोहा ॥ तनु[१] इंद्रियगनधर्मसे रहितसकलगुणहीन। चिदात्मरूपवरानने सुनपरिणामविहीन। ६१। अंधनपंगुवधिरगुंगब्राह्मणभूभुजनाहि। नवैश्यनशूद्रअंतेजा[३] व्यापकचितिसभमाहि ॥ ६२॥ सोरठा ॥ द्वैतरहितपररूप निराकारसंगवर्जिता। अंशहीनसनरूप त्रिधाभेदविवर्जिता। ६३। चौपाई ॥ अपरिणामीआनंदरूपा। परप्रकाश्यसेरहितअनूपा। स्थूलतारहितनअणुमहाना। नहिदीरघनहीलघुपरिमाना ॥ ६४॥ रक्तविहीनसनेहअ तीना। तमोरहितमारुतविपरीता। पावकभिन्नआकाशविहीना॥ भद्रेसर्वसंगसेहीना ॥ ६५॥ रसविहीनगंधवर्जितत्यागा। नेत्रविहीनअकर्णअवागा। मनसेभिन्नमनोवृत्तिविहीना। मुखवर्जितप्राणविनचीना॥ ६६॥ मात्राहीनअनंतररूपा॥ बाह्यविहीनाअचलअनूपा॥ अदनकरननहिकिंचिनसोऊ॥ आननभोक्ताजाकाकोऊ॥ ॥

१=। तनु॰ शरीर =। २। = शरीरइंद्रियधर्मराहित्यकूंप्रतिपादनकरेहै अंधन इत्यादिकरके =। ३। = अंतेज॰ चांडाल =। ४। = त्रिधाभेद॰ सजातिविजातिस्वगतभेद =। ५। = अपरिणामी॰ परिणामसेरहितहै श्रुतिमेअक्षरशब्दकाअर्थहै =। ६ = स्थूलतारहित इत्यादिचारविशेषणकरके द्रव्यत्वकाप्रयोजकपरिणामकेनिषेधकरनेसेद्रव्यत्वकानिषेधभीजानना =। ७ = गंधादिकसेभिन्नहै =। ८ = मात्रानाममानकाहै तिसमानसेरहितहै =। तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः। अ॰ ५। ब्रा॰ ८। सहोवाचैतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंत्यस्थूलमनण्वऽह्रस्वमदीर्घमलोहितमस्नेहमच्छायमतमोऽवाय्वनाकाशमसंगमरसमगंधमचक्षुष्कमश्रोत्रमवागमनोऽतेजस्कमप्राणममुखममात्रमनंतरमबाह्यं नतदश्नातिकिंचन नतदश्नातिकश्चनइति ॥ श्रुतिकेपदोंकाअर्थचौपाईमेस्पष्टहै =।

१= पुरुषनपुंसकस्त्रीविभागा॥ चितहृतेनहींजांमेलागा
वर्णाश्रमनतुधर्मविहीना। जातिरहितविशेष २= सेहीना।
॥६८॥ दोहा ॥ उदेअस्तसेरहितसोप्रकाशरूपमहान।
स्तुतिनिंदाकेयोग्यनहि गुणादूषणाविनजान॥ ६९॥
वेनेनईशअनीशता निरूपाधिकशुधमाहि। देशका
लकृतभेदपुनवस्तुभेदनसनाहि। ७०। चौपाई। अम
लकमलनेत्रयामाही॥ ईशजीवनावास्तवनाहीं। ई
शजीवनाभासेजोऊ॥ उपाधिकृतलखवालेसोऊ॥
।७१। कौनउपाधिब्रह्मअसंगे। यदिअसकहेमुदगनअ
नंगे। समाधानयाका हैजोऊ। वांमोरूसुनकहौअबसो
ऊ। ७२। सकलसंसारवीजमहाना। असपरउपाधिअ
विद्यामाना। सोनसनासनउभेसरूपा॥ भननअनिर्वा
च्यीमुनिभूपा। ७३। संगअविद्याचेतनजोऊ। अनिर्वा
च्यलखवालेसोऊ ॥ ॥

१= पुरुषादिविभागसेरहितहै। तथाचश्वेताश्वितरश्रुतिः॥अ॰ ५। नैवस्त्री नपुमानेषोनचैवायंनपुंसकः इति।= २=। विशेष॰ नित्यद्रव्यवृत्ति। विशेषपदार्थसेभिन्नहै=। ३= महान॰ व्यापकहै=।४= सोआत्मासर्वत्रपूर्णहै इसकारणसेदेशकृतपरिच्छेदसेरहितहै। तीनोकालमैनिसकावाध्य नहीहोवेहैयाते कालकृतपरिच्छेदसेरहितहै। आत्मासेभिन्नदूसरीवस्तुतात्वकोऊनही यातेवस्तुकृतपरिच्छेदसेशून्यहै=। ५= हेअमलकमल नेत्र स्वच्छकमलसमाननेत्रवाली=। ६= हेमदगनअनंगे मदकरकेगनप्राप्तहै अनंगकामजिसमै=। ७= हेवामोरू=। ८ = परब्रह्मकीउपाधि=। ९ = सोअविद्यासतरूपनहीकाहेसे जोयाते हैतापत्ति मुक्तिकाअभाव ज्ञाननिवर्त्यत्वानुपपत्तिदोषआवेहै। असतरूपमानेतोप्रतीतिकीअनुपपत्ति जगतकारणताकीअनुपपत्तिरूपदोषआवेहै ॥ सतासतउभेरूपमानेतोविरोधआवेहै यातेकह्याहै नसतनअसतनउभेसरूपाइति=। १०= मुनिभूपा॰ शास्त्रवितपुरुषोंमैशिष्ट। पुरुष=। ११=। अविद्याचेतनका संबंध। =।=। ०.६.० ।

वितहूतेअविद्याकीहानी। यसअनुरूपवलिसममा।
नी। ७४। सोरठा। बीजरूपयहजान भवपादपकाशो
भने। योंविधकरतवखान श्रुतिवेतापंडितनिखिल।
।७५। दोहा। सृष्टिपूर्वयहजगतसभ हैअव्याकृतरू
प। अणुपरिमितनिजबीजमे जिमहैवटतरुभूप।७६।
साध्यविकलदृष्टांतयह असपदिकेरेंवखान। तवयां
मैसुनशोभने कहोंनर्केअबआन। ७७। ॥

१= यसअनुरूप॰ यथायक्षस्तथावलिइसन्यायकेअनुसारमानीहैजैसेअवि
द्याअनिर्वाच्यहै तथाअविद्याकीनिवृत्तिअनिर्वाच्यमानीहै। ब्रह्मसिद्धिकारोंनेअवि
द्याकीनिवृत्तिआत्मसरूपमानीहै यांतेकल्पितवस्तुकानाशअधिष्ठानसरूपहोवे
है। जोयांमैऐसीशंकाकरेंअविद्यानिवृत्तिकूंआत्मसरूपमाननेसेज्ञानसाध्यत्व
कीअनुपपत्तिदोषआवेहै सोशंकावनेनहीं काहेसेजोजिसवस्तुकेसत्वसेउत्तरक्ष।
णमैजिसकासत्वहोवे औजिसकेअभावसेजिसकाअभावहोवेसोवस्तुतनसाध्य
कहियेहै यांतेज्ञानकेसत्वसेउत्तरक्षणमैआत्मरूपअविद्याकीनिवृत्तिकासत्वहोवे
हैज्ञानकेअभावसेतत्प्रतियोगिअविद्याकासत्वहोवेहै यांतेज्ञानसाध्यत्वकीअनु
पपत्तिनहीआवेहै।०आनंदबोधाचार्यांनेपंचमप्रकारअविद्याकीनिवृत्तिमानीहै
काहेसेजोअविद्याकीनिवृत्तिसतरूपमानेतोद्वैतापत्तिदोषआवेहै। असतपक्षमै
कारकव्यापारसाध्यताकीअनुपपत्तिरूपदोषआवेहै परस्परविरोधहोणेसेस
तअसतरूपभीनहीबनेहै अनिर्वाच्यपक्षभीअसंगतहै काहेसे जोअनिर्वाच्य
वस्तुअविद्याऔअविद्याकाकार्यरूपहोवेहै तातेजैसेप्रागभावकीनिवृत्तिघटरू
पहै तैसेअविद्याकीनिवृत्तिअविद्यारूपमानेतोजैसेअविद्याअनादीहै तैसेनिवृ।
त्तिनिष्ठभीअनादित्वकाप्रसंगआवेहै। निवृत्तिनिवृत्तिमतकाअभेदमानेसेघट प्र
ध्वंसकाविरोधाभावप्रसंगआवेहै। कार्यत्वपक्षमैतन्मूलअविद्याकीस्थितिहो।
णेसेअमोक्षप्रसंगआवेहै इत्यादिऔरदोषभीन्यायमकरंद ग्रंथमेलिखेहै विस्ता
रकेभयसेनहीलिखे यांतेअप्रसिद्धपंचमप्रकारअविद्यानिवृत्तिमानीहै।०अद्वैत
विद्याचार्योंनेअनिर्वाच्यअविद्यानिवृत्तिमानीहै काहेसेजोजैसेप्रसिद्धघटादिपदार्थोंकाध्वं
सक्षणिकभाववस्तुकाविकारहै तैसेअविद्यानिवृत्तिब्रह्मसाक्षात्कारकेअनंतरक्षणव
र्तीभावविकाररूपहै यांतेमुक्तिमैतिसकाअभावहै इसीकारणसेअनिर्वाच्यपक्षमै
कोईदोषनहीआवेहै सोइसप्रकारअद्वैतविद्याचार्यकेमतकूंस्वीकारकरकेइसग्रंथ
मैअनिर्वाच्य अविद्याकीनिवृत्तिलिखीहै।=।२= साध्यविकल॰ यहजगतउत्पत्तिसेपूर्व
अव्याकृतरूपथा कार्यत्वहोणेसे वटवृक्षवत इसअनुमानमैवटरूपदृष्टांतमैनि
जउत्पत्तिसेपूर्वबीजरूपत्वसाध्यकाअभावहै यांतेकार्यत्वहेतुअप्रयोजकहै = ॥०

चौपाई बटवृक्षनिजबीजकेमाहीं ॥ स्वजनिपूर्वयदिहो-
वेनाहीं ॥ अत्यंतासतबटतरुजोऊ ॥ उदेनहोइबीजसेसोऊ
।७८। अत्यंतासतबटकीवाले ॥ उत्पतियदिमानेनिजकाले ॥
तबबटबीजसेधरणिमाहीं । चूतांकरकिमहोवतनाहीं ॥
।७९। तोतेसत्यकार्यहैजोऊ । उदेहोवेकारणसेसोऊ । यांविध
कथनश्रुतिअनुकूला । यांविनदोषनहोतनिर्मूला । ८० । दो-
हा । चितिआश्रितजोअविद्या पूर्वकीनोवखान । सोअव्याकृ
तनामलख भइजगतनिदान । ८१ । चौपाई । सोउपाधिचेतन
जबपावे । ईशशब्दकावाच्यकहावे । जोंकोकहेंसर्वाधीश । स
भूताधिवासवशीईश । ८२ । सकलभूतपालकसोउसेतु ॥
सकललोकधृतिभेदकाहेतु । सर्वविनसभशक्तिप्रधाना
। सर्वलोकउपास्यभुविमाना । ८३ । सर्वलोकेशपालकहावे
। श्रुतिविनवरभइअसगावें । बुद्धिप्रधानताजबपावे । हि
रण्यगर्भपदवाच्यकहावे । ८४ । मनप्रधानभावजबहो-
ऊ । सूत्रसंज्ञाकहावेसोऊ ॥ हिरण्यगर्भपूर्वइकजाना ॥
सकलभूतपतिसकलउपाना । ८५ । जिसद्यावाधरणिय
हधारी ॥ पूजातांकीकरोसुभारी ॥ ॥

१= चूत·आव=।२।=श्रुतिअनुसार·सदेवसोम्येदमग्रआसीतइसश्रुतिकेअनुसारहै
=।३= दोष·चूतांकुरकीउत्पत्तिआदिदोष=।४= स्वतंत्रपालकहै=।५। अधिष्ठानरू-
पकरकेसर्वमैंस्थितहै वशी·ब्रह्माइंद्रादिकजिसकेवशमैहै। ईश·सकलकानियंता
है=। ६ = जनिमानसंपूर्णकार्यकूंचेतनसत्तादेकरपालनाकरेहै=।७।=लोक०
चतुर्दशलोककेभेदका तथाधृतिवर्णाश्रमव्यवस्थाधारणाकाहेतुसेतुकेसमानहै॥
तथाचवृहदारण्यकश्रुतिः। अ·६। ब्रा·४। सर्वस्यवशीसर्वस्येशानः सर्वस्याधिपतिःस
नसाधुनाकर्मणाभूयान्नोएवासाधुनाकनीयानेषसर्वेश्वरएषभूताधिपतिरेषभू-
तपालएषसेतुर्विधारणएषांलोकानामसंभेदायइति। २१=। ८= श्रुतिविन·
मंत्रद्रष्टाऋषिः।= ९ =। उपाना·सकलकीउत्पत्तिकाकर्ता=।१०= पूजातां
की·तिसहिरण्यगर्भकीघृतादिद्रव्यकरकेपूजाकरो। तथाचसंहितामंत्रम्। हिरण्यग
र्भःसमवर्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकआसीत्सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मैदेवाय
हविषाविधेमइति। मंत्रमैंदकारदीर्घछांदसहै। कस्मै· स्मैभावछांदसहै कायहि
रण्यगर्भरूपाय= ॥ =

। चिनवृत्तेयाँविधस्फूर्तिजोई। उपाधिकरूपवखानेसोई। ८६। कैमलनेत्रैजिमलूताजंतु। पसारेनिजशरीरसेनंतु। जिमपावकसेतनुचिंगारा। करतसकलदिशमेसंचारा। ८७। तिमआत्मासेप्राणअशेषा। सकललोकसभदेववि- शेषा। ब्रह्मादिकयेभूतअशेषा। उत्पनहोवेकुरेप्रवेशा। ८८। दोहा॰। ब्रह्मचराचरजगतका भद्रेकर्तोजान। उपादानंवरानतेलूताजंतुसमान। ८९। चौपाई। असंग कूटस्थचितिसेवाले। जिमभासितहैब्रह्मनिराले। यथा- अविद्यानामेमाना। निखिलतोहिवामोरुवखाना। ९०। ब्रह्मादिस्थावरअवसाना। भद्रेजोयहजगतमहाना। आ- विद्यकसभचेतनमाहीं। भासितहैकुछसंशयनाहीं। ९१। जोब्रह्मादिशरीरमहाना। सूकरकूकरदेहसमाना॥ वार्तिककृतनअसउक्तिमहाना। आविद्यकभवकरनव- खाना। ९२। जोचितिआश्रितविषयवखानी। अविद्यासकलदुखकीखानी। तिसकरजगतचराचरभासे। रजुमेफणिसमानवरासे ॥ ९३ ॥ ॥

१= हेकमलनेत्रे = । २= तनु॰ सूक्ष्म = । जिमलूताइत्यादिदो चौपाई के अर्थमे वृहदारण्यकश्रुतिः अ॰ २। ब्रा॰ १। सयथोर्णनाभिस्तंतु- नोच्चरेद्यथाऽग्नेः क्षुद्राविस्फुलिंगाव्युच्चरंत्येवमेवास्मादात्मनः सर्वे- प्राणाः सर्वेलोकाः सर्वेदेवाः सर्वाणिभूतानिव्युच्चरंति इति। २०। = =। ३। = कर्ता॰ निमित्तकारण। = ४= निराले॰ भिन्न = ५। हेवामोरु =। ६= वार्तिककृत॰ वार्तिककारसुरेश्वराचार्यकीउक्ति॰ जोब्रह्मादिश रीरमहानाइत्यादिअर्ध चौपाईरूपवाक्य = तथाचतद्वचनं। ब्राह्मादीनांशरीराणिश्वसूकरशरीरवत्इति' विरक्तपुरुषोंनेजैसे रोहिकश रीरमेजिह्मासाकीयाहै तथाब्राह्मादिशरीरमेजाननाकाहे सेजो- ब्राह्मादिशरीरोंमेअविद्याकार्यत्वश्वानादिदेहकेसमानहै = ।७= हेवरासे सुंदरमुखि = ॥

॥ दोहा॰ ॥ ज्ञानाज्ञानविरोधना प्रगटसर्वथाजान। ज्ञाना। त्माकीशरणनबप्राप्तभयोअज्ञान।९४। श्रुतिश्रवणजन्य वृत्तिकों अविद्याशत्रुजान। नहींशुधचितिवरानेने करैअ। विद्याहान।९५। चोपाई। उदासीनअसंगचितिजोई। चित वृत्तेजगदाश्रयसोई। ज्ञानउपाधिसंगप्रभावे। बाधकबा ध्यभावकोभावे।९६। अबोधकरकल्पितभवमाहीं। चित वृत्तेशंकाकोउनाहीं। रज्जुभुजंगदृष्टांतमहाना। यानेयामे पूर्वबखाना।९७। कविरुवाच। दोहा॰। याविधसुनय तिवरगिरा मधुरगिराकरजोर। अनुजानप्रतिअग्रज्ञा बोलीगिराबहोर।९८। चित्तवृत्तिरुवाच चितिआश्रित चितिविषयजो करीअविद्यागान। सोनवनेयानेमुने नहिकोतामेमान।९९। कविरुवाच। याविधसुनभग नीगिरा यतिवरगिरामहान। बोलेज्येष्टभगनीप्रति घनघनघोरसमान ॥ १०० ॥ विवेकाश्रमउवाच॥ ॥ चौपाई ॥ मानाभावचितवृत्तेनाहीं ॥

१= प्रगट॰ नमप्रकाशवतप्रसिद्ध =।२।= ज्ञानात्माकी॰ ज्ञानसरूपब्रह्मकी=।३। श्रुतिश्रवण॰ महावाक्यरूपश्रुतिकेश्रवणसेजन्य =। ।४।= हेवरानने =।५।= ज्ञान॰ उपाधिप्रभावकरकेज्ञानबाधकबाध्य। भावकूंपावेहै जैसेअज्ञानकानाशकवृत्तिकेसंबंधकरकेबाधकभाव। कूंपावेहै घटाकारवृत्तिरूपउपाधिकेसंबंधकरकेघटादिककेबाधकर केबाध्यभावकूंपावेहै

।६।= यामै॰ जगतअवि। द्याकल्पमै। पूर्व॰ ध्यानवे ९३ की चोपाई मै =।७= बहोर॰ फरबोली =।८= सोनवने॰ सोनवकथननहीबनेहै। हेमुने याने जिसका। रणसेतिसअविद्याके सत्वमैकोईप्रमाणनहीहै =।९= घनमेघका घनघोररूपगंभीरशब्दकेसमान बोले = ॥ ॥

बहुविधमानकहींनोंमाहीं। मायाकरइंद्रोंबहुरूपा। भासितहैअसश्रुतिअनूपा। १०१। भोलोकातुमसोनहिचीना। निखिलभूतउत्पनजिनकीना। नांनेतुमराभयोविछोरा। अविद्याकरआवृतचिततोरा। १०२। उदरभरोनित्यअनृतगावो। नांनेजन्ममरणकोंपावो। चितवृतेयोंविधश्रुतिआना॥ अविद्यामेवामोरुमाना। १०३। अजाएकयोंविधश्रुति॥ आना। चंद्रमुखिअविद्यामैमाना। इत्यादिवामोरुश्रुतिनाना। अविद्यासदभावमैमाना। १०४। दैवीत्रिगुणमयीममममाया। अर्जुनप्रतिकृष्णअसगाया। अज्ञानावृतज्ञानपुमाना। तिसकरपावेमोहमहाना। १०५। यूंविधभगवतवचनमहाने। प्रगटअविद्यारूपवखाने। मायावशकरभेदअनेका। पावेआत्मावास्तवएका। १०६। योंविधपराशरउक्तिजोऊ। मायाप्रगटवखानेसोऊ। चितवृतेअसवचनहैनाना। अविद्यामेवामोरुमाना। १०७। दोहा॰। आत्माएकअनेवाअसतवसंशयथूर॥ श्रुतिस्मृतिवहुवचनकर तजअबताकोंदूर॥ १०८॥ ॥

१= इंद्रो॰ परमेश्वरः। तथाचवृहदारण्यकश्रुतिः। अ॰ २। ब्रा॰ ५। इंद्रोमायाभिःपुरुरूपईयतेइति। १८। २=भोलोका॰ हेलोका। तथाचश्रुतिः नतंविदाथयइमाजजानान्यद्युस्माकमंतरंवभूवनीहारेणप्रावृताजल्याःचासुतृपउक्थशासश्चरंतिइति। इसश्रुतिकाअर्थभोलोकाइत्यादिडेढचौपाईमैस्पष्टलिख्याहैपरंतुअतिस्पष्टताकेनिमित्तपुनालिखनाहूं नतंविदाथ॰ हेलोकातुमातिसपरमात्माकूंनहीजान्याहै। यइमाजजानन्योइसप्रजाकूंउत्पनकर्ताभयाहै॥ तिसब्रह्म सेतुमारामहाभेदहोताभया। जल्याः। अनृतवादीहो। उक्थशासःसामविधिनिषेधकरवांधेहूयेहो। ३=श्वेताश्वतरश्रुतिः। अ॰ ४। अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णांबह्वीः प्रजाः सृजमानांसरूपाः इत्यादि। ५। ४= गीताकेसप्तमाध्यायमै दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया। १४। ५=। पंचमाध्यायमे अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः इति। १५। ६=पराशरस्मृतिः एकःसभिद्यतेशक्त्यामाययानस्वभावतइति=॥

एकदेवसभभूतमै गूढव्यापकजान। सर्वभूतांतर आ। त्माकृतसाक्षीभगवान।१०९। सर्वभूतवासीसदासाक्षीचेत नरूप। हैतरहितनिर्गुणसदा असकहेश्रुतिअनूप।११०। ।चौपाई। एकोभूतात्माहैजोई। भूतभूतमेंस्थितहैसोई। एकअनेकप्रकारमहाना।भासितहैजलचंद्रसमाना।१११। पैयमैवसितगूढघृतजैसे।वसितचितिसभभूतमैतैसे।मथ नमनमंथानकरकीजे।प्रगटविज्ञानात्मसुखलीजे।११२॥ जोब्रह्मपूर्वतोहिवखाना।निर्गुणचेतनरूपमहाना।अवि। द्याकरसोनानाकार।व्योमचित्रसमकल्पेगवार।११३।सोर ठा।यथास्फटिकघटएक नानामणिसंबंधकर।भासेरू पअनेक तथामायाकरआत्मा।११४।यथाएकआकाश नानारूपघटादिमै।तिमचेतनआभास भासेअंतस्करण मै। ११५। चौपाई । ततअहंकृतिमुकरकेमाहीं। प्रतिबिं बितचेतनइकआहीं। तांतेविविधजीवतापावै।वास्तव। एकअसंगकहावे।११६॥ ० ॥ ॥

१= कृतसाक्षी॰ कर्मोकासाक्षीहै। श्रुतिमेंकर्माध्यक्षपदकायहअर्थहै।तथा चश्वेताश्वतरश्रुतिः अ॰ ६। एकोदेवः सर्वभूतेषुगूढःसर्वव्यापीसर्वभूतां तरात्माकर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्चइति। ।२१। व्याप्यव्यापकभेदकीनिवृत्तिवास्तेसर्वभूतांतरात्मायहकह्याहै।सर्व भूतोंकाअधिष्ठानरूपकरकेस्थितहै।साक्षी॰ परिणामव्यवधानसेवि। नासाक्षात् सर्ववस्तुकूंदेखेहै= ।२। = जलमेप्रतिबिंबितचंद्रकेसमान॥ तथाचश्रुतिः एकएवहिभूतात्माभूतेभूतेव्यवस्थितः।एकधाबहुधाचै वदृश्यतेजलचंद्रवत् इति=। ३। = पयमै॰ दूधमै।= ४। = मनरूपमंथा नीकरकेमंथनकीजेविचारकीजे=। तथाचश्वेताश्वतरश्रुतिः। अ॰ १। सर्वव्यापिनमात्मानंक्षीरेसर्पिरिवार्पितम् इति। १६। =। ५। = गवार॰ मा यानटीकरमोहितपुरुष=।६। नीलपीतादिनानामणिकेसंबंधकरके =। ।७। तत॰ सुरनरादिककाअहंकाररूपदर्पणमे =॥ =

।कवित्त। भयोजब अहंकृति संगएकरूपचिति कर्त्ताभुक्ता भइ्रेतथाप्रमाताकह्यावेहै।कर्तृत्वादिधर्मसारे निजआत्ममे। निहारे अपनाअसंगरूपमनमेनल्यावेहै।लोहकेसंबंधकर घनीभूतलोहकर पावकवीमोरूजिम ताडनामेआवेहै।तथाअहंकृतिसंग शुधचेतनअसंग नानाविधयोनिमाधेसुखदुखपावेहै।११७।चौपाई।सुंदरमुखिअविद्याप्रभावा। आश्चर्यरूपमुनिजनगावा।जिसकरसुतदारादिकलेशा।मानेनिजात्मविषेअशेशा।११८।अहंकृतिमिलितचेतनजोऊ।जीवभावकोंपावेसोऊ।मानसधर्मकामादिसारे।चितत्तेचिदात्ममेनिहारे।११९।वस्तुतोजीवचिदात्मरूपा।नित्यअसंगसुखाब्धिअनूपा। असआत्मकोंपायकरवाले।रहोशोकसेसदानिराले।१२०।सभकाज्ञाताहैजगदीशा॥ किंचितज्ञानवानअनीशा।सभकाकर्ताहैईशाना।किंचितकर्त्ताजीवबखाना।योंविधभेदउपाधिकभासे।वास्तवइकरसचितिप्रकासे।१२१।दोहा॰।प्रभानेजकाभेदजिममृगाक्षिकाल्पितजान।मायाचितकरभिन्नतिमहोवेचेतनभान।
=॥१२२॥=

१= अहंकृति॰अहंकारकेसाथतादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तभयोचेतन=।२= घनीभूतहथौडारूपलोहेकरके=।३। हेवामोरू=।४= हेसुंदरमुखिअविद्या॰ विचारकरनेसेजोविद्यमाननहोवेतिसकूंअविद्याकह्याहै=।५=कामादि॰ कामोविषयाभिलाषाआदिपदकरकेश्रुतिउक्तसंकल्पादिजानने।तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः अ॰१।ब्रा॰५।कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएवइति।श्रुतिमेसंकल्पपदकाअर्थयहनीलहैयहपीतहैइसप्रकारअवधारणारूपवृत्तिजानना।विचिकित्सासंशयरूपावृत्ति।श्रद्धाअर्थमेविश्वासकरणाश्रद्धा॥औरस्पष्टहै=।६= सर्वज्ञानवान।तथाचमुंडकश्रुतिः यःसर्वज्ञःसर्वविद इति=।७=।अनीशा॰। जीवा=८= ईशाना॰ ईश्वरा।=।९। प्रभा॰आतप।तेज॰प्रकाश॰=॥
॥ ॥

॥कविरुवाच॥ कर्मंदि निजभगनीको यांविधकरउपदेश॥ छिनभरआंनरमुखभये तजकरनिखिलकलेश।१२३। रूप रूपप्रतिरूपजो भासेअग्निसमान। उरधरपंचमकवलसो॥ तृप्तहोवभगवान।१२४। ।इतिश्रीअहैतामृतभाषाप्रबंधेवि वेकाश्रमचितवृत्तिसंवादेनानामननिरासपूर्वकआत्मतत्व निरूपणंनाम पंचमः कवलः॥५॥ ॥

॥ ॥ ॥

टीका२

१= कर्मंदि· विवेकाश्रमसंन्यासी=।२।= यथाप्रकाशरूपअग्निइस। लोकमैनानाकाष्ठभेदकरकेकाष्ठकेप्रतितततरूपहोवेहै तिसीप्रकार। जोएकहिपरमात्मासर्वशरीरमैप्रवेशकरके नानाउपाधिभेदकरके। नानारूपभासेहै। तथाचकठश्रुतिः अग्निर्यथैकोभुवनंप्रविष्टोरूपं। रूपं प्रतिरूपोवभूव॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मारूपंरूपंप्रतिरूपोवभू वइति=।३।= भगवान· श्रीकृष्णपरमात्मा=॥ ॥
॥इतिपंचमकवलटिपणी।०। ५।०

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथषष्ठकवलारंभः॥कविरुवाच॥ सोरठा॥ कालिंदीसमसाम इंदीवरसमनेत्रभो॥ ममउरकी जेधाम हेकृष्णाकृष्णारक्षक।१। दोहा·। श्रीगुरुचरणसरो जका धरकरउरमेध्यान।भाषाषष्ठकवलकी करौंनिज मतिसमान।२। सोरठा। यांविधसुनयतिवैन तृष्णापुनाचि। नहृत्तिनव।हसकरविकसितनैन वोलीनिजभ्रातापति। ।३। चितवृत्तिरुवाच। चौपाई। चिन्मात्रतुमहैतवखाना। सोहमवत्तंसनयाविधमाना·॥·॥

१= कालिंदी·यमुना हेयमुनाकेसमानसाममूर्ति=।२।= इंदीवर·कमल॥ ।=।३=। हेकृष्णाद्रौपदीकेरक्षक=।४।= विकसितकहिये प्रफुल्लितहै नेत्रजिसकासोचितवृत्ति हसकरकेवोली=।५= हेवत्स· हेप्रिय=॥·॥
॥ · · · ॥ · · · ॥

यांमैममविवादथ्याजोऊ॥ भयोअबनभकुसुमसमसो
ऊ। ४। कल्पितजगानकरचितिअनूपा। किंमहोवत।
सोसहूयरूपा। जांकोमिलीस्वप्नमे नारी।निसकरहोवे।
कोपरवारी ।५। रज्जुभुजंगकरमुनेभुजंगा। पावेयदिसह्य
यप्रसंगा। नबगोवधनादिकसभकाज। रज्जुकरवनेनको
पिमुनिराज। ६। यद्यपिअसनिश्चयममजाना। नथापि।
शंकाउपजीभ्राना। जोतुमकल्पितजगानसुनाया। यनिव
रसोनहिमनमेआया ।७। नत्ववोधउनरसुरामाहीं। जो
वस्तुमुनेभासननाहीं। सोउआविद्यककरीवखान।नथा।
विधजगाननहोवतभान। ८। आद्यअंनवत्वादियदिमा
न। आविद्यकभवकीजेवखान। नुबैरज्जुसर्पसर्पकेमाहीं
।भेदनियामकभासेनाहीं।९। वाधज्ञानकालकेमाहीं।जो
वस्तुमुनेभासिननाहीं। सोकल्पितअसलछूनमहाना॥
सकलकल्पितवस्तुमैमाना।१०। जेकरविनावाधयती
भूप। मानोजगानआविद्यकरूप। नबआविद्यकनाचि
तिमाहीं। कहोमुनेकिमआविननाहीं॥११॥ ॥

१=किमहोवन० किंतुसहूयरूपनहीहोवेहै=।२= रज्जुमैकल्पितसर्पका।
रके=। ३ = आद्यऔअंनमैअभावकूंमानकरकेजेकरकल्पितजगान
कूंमानो= ।४।= रज्जुसर्परज्जुमैकल्पितसर्प औविलमैस्थितसर्पकाभे
दनहूयाचहिये = ५= वाधज्ञानकालमैअप्रतीयमानत्वकल्पितवस्तु
कालक्षणाहै= ६ = हेयतीभूपजेकरवाधसेविनापिजगानकूंआवि
द्यकरूपमानो= ७= चिति·नबचेतनमैभीआविद्यकताआवेगी=॥

१= जगतनभानबाधकधीजोई। कहोविवेकाश्रममम सोई ॥ नजकरयांनेशंकालेशा। चेतननतन्पररहोहमेशा।१२।कु विरुवाच। दोहा॰। यांविधसुनभगनीगिरा निजवशनी कोजान। हर्षसहितयों गौंद्रनब बोलेवचनमहान।१३। विवेकाश्रमउवाच। चौपाई। चितहृतेकूटस्थचिनिरूपा ।आत्माअंतविहीनअनूपा। अशनपिपासाप्रभृनिवि। हीना। स्वप्रकाशअसंगमलहीना। १४। ज्ञानरहेब्रह्मवि तमहाना। महिमात्ताकीनित्यवखाना। सुकृतनकरनहिहो वेमहाना। होवेनसोदुष्कृतनकरहाना।१५। मायाउपाधिचि तिजबपावे। चिनहृतेसोउईशकहावे। अंतस्करणसंग जबपावे। तबभइसोजीवकहावे।१६। यांविधपूर्वकथ्य। नहमकीना। चिनहृतेसोसकलतुमचीना। अबनेवप्रश्न उत्तरहितजोउ। कथनकरौंसुनएकचित्तसोउ।१७। भ ईभ्रमलखउभेप्रकारा। निरूपाधिकसोपाधिकधारा ।शुक्तिरजतरज्जुभुजगमहाना। यांविधनिरूपाधिक भ्रममाना। १८। नीरतीरगतपुरुषअसंगा। जलगत उलटाभासितअंगा ॥  ॥

१= जगतकी प्रतीतिकाबाधकज्ञान= २= निजवश॰अपनेआधीन=३। अंत॰नाशसेरहितहै=।४।= अशनपिपासाप्रभृति॰ ईहाआदिशब्दकापर्यो। यप्रभृतिपदकरकेशोकमोहजरामृत्युकाग्रहणकरना इनसभसेरहितहै। तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः।अ॰३।ब्रा॰५।योऽशनायापिपासेशोकंमोहं जरांमृत्युमत्येति इति=।५।= ताकी॰तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकी महिमा॰ नि जस्वरूपभूतऐश्वर्यनित्यकह्याहै=।६= सुकृत॰पुण्यकर्म=।७। दुष्कृ तपापकर्मकरके तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः अं॰६।ब्रा॰४। नित्योम हिमाब्राह्मणस्यनवर्द्धतेकर्मणानोकनीयान् इति=।८। जलकेतीरप रस्थितपुरुषअसंग॰जलसंबंधसेरहित=।९। उलटा॰नीचेसिरऊप रपादहैं जिसकेऐसाअंगकहियेशरीरप्रतीतहोवेहै सोइसप्रकारका सोपाधिकभ्रमहै =।=

स्फटिकमणिरंगरंजितभासे। सोपाधिकइत्यादिप्रकासे॥ ॥१९॥ दोहा॰ ॥ निरुपाधिकभ्रमगोचरन सेज्ञानसमकाल। सोपाधिकभ्रमभामिनि रहेज्ञानपरकाल।२०। वरारोहे उपाधिका यावतहोतनहान। तावतकल्पितजगतयह भामिनिहोवेभान।२१। अंतस्करणउपाधिगत चेतनजीवकहाय। जाग्रतसुप्नसुषुप्तियह तीनअवस्थापाय।२२। जाग्रतदशामेआत्मा यावतदेह अशेश। नखकेअग्रमभागतक भद्रकरेप्रवेश।२३। सुरधानामेक्षुरयथा जिम। पावकनिजओक। आत्मतेजकरकेतथा व्याप्तिहैसभ। लोक।२४। चौपाई। बाहिरशब्दादिकहैंजेहू। कामादिकयेअंतरदेहू। सकलवस्तुकोआत्माभासे। रवियथाब्रह्माडप्रकासे।२५। जोजाग्रतमेअनुभवकीना। वासनातेसससहायकलीना। वासनारूपपदार्थसारे। चित्तहृतेनाना। विधनिहारे।२६। करणज्ञानतदर्थअपारा। उरमेक। रकेउपसंहारा। विज्ञानमयपरज्योतिजोउ। विषया। कारधीभाससेसोउ॥ २७॥ ०॥ ॥

१= भ्रमगोचर॰ भ्रमकाविषयवस्तु= २ = सोपाधिकभ्रमकाविषय। वस्तुहेभामिनि=३= ज्ञानसेउतरकालभीरहेहै जैसे तलाउकेतटपरस्थितपुरुषजानताभीहेमे जलसेवाहिरहूंऔरखडाहूं तथापियावतकालजलकेसमीपरहेहै तावतकालप्रतीतिकावाधहोवेनही =।४।= हे वरारोहे प्रारब्धकर्मकरस्थापित अंतस्करणरूपउपाधिकानाशयावततनहीभया =५= हेभामिनि =।६।= सुरधाना॰ नाउकेक्षुरारखणेकाघर। तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः।अ॰१।ब्रा॰४ सएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्योयथाक्षुरः क्षुरधानेऽवहितः स्याद्विश्वंभरोविश्वंभरकुलायेइति। श्रुतिमेविश्वंभरपदकाअर्थमूलमेपावकलिख्याहै =।७।= तस॰ जाग्रतमेअनुभूतपदार्थकीवासना=।८।= करण॰ इंद्रिय=।९।= ततततरथादिविषयाकारबुद्धिकोप्रकाशेहै =।= ॥

॥ दोहा· ॥ स्वप्नदशामैशोभने सूर्यादिभयेलीन ॥ स्व
प्रकाशयहपुरुषतब भद्रनिश्चयकीन ।२८। महाम
तसजिमनदीके विचरेदोनोतीर । जाग्रतसुपनेमैतथा ।
विचरेआत्माबीर ।२९। चौपाई । यथाव्योममैश्यनविहं
गा । फिरतफिरतअतिपीडितअंगा । श्रांतपक्षदोअंगल
गावे । विश्रांतिहितनीडमैधावे ।३०। तिमजाग्रतस्वप्नसंचा
री । परिश्रमपायआत्माभारी । विश्रांतिनिमितअंतस्था
नं । गमनकरतयहपुरुषमहानं ।३१। जहांसुप्तनरस्व
पितिनामा । चाहेनकोउवाहिरकामा । कुंठितचितचित
त्ततेनरसोउ । देखेनस्वप्नपदार्थकोउ ।३२। जिमकुमारअ
थवाभूपाला । अतिपंडितजिमवाअतिवाला । पायक
रसुखकीदशाविशेष । करैशैनसुखपावेअशेष । ३३ ।
तथापरमसुखआश्रितरूपा । करतशैनचिदात्मसभ
भूपा । अहंनाममतादिहैजोऊ ॥ लखेनसुप्तचित
वृत्तेकोऊ ॥ ३४ ॥

१= नब·स्वप्नदशामै । तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योति
र्भवति इति= ।२= महामतस·महामच्छ । तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः ।
अ· ६ । ब्रा· ३ ।१८। तद्यथामहामत्स्यउभेकूलेअनुसंचरतिपूर्वंचापरं
चैवमेवायंपुरुषएतावुभावंतावनुसंचरतिस्वप्नांतंचबुद्धांतंचइति= ।
३= श्रांतस्थानं·सुषुप्तिस्थानं । यथाव्योमइत्यादितीनचौपाईकेअर्थ
मैश्रुतिः । बृह० अ· ६ । ब्रा· ३ ।१९। तद्यथास्मिन्नाकाशेश्येनोवासुप
र्णोवाविपरिपत्यश्रांतः संहत्यपक्षौ संलयायैवध्रियतएवमेवायंपुरु
षएतस्माअंतायधावति यत्रसुप्तोनकंचनकामंकामयतेनकंचनस्व
प्नंपश्यति इति= ।४।= जिमकुमारइत्यादिदोचौपाईमैबृहदारण्यक
श्रुतिः अ· २ । ब्रा· १ । सयथाकुमारोवामहाराजोवामहाब्राह्मणोवाऽ
तिघ्नीमानंदस्यगत्वाशयीतैवमेवैषएतच्छेतेइति ॥ १९ ॥ ॥

दोहा॰ प्रिययुवतिकरकामीनर[१] आलिंगितजबहोइ। बाहिरआंतरवस्तुकुछ यथानजानेसोइ।३५।तथासुपति। मैप्राज्ञकर आलिंगितजबहोइ।बाहिरआंतरवस्तुकुछ पुरुषनजानेकोइ।३६।चौपाई।योविधरूपपुरुषकाजोऊ। भद्रजानस्वतंत्रसोऊ।पापशून्यभयहीनअकामा।अवाप्तकाम हैआत्मकामा।३७।शोकरहितअसरूपमहाना।सुपति। दशामैश्रुतिवखाना।मानाजहांअमानाहोऊ।लखेनपिता पेताकोंकोऊ।३८।सकललोकअलोकसमाना।निखिलदेव अदेवसमजाना।होवैंभद्रवेदअवेदा।हो वे चोरअचोरअछे। दा।३९।गर्भहंताअहंताहोऊ।जहांनअंतजअंतजकोऊ।पु लकसजहांअपुलकसवीना।श्रमयुनहोवेश्रमसेहीना।४०। तापसजहांअतापसहोऊ।पुण्यपापजनपावेनकोऊ।जेआं तरगतशोकसुभारे।रहितसुपतनरतातेन्यारे ॥ ४१ ॥

१=प्रिययुवतिकर इत्यादिदोदोहाडेढचौपाईकेअर्थमेबृहदारण्यकश्रुतिः।अ॰ ६।ब्रा॰ ३।तद्यथाप्रिययास्त्रियासंपरिष्वक्तोनवाह्यंकिंचनवेदनांतरमेवमेवायंपुरुषःप्राज्ञेनात्मनासंपरिष्वक्तोनवाह्यंकिंचनवेदनांतरं तद्वाअस्यैतदाप्तकाममात्मकाममकामंरूपंशोकांतरंइति।२१।आप्तकहियेप्राप्तहैंकामनाकाविषयसुखादिकजिसरूपमेंतनरूपआप्तकामं।आत्माहिकामहै सुखादिरूपहैजिसमैंतनआत्मकामंइतिश्रुतिपदकाअर्थहै=।२। =। पिताकोंपितारूपकरकेनहीजानेहै=।३=श्रंतजनामचांडालकाहैब्राह्मणीस्त्रीविषेशूद्रसेउतपनहोवेसोचांडालकहियेहै-औदूसराजाति। चांडालहै=।४=।पुलकस॰शूद्राकीस्त्रीविषेब्राह्मणसेजातकूंनिषादकहेहैं। तिसनिषादसेक्षत्रीणीविषेजोउत्पनहोवेतिसकूंपुलकसकहेहैं=। मानाजहांअमानाइत्यादिसाढेतीनचौपाईमैबृहदारण्यकश्रुतिः।अ॰६।ब्रा॰ ३। अत्रपिताऽपिताभवतिमाताऽमातालोकाअलोकादेवाअदेवावेदाअवेदाअत्रस्तेनोऽस्तेनोभवतिभ्रूणहाऽभ्रूणहाचांडालोऽचांडालःपौल्कसोऽपौल्कसःश्रमणोऽश्रमणस्तापसोऽतापसोऽनन्वागतंपुण्येनानन्वागतंपापेनतीर्णोहितदासर्वान्शोकान्हृदयस्यभवति ॥= २२॥ ॥

सोरठा· निजसुखमैस्थित जान शरदसलिलसम निर्मला। अद्वैपरूपमहान एकोद्रष्टासर्वका। ४२। चौपाई। एहीजानअसगतिमहाना। परासंपनयहअसवखाना। परमलोकअसएहीजाना। यहअसपरमानंदवखाना। ४३। भामिनिइसआनंदकीलेश। भोगनहैंअन्यजीवअशेश। भद्रेयहदृष्टांतवखाना। दार्ष्टांतिकअबसुनोमहाना। ४४। नानाजन्मकृतनकरणीजोउ। तिहसंस्कारयुक्तनरहोउ। धर्मयोग्यब्राह्मणादिदेहू। पावेनबतिंहकरनसनेहू। ४५। सोरठा·। लोकाचारसमान नीकेपढकरवेदको। असमनधारेध्यान चिंतहनेसुनध्यानधर। ४६। चौपाई। अबहमवेदपढावोंचारू। होवेशिष्यशास्त्रममभारू। पायकरनानेधनमहाना। होवोंजगनविषेधनवाना। ४७। याजनकरधनवहुतकमावों। यानेअधिककधनाढकहावों। कुलाचार्यभावकरोंजारी। तिसकरपावोंसंपतभारी। ४८। पटभूषणभोजनकरनारी। नृपतकरोंसदप्राणपिआरी। मातापिताअबकरौंन्यारा। नहिकुछतिनमेकामहमारा। ४९।

१= निजसुखमैइत्यादिएकसोरठादोचौपाईकेअर्थमैबृहदारण्यकश्रुतिः। अ·६। ब्रा·३। सलिलएकोद्रष्टाऽद्वैतोभवत्येषब्रह्मलोकःसम्राळितिहैना·मनुशशासयाज्ञवल्क्यएषाऽस्यपरमागतिरेषाऽस्यपरमासंपदेषोऽस्य·परमोलोकएषोऽस्यपरमाआनंदएत स्यैवानंदस्यान्यानिभूतानिमात्रामुपजीवंतिइति। ३२। =। २। = नीके· भलीप्रकार =। ३ =। याजनकर· यज्ञकरवायकरके =। ४ =। कुलाचार्य· कुलकापुरोहितभावकूंप्रगटकरों। =। ५ =। पट· वस्त्र = ॥ ॥

चितहूनेभसकरेमनोराज। पढेआगमधनपूजाकाज॥ करविवाहजबभार्यापाई। मातपितासेकरिनलडाई। ५०। भ्रातादिकबांधवहैंजेते। लडकरनजेवामोहनेते। करविरोधसकलसंगवाले। निजवालासहवसेनिराले। ५१। खरगोश्वानविडालस्वभावा। नारीसेवनमेमनलावा। भद्रेअसनरतोहिप्रसादु। पावनहैंदुखमाननस्वादु। ५२। जब। भार्यासेसंततिजाना। नखनाकेलालनमेराना। मलमूतरकरलिपितशरीरा। विकसितगात्रनमावेचीरा। ५३। सभजनमेनिजकरेशलाघा। यहममकन्याभयीअदाघा। पंचमासासुनयहममचारू। भार्याहैफिरउदरकीभारू। ५४। ।दोहा। यांविधनानाकर्मकर दारादिककेसंग। यौवनमैसुनयौवने करेकालनरभंग। ५५। वृद्धभयोजबशोभने। शोभनरहीनदेह। निकटनआवतसोप्रिया जोंकाअधिकसनेह। ५६। कबित्त। डिंडीरकेपिंडसमसीसकोनिहारेदार आलविलतुलनाकेमुखकोंनिहारेहै। कपासकेवीजसमनेत्रमधनारेदेखे रिक्तपेशीसमदेहनवाकोंविचारेहै॥ पैलदलदलसम०।

१=शास्त्र=१२=प्राप्तभयी=१३=हेवामोरु=१४=खरगधा। गोवैल। श्वानकुना विडालविला इनकेस्वभावकूंअंगीकारकरके जैसेगधीकेपादेंकरमाडिनग। र्धभनिसकूंनहीत्यागेहै जैसेवैलभारसेरहितहोकरभीशक्टीपुरुषकूंनही त्यागेहै जैसेश्वानलाठीकरताडिनभीग्रहकूंनहीत्यागेहै जैसेविडाललाठीकरताडितभीहोवेहै परंतुजहांदुग्धादिकदेख्याहैतहां आवश्यजावेहै तिसीप्रकारपुरुषनिजभार्याकरनिरादरकूंपावेहै परंतुतिसकात्यागनहीकरेहै=१५= गात्र॰ शरीरनमावेचीरा॰ वस्त्रमेनहीसमावेहै =१६= अदाघा॰ अंगभंगादिदाघसेरहित अतिसुंदरी=१७= पंचमासा॰ पांचमहीनेकाहै=१८= हेयौवने=१९= समुद्रफेनकेगोलेसमान=११०= सर्पकीविल=१११= खालीअंडेकेसमान=११२=पिपलकेपत्रसमान॰॥ = ==

नाडीयुतग्रीवादेखे दरीकेसमानतोकाउदरनिहारेहैं। घुर घुरशब्दकरयुक्तकंठदेखकर व्याघ्रगलउपमाको भद्रे। उरधारेहै। ५७। पीठमधगत अस्थिधनुषसमानजाने शिश्नतोकोदेखतूलगोलसममानेहैं। विंदुयुतनासादेख मोतीकोफलकमाने नितंबकोदेखमुष्टिपरिमितमानेहैं। भ्रष्टकोडागंधसमदेखमुखअनिलको चंडालकेस्पर्श समस्पर्शतोकाजाने। बलहीनचीनभृत्यत्यागनहैस्वामी यथा तथातथाविधपतितजसुखमानेहै। ५८। दोहा। करतसुतउपहास तिंहसेवाकरैन कोइ। पुत्रवधुहासीक रैं जेकरइच्छाहोइ। ५९। निजपालितजेतजानमें कोपि नपूछेबात। पूर्वकरउपकारको भद्रेस्मरैनतात। ६०। चौपाई। अंतकालसमीपजबआवा। ऊर्ध्वस्वासशब्दप्रग टावा। भारआक्रांतशकटावाले। करतशब्दजैसेगतिका ले। ६१। तथाप्राज्ञकरव्याप्तअंगा। गमनकरतहैजीवप तंगा। आम्रफलउदुंवरफलजोऊ। पिपलफलवाआनफ लकोऊ। ६२। वातादिककारणाकरवाले। यथावृक्षसेहोतनि राले। तथाजीवस्वांगसेन्यारा। होवतभद्रेरहितविकारा॥ ६३॥

१=। दरी॰पर्वतकीकंदरा=। २= हेभद्रे=। ३= तूलगोल॰रूईकीपूणीस मान=। ४= विंदु॰श्लेशमविंदु=। ५= नितंब॰चुतड=। ६।= त्वकेकोंडेकीगंध=। ७ मुखसेनिकसीजोवायु=। ८=। जनजान॰जनसमूह=। ९ शकटा॰गडा=। ।तथाचबृहदारण्यकश्रुतिः अ॰ ६। ब्रा॰ ३। मं॰ ३५। तद्यथाऽनःसुसमाहितमु त्सर्जद्यायादेवमेवायंशारीरआत्मा प्राज्ञेनात्मनान्वारूढ उत्सर्जद्याति यत्रैतदूर्ध्वोच्छ्वा सीभवति इति=। १०= स्वांगसे॰अपनेशरीरसेन्याराहोवेहै। तथाचबृहदा रण्यकश्रुतिः अ॰ ६। ब्रा॰ ३। मं॰ ३६। तद्यथाम्रंवोदुंबरंवापिप्पलंवाबंधना त्प्रमुच्यते एवमेवायंपुरुषएभ्योऽगेभ्यःसंप्रमुच्यपुनःप्रतिन्यायंप्रतियो न्याद्रवतिप्राणायैव इति=। = =। = =। = =। = ॥

प्रतिन्यायं यथागतंतथा=। योनिंयोनिंप्रतिआद्रवति=। देहांतरग्रहणकेनिमित्त=।

॥ दोहा॰ ॥ मरणकालमैजीवकी होनअवस्थाजोइ।नांकों
सुनअवशोभने सवाधानमनहोइ।६४। चौपाई।निकटआ
यबांधवजनसारे।ऊंचेस्वरकरनांहिपुकारैं।नहिवोलेन।
हिंसुनेधरकानंनहिदेखेरसहोवेनभान।६५। मनकरक
रेसंकल्पनकोउ। करननगंधग्रहणनरसोउ। शीनउश
नस्पर्शनजाने। नहिकिंचिनसोवस्तुपछाने।६७। दोहा
॥ जालूकाजंतूयथा जायतृणांतमभाग।अग्रमतृण
कोंपायकर करनपूर्वकात्याग।६८। वासनाकरपूर्व।
तथा आश्रयकरतनुभान।पूर्वदेहकात्यागनव भद्रक
रतपुमान।६९। कबित।यथास्वर्णकार नरलेकरस्वर्ण
मात्राकों नूतनकल्याणरूपभद्रशीघ्रकरेहै॥तथाजीव
पूर्वधृनशरीरकोत्यागकर नूतनकल्याणरूपआनदेह।
धरेहै। पितृलोकदेहधारे अथवागंधर्वदेह देवदेहधारेब्र
ह्मलोकदेहधरेहै।प्राजापत्यदेहधारेअथवाअन्यभूतोंकी
देहकोधारणकरे यथाकर्मकरेहै ॥७०॥ ॥

१=निकटआय इत्यादिचौपाई दोकेअर्थमे बृहदारण्यकश्रु॰ निः अ॰ ६॥
ब्रा॰ ४।एकीभवति नपश्यतीत्याहुरेकीभवतिनजिघ्रतीत्याहुरेकीभवतिन
रसयतइत्याहुरेकीभवतिनवदतीत्याहुरेकीभवतिनशृणोतीत्याहुरेकीभ
वतिनमनुतइत्याहुरेकीभवतिनस्पृशतीत्याहुरेकीभवतिनविजानातीत्याहुः
इत्यादि।२॰ श्रुतिमै एकीभवति॰ नेत्रादिइंद्रियमैजोसूर्यादिदेवनाकीअंशहैसो
सूर्यादिदेवनामैअभेदहोवेहैइसीकारणसेदर्शनादिक्रियानहीहोवेहै॥२=जा॰
लूकाजंतूइत्यादिएकदोहेमैबृ॰ श्रु॰ निः तद्यथातृणजलायुकातृणस्यांतंग॰
त्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरत्येवमेवायमात्मेदंशरीरंनिहत्यावि
द्यांगमयित्वान्यमाक्रममाक्रम्यात्मानमुपसंहरतीति=१ ३=१ ३=१ यथास्व
र्णकारइत्यादिकविनमैश्रुतिः।तद्यथापेशस्कारीपेशसोमात्रामपादायान्य॰
नवनरंकल्याणतरंरूपंतनुतेएवमेवायमात्मेदंशरीरंविहत्याविद्यांगमयि
त्वाऽन्यन्नवतरंकल्याणतरंरूपंकुरुतेपित्र्यंवागांधर्ववादैववाप्राजापत्यं
वाब्राह्मंवाऽन्येषांवाभूतानाम् इति =१ ४१= =१= =१= =१=

तृणांतरूपआश्रयं=आश्रित्य=पातयित्वा=अचेतनंकृत्वा= ११

॥दोहा॰॥ अविद्याभ्रमज्ञानकर यांविधनरसंसार। भटकेस
दासुलोचने कबीनउतरेपार। ७१। चौपाई। कर्मनकेकर्ता
नरजेऊ। कर्मकरमोक्षवखानेतेऊ। तेकुनसितनरमूढक
हावें। सदाहिजरामरणाकोंपावें। ७२। रेचकरबाहिरइंद्रिय।
जाना। यांविधहिंसनकीनेथाना। तांतेजनसभबाहिरदेखे।
अंतरआत्माकवीनपेखे। ७३। अनेककजन्ममैपुण्यमहान॥
करेउपार्जनजोऊपुमान। संयनकरणमोक्षार्थीजोउ। प्रत्य
गात्माकोंदेखेसोऊ। ७४। भवसंज्ञकयहचक्रमहाना। तत्रभ्र
मितनरहोंवैंश्रांता। चितवृतेमोक्षार्थीनरजोउ। कृतकरपावे
अकृतननहिकोउ। ७५। यांविधनिश्चयवालापुमान। मोक्षला
२ भकाधरउध्यान। लैभेटाज्ञानार्थीजावे। आत्मवितश्रोत्रिय
गुरूपावे। ७६। आचार्यवाननरहैजोई। परब्रह्मकोंजानेसो॥
ई। ब्रह्मबिननरब्रह्मसुपावे। यांविधश्रुतिशिखासभगावे। ७७।

१॰ अविद्या॰ मूलाज्ञान। तिससेजन्यभ्रांतिज्ञानतिनदोनोकरके॰ । २॰ ईश्वरमैअ
र्पणाबुद्धिसेविनाजोकर्मोकेकर्तापुरुषहैं॰ । ३॰ । रेचकरइत्यादिदोचौपाईकेअ॰
र्थमेकठश्रुति॰वल्ली॰४। पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्॰पश्यति।
नान्तरात्मन्। कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्। १। श्रुतिका
अर्थचौपाईमैस्पष्टलिख्याहै। आवृत्तचक्षुःपदकाअर्थसंयनकरणालिख्याहै॰।
। ४॰ । भवसंज्ञकइत्यादिदोचौपाईकेअर्थमैमुंडकश्रुतिःप्रथमखंडमे प॰
रीक्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणोनिर्वेदमायात्॰ नास्त्यकृतःकृतेनतद्विज्ञा
नार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिःश्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठंइति॰ । श्रुतिमेत॰
द्विज्ञानार्थं अकृतरूपब्रह्मकेजाननेकेनिमित्त॰ । श्रुतिमैनिर्वेदमायात्॰
वैराग्यकूं प्राप्तहोवेइसप्रकारविधिजाननी। गुरुमेवाभिगच्छेत्इसकूंविधि॰
जानना॰ । ५॰ । आचार्यवान्पुरुषोवेदइति छांदोग्यश्रुतिः । ६ । ब्रह्म
विदाप्नोति परमिति श्रुतिः । ७ । श्रुतिशिखा॰ वेदांता । ८ ।

ब्रह्मविनहोवेब्रह्मसरूप। यौंविधजानअपरं[1]श्रुतिरूप॥
अवेदविन्नरब्रह्मनजाने। भद्रे[2]श्रुतिअसअपरवखाने॥
।७८। तौंको[3]जानपुरुषधीमाना। करेप्रज्ञाकोंआत्मपराना॥
आत्मतत्वज्ञानकरवाले। मृत्युसेनरहोवेनिराले[4]।७९। मो
क्षलाभहितमार्गनआना। अपरश्रुतिअसकरतवखाना।
ज्ञानकरनरमुक्तिकोंपावे। चिनहूते[5]श्रुतिअपरअसगावे।
।८०। दोहा॰। यौंविधनानाश्रुतिकहेमुक्तिसाधनज्ञान। ज्ञा
नविनासुनशोभने साधनआननजान। ८१। चिनहूतेनि।
सज्ञानकूं ब्रह्मरूपमतुजान। साधनफलकोएकना॥
यौंनैदोष[6]महान। ८२। निजंकरकेनिजरूपकी जेकरप्राप्ति
होइ। तूबसाधनविनशोभने मोक्षलहेसभकोइ। ८३। चौ
पाई। वृत्तिमेप्रतिविंविनचिति[7]जोऊ। मोक्षहेतुतुमजानो।
सोऊ। जोसाक्षातअपरोक्षमहान। ब्रह्मरूपश्रुतिकर।
नवखान॥ ८४॥

१=। अपरश्रुति॰ ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवतियहश्रुति=। २=। हेभद्रेश्रुतिअ
स॰ नावेदविन्मनुतेपरंइतिश्रुति=। ३।= तौंको॰ आत्माकूं। तथाचवृह
दारण्यकश्रुतिः अ॰ ६। ब्रा॰ ४। तमेवधीरोविज्ञायप्रज्ञांकुर्वीतब्राह्म
णः इति। धीरः धीमान्। विज्ञाय॰ पदार्थशुद्धिकूंकरके। प्रज्ञां॰ वाक्यार्थ
रूपवुद्धिकूंकरे इतिश्रुतिपदार्थः।=। ४।= निराले॰ जन्ममरणसेर।
हितहोवेहै। तथाचश्वेताश्वतरश्रुतिः। अ॰ ३। तमेवविदित्वातिमृत्युमेति
नान्यः पंथाविद्यतेऽयनायइति। ८। इसीअर्थमेकैवल्यश्रुतिभीहै ज्ञा।
त्वातंमृत्युमत्येति नान्यःपंथाविमुक्तयेइति।११।=।५=। श्रुति॰ ज्ञानादे
वतुकैवल्यंइतिकैवल्यश्रुति।=।६।= महानदोषआवेहै।=।७।= इ
सीपक्षमैदोषांतरकूंकहतेहैं निजकरकेइत्यादिदोहेकरके=।८।=
वृत्तिमैप्रतिविंवितचिति॰ चिदाभास=।९।= श्रुति॰ यत्साक्षादपरोक्षा
द्ब्रह्म इतिश्रुति=।= =।= =।= =।= =।=

सकलप्रपंचलयआधारा। कूटस्थचिदात्मनिर्विकारा।
असआत्मानरजिसकरजाने। सोअसवृत्तिज्ञानमुनिमा
ने। ८५। तांमेहेतुमानहैजोई। स्वतेनजानसकेनरकोई। तांतेगुरुशरणशिष्यजावे। नतिसेवाकरविनयसुनावे। ८६। गुरुउपदिष्टमार्गउरधारे। भवसागरसेउतरेपारे। बंधनमोक्षचिनवृत्तेदोऊ। नवप्रसादलहेसभकोऊ।
। ८७। दोहा॰। याहिन। हमउत्पनभये विवेकादियनिराज। चिनवृत्तेसोउनिखिलअब नवअधीनहैकाज। ८८। भवमायामात्रत्वमे पूछ्यानोहिनिदान। भेद्देदेखविचारकर तुमविनहेतुनआन। ८९। भवसाधनवाधनतथाहैसभनोहि अधीन। दयापालअबशोभने चिदात्ममेभवलीन॥ ।९०। कविरुवाच। यांविधसुनयनिवरगिरा विमलाअंवुसमान। श्रद्धाभक्तिपुनमुनिप्रति बोलीवचनमहान। ९१। चिनवृत्तिरुवाच। चौपाई॥ रुचिररूपबोलितमधुराई। नजकरअसशुकंकोयनिराई॥ कनकपंजरमेतुमभ्राता। राखिनहैकिमकाककुबाता। ॥९२॥ रक्तनचुंचचरणजिहअरुणा॥ रक्तननेत्रस्निनपंक्षसुनरुणा॥

१=। वृत्तिरूपज्ञान=।२।= तांमै॰तिसवृत्तिरूपज्ञानकेविषे=।३।= निम्रतासहितपूछेभगवाननेभीअर्जुनकेप्रतिकह्याहै तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवयाइति=।४।= याहिन॰जिसमोक्षकेनिमित्त=।५।= हेभद्रे विचारकरकेदेखनेतेसत्वकरकेसंसारकासत्वहै नेतेअभावकरकेसंसारकाअभावहै=।६।=भव॰चिदात्माविषेलीनहोवो=।७।= शुक॰तोता॰हैयनिराई=।८।= कुवाना॰कुनसितहै वानकहियेबोलीजिसकी ऐसाकाक=।९।= लालहै चुंचजिसका॰ =।१०।= सुवान=।=

नजकरयोंविधमुनेमराला। पद्माकरमैउलूकिमपा
ला।९३।वेदपाठीसुकृतनमेराता। नजकरऐसेद्विजकोंभ्रा
ता।श्राद्धविषेकिमश्यानमगावो। प्रथमासनपरनांहिब
ठावो।९४।अनेकहोमकर्ममेभ्राता। नजकरघृतनपाय
ससुखदाता। पलांडुलसुनअमेधकिमकाज। हवनहि-
नकरोंग्रहरणायतिराज।९५। तथाविषयसुखमोहिअधा
रा। नहिममपुक्तिविषेअधिकारा। जगनाभावमुक्तिमे-
भ्राता। प्रेरनकरकिमकरेविधाना।९६। कविरुवाच। दो।
हा॰ याविधसुनअनुतापयुत निजभगनीकीवान। प्रेमस
हितबोलेगिराभगतीप्रतिअनुजात।९७। विवेकाश्रमउ
वाच। सुंदरांगिश्रमनकहो निजकृतांतउरधार। निज
गुणहीसमदोषके भासेदेखविचार।९८। चौपाई॥९
स्फटिकविषेऊजलगुणजोई॥ दूषणसमभासितहै-
सोई। मलनवस्तुसमीपजबकीनो। चितवृनेमणिभासे
मलीनो।९९। तथानवस्वछतांहैजोऊ। दोषकरीभासे
नवसोऊ। जोजोवस्तुनिकटतवहोऊ। तदाकारनिज
भासेतोहू।१००॥

१= मरालहंसकूंत्यागकरके =।२=। उलूकीपालनाकाहेकोंकरतेहो =।३=।
पुण्यकर्ममेंप्रीतिवालाब्राह्मणकोंत्यागकरके =।४=। हेभ्राता =।५।= सभ
सेप्रथमआसनपर =।६।= पलाडुनामसलगमकाहै पंजावमैगोंगलुक
हतेहै लसुनपिआजकानामहै दोनोअमेधकहियेअपवित्रहैं =।७=। हे
यतिराज =।८=। दृष्टांनकूंकहेकरदार्ष्टांतिककूंकहेहै तथाविषयदृष्टा
दिएकचौपाईकरके =।९।= हेभ्राता =।१०।= अनुजात॰ पश्चातभावी-
छोटाभाई =।११।= हेसुंदरांगि =।१२।= तिसतिसवस्तुकाआकारनेरे
विषेप्रतीतहोवेहै =।०।= ॥

वारंवारकथनअसकीना। अहोसुभ्रुतुमअबीनचीना ॥
तांनेविषयसंगनवदोषा। तांकोनजकररहोअदोषा। १०१।
एकअसंगआत्मचितिजोई। तिनपृथस्वरूपविचारोसोई।
अभ्यस्तनत्वमसिहैजोऊ। हैप्रमाणविचारमैसोऊ। ।
।१०२। महावाक्यजनिननृतोहू॥ ब्रह्माकारसुभ्रुजबहोहू
॥ असतवरूपदेखभवभारू। होवेनाशनलागेवारू ॥
॥१०३॥ रज्जुवुद्धिकोंदेखजिमवाले। होवेनाशसर्पननका।
ले। तानेजबविषयनकोंत्यागें। चिदात्ममैभद्रेयदिलागें
॥ १०४॥ तबहमयतिअनर्थसेहीना। परानंदमेहोवेंलीना
भद्रेयहसभनोहिअधीना। करोकृपाविलंवकिमकीना ॥
।१०५। कविरुवाच। दोहा। यांविधसुनयतिवरगिरा। चि
तवृतिकरसुविचार॥ विनयसहितवोलीगिरा मरणाभी
तिउरधार। १०६। चितवृतिरुवाच॥ चौपाई॥ भ्रातांज
गननाथजोगावा। सोनहिंमोमनमाहिसुहावा। जोजांके
आश्रितनरहोऊ। तांविनरहेनपलभरसोऊ। १०७। सदाविष
यसुखजीवनमोहू। विषयसुखविनमरणममहोहू। अहोक
ठनउरनवहैभ्राता। ममअबलापरदयानजाना। १०८।
॥ कविरुवाच॰॥ ॥

---

१०१ अहो॰ वडा आश्चर्य है। हेसुभ्रु॰ १२१ तत्त्वमसितत्वमसि इसप्रकार नववार जिसको पुनापुना उच्चारनकीया है ऐसा महावाक्य विचार की कर्त्तव्यतामे प्रमाण है कोहेसे जोजे कर विचार कर्तव्य नहोता तब श्वेत केतुके प्रतिपिता नववार उच्चारण नकर्ता ओउच्चारणतो कीयाहे यांतेआ त्मविचार आवश्यकरणा योग्य है ॥१३॥ तत्त्वमस्यादि महावाक्य सेउदे भयाजोतेराशरीर ॥१४॥ हेसुभ्रु ॥१५॥ यह रज्जु है इसप्रकार की रज्जु आकार जो वुद्धि है तिसको देखकरके हेवाले ॥१६॥ हेभ्राता॥
॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥ ॥१॥

।दोहा॰। यांविधसुनचितवृत्तीकेकरुणारसयुतवैन।करु
णाकरबोलेसुनी आरतजनसुखदैन।१०९। विवेकास्त्र।
मउवाच। चौपाई। चितवृत्तेभजआत्मसुखराशी। तजोवि
षयसुखक्षणिकविनाशी। जनिमरणसंघातगतजानो॥
आत्मासदाअनाशीमानो।११०।चितवृत्तेअसकथनवहुकी
ना। अहोसुभ्रुतुमअबीनवीना।नवमरणाममभंगलरूपा
यातेसुखपावैयतिभूपा।१११।वहुजनसुखहितनिजमृ
तिजोऊ।मुनिजनवरमानितहैंसोऊ।चितवृत्तेजिमअप
रसुखकाजा। निजतनुमरणसहैरसराजा।११२।सोजीव
नहैमरणसमाना। परउपकाररहितजोजाना।परउपका
रहेतुमृतिजोऊ। जीवनसममुनिमानेसोऊ।११३।तोतो
त्यागमरणभयवाले। भजआत्मनित्यवैठनिराले।जन।
ममरणलखदैवअधीना।रहोभइआत्मसुखलीना॥ ९
।११४। कविरुवाच। दोहा॰ ।यांविधयतिवरवचनसु
न चितवृत्तिभईप्रवीन।चिदात्मनिश्चयधारउर पुनबो
लीअतिदीन।११५।चितवृत्तिरुवाच। दयानिधेनवदया
करभयोममआत्मभान।जगतनिखिलभासेसदा रजुमेफणी

१=। जनममरणदेहादिसंघातमेजान=। २।= निजमृति-अपनामर
ण।=।३।= वर-श्रेष्टमाननेहैं=।४।= रसराजा-पारा=।५।= मृति-मर
ण=। ६।= प्रारब्धकेआधीनजान=।७।= भईप्रवीन-प्रबुधभई=।=
=।८।= हेदयानिधे दयाकेसमुद्र=।९।= आत्मभान-आत्माकाभा।
ज्ञानकारभयाहै=।१०।= फणी-सर्प=।= =।= =।= ॥

समान।११६। हमअवलाचुपलाकहौं नारीमनि[1]रतिही
न। कहौंचिदात्मज्ञानमम पैरतवकृपाप्रबीन।११७। चौपाई।
२म अहोमहासतुसंगप्रभावा। जिसकरपदवीहमपावा। भ्राना
नवकृपाकरभ्रांति। भईशांतचिनमैभईशांति।११८। सक।
लवस्तुचेननहमजाना। सोचेननममरूपमहाना। भ्राना।
मनुसूर्यादिकसारे। नानाभांनरूपहमधारे।११९। शांनअ
चलजोअद्वयअनूपा। सोभानाममजानसरूपा। शुधरूपह
मज्ञानसरूपा। अक्रियनिराकारइकरूपा।१२०। सकलवेदां
तवेद्यअपारा। सोचेतनहमसकलअधारा। मनवाचाअवि।
षयचितिजोऊ। स्वप्रकाशसरूपममसोऊ।१२१। मोमेसक
लचराचरजाना। मोमेसकलस्थितहैभ्राना। मोमेहोवेसक
लविलीना। सोअहंसकलसंगविहीना।१२२। अहंब्रह्म।
चिदात्मसुखरूपा। मायासंगविहीनअनूपा। सकलजग।
तमोमैअसभासे। रज्जुविषेजिमसर्पप्रकासे।१२३। कविरु
वाच। दोहा।॥ तत्त्वमस्यादिवाक्यकर असनिश्चयजबकी
न। भईप्रापनकीप्रापति भईलीनकीलीन ।१२४। =।= ।

१= रतिहीन· गुरुशास्त्रमैप्रीतिसेरहित=। २।=पर·केवलतेरीकृपाहि प्र
वीनहै मुझकोंज्ञानउत्पनकरणोमैसमर्थहै=। ३।= मोख=। ४ ।= भ्रांति·
अनात्मामै आत्ममति=। ५।=चिति· चेतन=। ६।= मोमे· मेरेविषे=।७
।= प्रकासे· प्रतीत होवेहै=।८।= असनिश्चय· सतचितआनंदरूपब्रह्म
मै हूं इसप्रकारकानिश्चय=। ९ ।= भईप्रापनकीप्रापति· नित्यप्रापत्त
आनंदरूपआत्माकीप्रापति भईहै=। १०=। आविद्यकहोणेसेनित्य।
निवृत्त अविद्याअस्मितारागद्वेषअभिनिवेशरूपकलेशकीनिवृत्तिभ
=।= ईहै =।= =।= =।=

।सोरठा। यांविधसुनयतिराज अनुभववचनचितन्हा निके।जानसिद्दनिजकाज अंतरसुखउपरनभये।१२५।
॥दोहा·। मुमुक्षुजनकेवोधहित नाटकरचनाधार॥ यतिवरकीनोग्रंथयह करउधारश्रुतिसार।१२६।अल पमतीजनवोधहित तांकीभाषाकीन।पांचकवलहें मूलमे कवलषट्कअसचीन।१२७। छपेछंद॥वंदोचरण सरोजरोज श्रीचंद्रयतिके।जोकोनरअवलंब्य विलंव विनपायगतिके। श्रीमनआर्यवरिष्ट इष्टविद्याकीखानी।जोजलधीनिर्वेद वेदमयजाकीबानी।श्रीमनब्रह्म विज्ञानअस वंदोचरणसरोजको।दिवाकरसमनित्य करतजो विकसितचितअंभोजको।१२८।दोहा·। कवन सुखीभरनाकवन कोहरनाअरिकोन।कोदुखदाकोगंगधर वंद्यनीयगुरुकोन।१२९।श्रीमनअमरदासजी॥ ॥व्यस्तसमस्तजातिः॥ =१॥

१=१श्रुतिनामउपनिषदकासारनिकासकरके=१२॥= गति·मोक्ष=१३१= कवनसुखी इत्यादिसातप्रश्नकाउत्तरश्रीमनअमरदासजी इसवाक्यकरके जानना।जैसे कवनसुखीहे इसप्रश्नकाउत्तरहेश्रीमनधनवानपुरुष सुखीहै।भरना·जगतकापालककोनहे इसप्रश्नकाउत्तर(अ)हे अकारनामवासुदेवकाहे सोईजगतकापालकहै। कोहरना· जगतसंहार कौनकरेहे इसप्रश्नकाउत्तर(म) हे मकारनामशिवकाहे सोईजगतकासंहारकरेहे।अरिकोनहे इसप्रश्नकाउत्तर(र) हेरकारनामइंद्रियोंकाहे सोई प्रवलशत्रुहे।कोदुखदाइसप्रश्नकाउत्तर(दा)हैदानामदाराकाहै सोस्त्रीहिदुखदाईहै।कोगंगधर· इसप्रश्नकाउत्तर(स) हे सकारनामशिवकाहे जिसीनेगंगाकूं धारणकीयाहें।वंदनाकरनेयोग्यगुरुकोनहे इसप्रश्नकाउत्तर। श्रीमनअमरदासजी है सोवंदनाकरनेयोग्यशांतमूर्ति श्रीमनअमरदासजी हे।व्यस्तसमस्तजातिः उत्तरहै=१= =१=

१= असविद्यानिधीगुरूपदवंदोवारंवार।जासकृपाकरयन नविन देखेग्रंथअपार।१३०। वंदोश्रीमतपरमगुरु॥ रामदासपदकंज।मुक्तिजहांनिसदिनवसेकरे सकल दुखभंज।१३१। छपेछंद।·।कोपालेसंसार करेकोवस नरनारी।किसकरपावेराज्य कवनरणमेजसधारी॥ २ ।कवनकमलआधार कवनजसपावनभारी।कवसुख देनकसार कवनकबनपअपहारी।श्रीशमदननपहं नाअरी सरदानाजिसकालमे।प्रथमसनवरणकरवा च्यकीपदरजधारोभालमे।१३२। व्यस्तसमस्तजातिः॥ ।दोहा·।प्रश्नसानकेउत्तरके न्यारेधरपदसान।प्रथमव रणनोकेगहो गुरुनामभयोख्यान।१३३। पराभक्तिया सदेवमे गुरुमेदेवसमान। नोंकेउरभासेसदा याकेअ र्थमहान॥१३४॥ ॥९

१=अस·ऐसेवंदनाकरनेयोग्यविद्याकेसमुद्रश्रीगुरुके=।२।= संसारकी। पालनाकोनकरेहै इसप्रश्नकाउत्तर(श्रीश)विष्णु।नरनारीकोंकोनवसक रेहै इसप्रश्नकाउत्तर(मदन) काम। राज्यकों किसकरपावेहैइसप्रश्नकाउत्तर॥ (नप)नपकरपावेहै।रणमेकौनजसकोंपावेहै इसप्रश्नकाउत्तर(हंनाअरी) शत्रुकोंहननकर्ता।कमलकाआश्रयकोनहै इसप्रश्नकाउत्तर।सर।जगत। मेभारीजसकोनपावे है इसप्रश्नकाउत्तर(दाना)कसार·तलाउकवसु। खदेवेहै इसप्रश्नकाउत्तर(सरदाना) जब सरदऋतुआवनाहैतब॥ कवनकवनपकों अपहरनकरे है इसप्रश्नकाउत्तर(श्रीशमदनन। पहंनाअरी सरदानाजिसकालमे) हेश्रीशमदनरूपशत्रुजबसरदा ना सरबाणकोंचलावेहै नबनपकाहंताहोवेहै ।=।=३=। श्रीतम पाद काअर्थदोहेमेसपष्टकरेहै कोपालेइसप्रश्नसेले करकवसुखदेनकेसारइसप्रश्नतकसातप्रश्नभयेसो नोंकेउत्तरकेसानपदस्थापनकरके नोंकेआद्यकेसा तअक्षरकोंन्याराकरमिलाणेसेगुरुजीका ।= नामप्रगटहोवेहै ॥ श्रीमनहंसदासजी ॥=।=

श्रीश
मदन
नप
हंनाअरी
सर
दाना
सरदाना

कवित्त। रमणीकदेशजहां उत्तरमुखीश्रीगंगा हर्षयु नचलेसदाजनपापहरनी। ताकेतीरवसेपुरी भवनिज शूलधरी विधिनिजकरकरीजनसुखकरनी। ऊंचीहै। अटारीजामेघनछटाधारीभासे संचेबोचढारीमानोंना कतिरस्कारनी। चारविधजीवजामे देहदेहदेहकोनपावे पावेशिवरूपविनाश्रमकरनी।१३५। आनदेशवासी तीर्थ करेंसदावासजामे जामेनरनारीसदाकरेंशुभक। रनी। उमाउरकंजरवि भूतभूतपतिजहां उमासंगवसेसदा सदाभूतभरनी। कहूंवेदधुनीकहूंगुनीसुविचारकरे कहूं तोपुरानकथाहोवे मनहरनी। कहूंदेवपूजाकहूंहोमउ। त्सवभारी कहूंगीनवाद्यनादकरेंनारीनरनी।१३६। ऐ। सीकाशीवैठकरउमापतिउरधरकीनीवरभाषाअहै। नामननविचारके। नानाश्रुतिसारजामे कीयोहैविचार नीकेहर्षकरेजीकेपढेसुनेप्रेमधारके। षटकवलसुधा केकरेजोपुमानपान पावेमोक्षमगउरजावेभवपारके । तातेमनिमाननर साधनाकोधारकर प्रेमसेविचारे याकोमोक्षवांछाधारके॥१३७॥ ॥

१=त्रिशूलऊपर=।२।=विधि॰ ब्रह्मा=।३।= नाक॰ स्वर्गकेतिर। स्कारकरनेवालीहै=।४।= देहदेह॰ शरीरकूंत्यागकरके=।५।= रविभूत॰ सूर्यरूप=।६।= भूतभरनी॰ भूतोंकीपालनाकरनेवाले। =।७।= मोक्षमग॰ मोक्षकासाधनज्ञानरूपमार्गकूंपावेहै=।८।= विवेकवैराग्यादिचतुष्टसाधनकूधारणकरके इतनेकहनेसेइस ग्रंथकाअधिकारीसूचनकीयाहै =।= =।= =।= ॥

दोहा॰ अमरदासकविकीनयह भाषाललितविनोद। मतसररहितविद्वानके चितमेंजनेसुमोद।१३८। छंदव। रणरसकाव्यकी जानोनकोउचाल। सुमाकरोकविरा। जलख बालकवचनरसाल।१३९। फागुनसिततिथि दूसरी रविदिनप्रातःकाल। शरयुगांकशशिवर्षमे स माप्तिभईविशाल।१४०। निजमायाकरविविधतनु जो धारतपरकाज। षष्ठकवलसोपांयकरतमहोवतजरा ज।१४१॥ ॥ इतिश्रीमदमरदासपदपद्ममकरंदतृ। प्तमानसेन श्रीमत् अमरदासविदुषाविचरिते अद्वै। तामृतभाषाप्रबंधे विवेकाश्रमचितवृत्तिसंवादेअद्वै। तार्थवर्णननामषष्ठः कवलः ॥ ६ ॥ समाप्तोयंग्रंथः ॥

श्रीशिवानंदवर्णाश्रमीनंकर्मचंद्र [illegible]
काशीतः सं॰ १८५० ने [illegible]

॥ श्रीमन्नारायणार्पणमस्तु ॥ ६ ॥

१= फागुनमासमै। सित॰ शुक्लपक्ष। द्वितीयातिथि। आदित्यवार। शर(५) युग(४) अंक (९) शशि(१) उलटा अंकयोजनाकर नेसे (१९४५) संवतमेसमाप्तिभईहै =।२।= विविधतनु॰ राम कृष्णादिनानाशरीर =।३।= परकाज॰ भक्तजनोंकीरक्षानिमि त =।४।= पायकर॰ स्वीकारकरके =। ॥ इतिश्रीमतअमरदा सकविविरचितषष्ठकवलस्यटिप्पणीसमाप्ता।६। ॥ समाप्तोयंग्रंथः॥ श्रीमन्नारायणार्पणमिदमस्तु॰ ॥ ६ ॥

काशीपुरीमेमीरघाटशाकरकंदकीगलीमेश्रीमत्महंतह रिदासजीकीसंगतमेयहग्रंथसमाप्तभया संवत १९४५।०